शिक्षक की कलम से
वर्ष 2011

# सफ़र अणुव्रत-संकल्पों का

## (अणुव्रत कहानी-संकलन)

– प्रकाशक –
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

शिक्षक की कलम से

# सफ़र अणुव्रत-संकल्पों का

## (अणुव्रत कहानी-संकलन)

– प्रकाशक –
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

© अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

**संस्करण** : 2011

**आशीर्वचन** : आचार्य श्री महाश्रमण

**संपादक मण्डल** : धनराज बोथरा
श्री सुशील कुमार जैन
विजयवर्धन डागा

**कार्यकारी संपादक** : महेन्द्र शर्मा

**संयुक्त संपादक** : रमेश काण्डपाल

**मूल्य** : सौ रुपये

**प्रकाशक** : अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002

।। अर्हम् ।।

परम् पूज्य गुरुदेव तुलसी का अवदान है– अणुव्रत आंदोलन। यह एक नैतिकता का आन्दोलन है। अणुव्रत न्यास दिल्ली के द्वारा अणुव्रत के संदर्भ में प्रतियोगिताएं समायोजित की जा रही हैं। उस श्रृंखला में एक उपक्रम है विद्यार्थी अणुव्रत पर आधारित शिक्षक कहानी लेखन प्रतियोगिता। प्रस्तुत पुस्तिका के द्वारा पाठकों को, विशेषतः विद्यार्थियों को अणुव्रत को अपनाने की प्रेरणा मिले। शुभाशंसा।

रतनगढ़

**आचार्य महाश्रमण**

# प्रस्तावना

गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन के बहुआयामी कार्यक्रमों को सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने तथा अणुव्रत न्यास के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास की स्थापना हुई। महामनीषी आचार्य श्री महाश्रमण जी के मार्गदर्शन में गतिमान अणुव्रत आंदोलन आज विश्व स्तर पर मूल्य परिवर्तन के माध्यम से स्वतंत्र चेतना द्वारा व्यक्ति निर्माण व समाज निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। मूल्य परिवर्तन के द्वारा विचारों व व्यवहारों और संस्कारों को नैतिक मूल्यों के अनुरूप ढालना सबसे बड़ा निर्माण है। अणुव्रत मिथ्या धारणाओं, मान्यताओं व अर्थहीन मूल्यों को विघटित कर निर्माण की नई पृष्ठभूमि तैयार करता है।

अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है, जीवन शुद्धि का आंदोलन है, संकल्प शक्ति के विकास का आंदोलन है, आत्म दर्शन का आंदोलन है। कथनी व करनी में समानता ही इसका उद्देश्य है। संस्कार, ज्ञान, चरित्र व नैतिकता की सीख सर्वप्रथम बच्चों को घर व घर के पश्चात स्कूली परिवेश में उसे प्राप्त होती है। अणुव्रत आंदोलन का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञानात्मक शिक्षा के साथ–साथ भावात्मक शिक्षा भी देना है ताकि ज्ञान व आचरण के बीच दूरी समाप्त हो सके। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये अणुव्रत न्यास ने शिक्षा का क्षेत्र चुना।

यह सर्वविदित है कि न्यास द्वारा लगभग पंद्रह वर्ष पूर्व प्रारंभ की गईं अणुव्रत निबंध, चित्रकला एवं नैतिक गीत गायन प्रतियोगियों ने देश के विभिन्न प्रांतों के अनेकों विद्यालयों के हजारों विद्यार्थियों को अणुव्रत विचारधारा से जोड़ा है। वर्तमान में इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक संस्कारों के पल्लवन की प्रक्रिया प्रगति पर है। विगत तीन वर्षों में विद्यार्थियों द्वारा प्रेषित कुछ चयनित श्रेष्ठ निबंधों की विभिन्न विषयों पर कई पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं जो विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों, पुस्तकालयों में विद्यार्थियों की प्रेरणा–स्रोत बनी हुई हैं।

इस वर्ष न्यास ने एक अनूठा प्रयोग किया है। विद्यार्थियों के अतिरिक्त शिक्षक वर्ग को भी जोड़ने के लिए पहली बार अणुव्रत शिक्षक कहानी लेखन प्रतियोगिता प्रारंभ की गई है, जिसका आधार बना है 'विद्यार्थी अणुव्रत'। आप सभी को जानकर अति प्रसन्नता होगी कि देश के विभिन्न प्रांतों से शिक्षकों ने हमें मौलिक कहानियां प्रेषित की हैं। इन कहानियों में से चयनित कुछ श्रेष्ठ कहानियों का संकलन ' सफर अणुव्रत–संकल्पों का ' न्यास द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक से शिक्षकों की इन कहानियों को पढ़कर न केवल विद्यार्थियों, शिक्षकों अपितु प्रत्येक वर्ग के पाठकों को अणुव्रत चेतना की व्यापक ऊर्जा प्राप्त होगी। इस प्रयोग को सार्थक बनाने में हृदय से सहयोगी रहे सभी शिक्षकों को न्यास की ओर से मंगलकामनाएं।

साथ ही विगत वर्षों में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार व पुस्तक की प्रकाशन–प्रक्रिया को प्रारंभ करने वाले श्रीमान् के.एल.जैन पटावरी एवं सम्पतमल नाहाटा के बहुआयामी दृष्टिकोण व प्रेरणादायक सहयोग के प्रति हार्दिक साधुवाद। पुस्तक के सफल संपादन के लिए संपूर्ण संपादक मंडल का विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूं व आशा करता हूं कि अणुव्रत के माध्यम से नैतिकता का यह अभियान इसी तरह सतत अविरल चलता रहेगा।

धनराज बोथरा
प्रबंध न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
नई दिल्ली

# कहानी– सृजन की अनूठी पहल

राष्ट्र के नैतिक उत्थान एवं चरित्र निर्माण के लिए गुरूदेव तुलसी द्वारा प्रवर्तित एवं आचार्य श्री महाश्रमण जी के मार्गदर्शन में गतिमान अणुव्रत आंदोलन के बहुआयामी कार्यक्रमों को सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने व अणुव्रत के व्यापक प्रचार प्रसान हेतु अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास की स्थापना हुई। व्यापक चिंतन के पश्चात् न्यास ने शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने का निश्चय किया। विद्यार्थी जीवन ही वह समय है जिसमें विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार देकर उनके जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

इसी भावना को ध्यान में रखते हुए चौदह वर्ष पूर्व न्यास ने विद्यार्थियों में कला–साहित्य व सांस्कृतिक विकास के लिए निबंध, चित्रकला एवं नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता प्रारंभ की। इन प्रतियोगिताओं में हजारों विद्यार्थी प्रतिवर्ष भाग लेते हैं व उनमें नैतिकता का बीज वमन होता है। प्रतिभागी विद्यार्थियों का उत्साह शिक्षण संस्थानों में नए विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा की मिसाल बनता जा रहे।

इन प्रतियोगिताओं की आशातीत सफलता के सुपरिणाम पाकर न्यास ने मूल्यपरक कहानी लेखन प्रतियोगिता का शुभारम्भ करने का निश्चय किया, क्षेत्र चुना गया– विद्यालयों के शिक्षक एवं विषय रखा गया 'विद्यार्थी अणुव्रत'। इस कहानी लेखन प्रतियोगिता में देश के विभिन्न प्रांतों के अनेकों शिक्षकों ने सम्मिलित होकर बच्चों के लिए उपयोगी एवं रोचक कहानियों की रचना कर हमें प्रेषित किया है।

इन्हीं कहानियों में से चयनित श्रेष्ठ कहानियों का संकलन ' सफर अणुव्रत–संकल्पों का ' प्रकाशित करने की न्यास की यह अनूठी पहल दूरगामी परिणामों के साथ–साथ शिक्षकों में कहानी–सृजन की नई अभिरुचियों के द्वार खोलेगी। इसके लिए नैतिकता के इस अभियान में भाग लेने वाले सभी शिक्षकों को न्यास की ओर से हार्दिक अभिनंदन एवं आभार।

न्यास का यह प्रयास विद्यार्थियों में नैतिकता के संस्कारों के बीजारोपण के साथ–साथ उन्हें और सुदृढ़ करने में अवश्य सफल होगा, इसी आशा व विश्वास के साथ।

विजयवर्धन डागा
न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास,
नई दिल्ली

# अनुक्रमांक


| क्रम संख्या | शीर्षक | लेखक/लेखिका का नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | राहें बदल गईं | राजकुमारी शर्मा | |
| 2 | स्वप्न–भंग | नीलम बिष्ट | |
| 3 | आत्मबोध | गीता सिंह | |
| 4 | नया सबक | अनीता फोतेदार | |
| 5 | वचन का पालन | बबीता जैन | |
| 6 | विद्यालय का चीफ | संदीप कुमार घोड़ेला | |
| 7 | सपना का सपना | वंदना विश्नोई | |
| 8 | रास्ते कहां मुड़ते हैं ? | विजय लक्ष्मी जांगिड़ | |
| 9 | जीवन का सफर | सीमा नौटियाल | |
| 10 | बूढ़ी आंखें | नीलम वर्मा | |
| 11 | संस्कारों की दौलत | डॉ. भामा अग्रवाल | |
| 12 | नीम का दर्द | के. चांदनी महेश | |
| 13 | मंगलू | रमेश चन्द्र | |
| 14 | बरसात का वह दिन | पूर्ति गुप्ता | |
| 15 | प्रवचनों का असर | अमरजीत कौर | |
| 16 | हतभागा | हेमा हर्बोला | |
| 17 | जैसे को तैसा | डी. के. सोनी | |
| 18 | अपने हिस्से का देश | अंजलि नैथनियल | |
| 19 | क्या कष्ट है बच्चा ! | अरविंद कुमार | |
| 20 | दाल में काला | सत्यनारायण शर्मा | |
| 21 | प्रतिज्ञा | गुरमीत कौर | |
| 22 | आम का पेड़ | किरन सेठी | |
| 23 | कन्यादान | हरिशंकर द्विवेदी | |
| 24 | समय–समय की बात | मीनाक्षी ग्रोवर | |
| 25 | उत्कंठा का उत्कर्ष | शैला त्यागी | |
| 26 | अहसास | विजया सुभाष महाजन | |
| 27 | पश्चाताप | शैलजा सिंह | |
| 28 | परवरिश | डॉ. मधु कौशल | |
| 29 | एक था मुन्ना... | दीनदयाल सोनी | |
| 30 | सबका चहेता वह पेड़ | करुणा सेठ | |
| 31 | अब पछताए होत क्या..? | सुनीता जैन | |
| 32 | वह अनमोल क्षण | डॉ. सुशीला आहूजा | |
| 33 | आत्म–संतुष्टि | अपर्णा कश्यप | |
| 34 | नई सुबह | मीना बिष्ट | |
| 35 | ऐसी है बिट्टो | विवेक साहनी | |
| 36 | सुनहरी हिरण | सुमन बंसल | |
| 37 | जब जागो तभी सवेरा | सुमन गौतम | |
| 38 | फैसला | रंजना व्यास | |
| 39 | अनोखा उपहार | गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय | |
| 40 | परिवर्तन | तूलिका गोयल | |

1

# राहें बदल गईं

**कुछ दिनों बाद रिपोर्ट कार्ड मिले। छमाही परीक्षा में विक्रम फेल हो गया था। आग्नेय नेत्रों से हमें घूरता हुआ बोला, "कलमुंहे, तेरी जुबान काली है। तू ही कहता था फेल हो जाएगा, फेल हो जाएगा"। "हां, मैंने कहा था, तू फेल हो जायेगा अगर नकल करता रहेगा तो। अब भी कहता हूं, नकल करना छोड़ दे, सालाना परीक्षा में कम ही सही मगर अपने नंबरों से पास हो"।**

**वि**क्रम...यार दोस्त जिसे 'चकरम' कहकर बुलाते थे, था ही वह कुछ ऐसा चक्करबाज कि हरेक को अपनी बातों से चकरा देता था। लड़ भी पड़ता तो 'तुरंत अरे यार' कहकर सॉरी बोल देता, शरारत करके झट भोला बनकर शांत बैठ जाता और हम उसकी एक्टिंग देखते ही रह जाते थे।

बाग में पत्थर मार कर फल वह तोड़ता और पकड़े जाते हम। मैं उसकी इस 'स्मार्ट' छवि पर निहाल था पर मां की सख्त हिदायत थी 'विक्रम के साथ मत खेला करो' लेकिन बच्चे ज्यों–ज्यों बड़े होते जाते हैं, हिदायतों के बंधन स्वतः ढीले पड़ते जाते हैं।

विक्रम हमारा मित्र बन गया था। कक्षा में भी हम अगल–बगल बैठने लगे थे। धीरे–धीरे हमें पता चला कि उसे नकल करने की आदत है। अक्सर अध्यापक उसे रंगे हाथों पकड़ते थे। एक दिन हम पूछ बैठे – " यार विक्रम, तुम्हारा दिमाग इतना तेज है, इसे पढ़ाई में क्यों नहीं लगाते?" नकल क्यों करते हो ?" हंसकर बोला, शार्ट कट यार, शार्ट कट।"

"बार– बार नकल करते पकड़े जाओगे तो फेल कर दिये जाओगे।"

"अरे यार, तू मेरे हाथ की सफाई देखता जा। अब ऐसा तरीका अपनाऊंगा कि कोई माई का लाल मुझे पकड़ नहीं पायेगा।"
"नहीं यार, यह ठीक नहीं है। हम स्कूल में सीखने जाते हैं। नकल करते रहोगे तो सीखोगे कैसे?"

"अच्छा, अब तू चुप हो जा और ले...यह टॉफी खा...और सुन, घर पर मत बतलाना मेरी नकल वाली बात ...समझे ?"

☼ ☼ ☼
अगले पेपर में उसकी फिर वही हरकतें । जब उसकी सारी पर्चियां अध्यापक छीन लेते तो वह मुझे परेशान करने लगता– फुसफुसाकर बोलता रहता, "यार दिखा दे...दिखा दे न।"

'कभी नकल करना मत, किसी को नकल कराना मत। मां के ये शब्द हमारे मूल मंत्र थे जिन पर हम अडिग रहे। बाहर निकलते ही विक्रम चिल्लाया, "क्यों बे, सवाल क्यों नहीं दिखा रहा था ? कैसा दोस्त है ? मेरी चीजें तो बड़ी जल्दी खा लेता है।"

"तुम मुझे नकल करवाने के लिये चीजें खिलवाते हो ? लो पकड़ो अपनी टॉफी।"

☆ ☆ ☆
एक दिन का गुस्सा फिर वही खेलकूद और मस्ती। बचपन इसी का नाम है।

कुछ दिनों बाद रिपोर्ट कार्ड मिले। छमाही परीक्षा में विक्रम फेल हो गया था। आग्नेय नेत्रों से हमें घूरता हुआ बोला, ''कलमुंहे, तेरी जुबान काली है। तू ही कहता था फेल हो जाएगा, फेल हो जाएगा''। ''हां, मैंने कहा था, तू फेल हो जायेगा अगर नकल करता रहेगा तो। अब भी कहता हूं, नकल करना छोड़ दे, सालाना परीक्षा में कम ही सही मगर अपने नंबरों से पास हो''।

''अबे जा तू, मैं तुझे बढ़िया नंबरों से पास होकर दिखाऊंगा समझे, बिना नकल के ?'' हम हंसते हुए बोले थे।

''हां...हां काम कर अपना...तेरी तो...कहते–कहते वह हमसे धींगामुश्ती करने लगता। बात हंसी में उड़ जाती।
☆ ☆ ☆

आदतें बनाना आसान है, तोड़ना बहुत कठिन। वह नकल का आदी हो चुका था। 'नकलची' के नाम से मशहूर भी हो गया था। सभी अध्यापक उस पर कड़ी नजर रखने लगे थे। परिणाम–सालाना परीक्षा में भी फेल। सारी मित्रमंडली पास हो गई सिवाय विक्रम के। सब खुशी–खुशी घर लौट रहे थे पर विक्रम उदास–उदास पीछे–पीछे चल रहा था। मुझे उससे सहानुभूति हो आई। मैंने अपनी चाल मद्धम कर दी।

जैसे–जैसे वह पास पहुंच रहा था, मेरा मन उसे ढाढस बंधाने के लिए शब्द इकट्ठे कर रहा था कि अचानक एक नुकीला पत्थर मेरे ललाट पर आकर लगा। चीख के साथ खून का फव्वारा मेरे माथे से फूट निकला। मित्रगण भागकर पीछे पलट आये थे। कोई मेरा माथा दबाये था तो कुछ मुझे सहारा देकर घर तक ले चलने की जुगत कर रहे थे। विक्रम वहां से भाग चुका था।

कुछ पलों के बाद मैं संयत हुआ। मैंने मित्रों से विनती की कि घर पहुंचकर कोई नहीं बतायेगा कि चोट विक्रम ने पहुंचाई है। मैं 'माताओं' के वाक युद्ध से तो घबराता ही था, विक्रम को डांट भी नहीं पड़वाना चाहता था।

कुछ दिन में घाव तो भर गया पर निशान माथे पर रह गया। गली में आते –जाते वह मुझसे नजरें चुराने लगा था।

अचानक पिताजी का स्थानातंरण कानपुर हो गया। विदाई पर सभी मित्र स्टेशन पर छोड़ने आये। विक्रम भी आया पर बोला नहीं, चुपचाप खड़ा रहा पीछे–पीछे। गाड़ी ने सीटी दी । मैं डिब्बे में चढ़ने लगा तब विक्रम झट आगे आया, हाथ मिलाया। गाड़ी चलते–चलते दोनों के हाथ जब छूटे तो मेरे हाथ में एक कागज का टुकड़ा अटक गया जिस पर लिखा था, 'मुझे माफ कर दो आदित्य, मैं अब कभी नकल नहीं करूंगा।'

☆ ☆ ☆
नये घर में पहुंचकर मैंने वह कागज का पुर्जा घर के मन्दिर में रख दिया। मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की 'विक्रम के विचार को बल मिले।'

आज वर्षों बाद अपनी बिटिया के स्कूल में उसे योग अध्यापक के रूप में देखकर हैरानी हुई और खुशी भी। सामने आया तो गले से लग गया,''आदित्य, मैं तुमसे ठीक से क्षमा भी नहीं मांग पाया था, शायद इसीलिये ईश्वर ने दोबारा मिलवाया है। मैं तुम्हारा आभारी हूं। जो भी बन सका हूं, तुम्हारे विचारों के ही सहारे। तुम्हारे जाने के बाद मैंने बिल्कुल नकल नहीं की । सच मानो मुझ पर विश्वास है न ! मां कसम सच कह रहा हूं।''

मेरा गला रुंध गया। कुछ भी बोल न पाया। घर पहुंच कर मैंने उसे भगवान जी के चरणों में रखा वह पुर्जा दिखाया और कहा, ''विश्वास तो तुम पर मुझे उसी दिन हो गया था जब तुमने मेरे माथे पर 'तिलक' किया था।

हंसते हुए वह फिर मुझसे लिपट गया था और मिनी बिटिया भी खिलखिलाकर हंस रही थी।

**राजकुमारी शर्मा**
राजकीय कन्या उ0 माध्यमिक विद्यालय,
दिल्ली

2

# स्वप्न–भंग

**मालती का भावुक मन जो यथार्थ भोग रहा था, उसमें रेत की शुष्कता थी, सरसता तो जाने कहां लुप्त हो गयी थी। जीवन की रसधारा परिस्थितियों की रेत सूखती जा रही थी। गृहस्थ–जीवन की सुखद कल्पनाएं रेत के टीले की भांति ढहती जा रही थीं। अब उसके पास शेष था सब कुछ होने के बाद भी कुछ न होने का अहसास।**

आज एक सप्ताह बीत गया पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट दर्ज कराये। अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई। स्थानीय समाचार पत्र में एक छोटी–सी खबर छपी–'एक और नव विवाहिता दहेज हत्या का शिकार' बस। पूरा शहर अपने आप में व्यस्त है, सब कुछ यथावत्। लेकिन आनन्द के जीवन में कोहराम मचा है। आज उसे बहन मालती की स्मृतियों में खो जाना ही अच्छा लग रहा है।

दुःख–शोक से व्याकुल वह भाई किस से बयां करे अपनी पीड़ा। बहन की हत्या से आहत आनन्द अपने भीतर अनन्त गहराई में डूबता ही जा रहा है। आज उसे अनुभव हो रहा है कि बेटे के जन्म में उत्सव तथा बधाइयां और बेटी के जन्म पर पिता की आंखों में आंसू और सिर क्यों झुक जाता है।

अभी एक वर्ष भी तो नहीं हुआ था जब उसने अपनी पांचवीं बहन मालती का विवाह किया था। चार बहनों का विवाह उसके पिता अपने जीवनकाल में ही कर गये थे। पांचवी बहन मालती की जिम्मेदारी आनन्द के कंधों पर छोड़ पिता दुनिया से विदा हो गये। पिता की मृत्योपरांत आनन्द ने मालती के लिये अच्छे घर–वर की खोज प्रारंभ कर दी।

मालती को देखने लोग आने लगे। कोई परम तृप्ति से खा–पीकर उसे मना कर जाते तो कोई उसके श्याम वर्ण पर आपत्ति कर लौट जाता।

चार बहनों का विवाह करने के लिये आनन्द के पिता ने तीन पीढ़ियों का विरासत में मिला मकान भी बेच दिया था। साधारण नौकरीपेशा आनन्द अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर मालती के दहेज का प्रबंध करने लगा। मालती इस सावन में सत्ताइस वर्ष पूर्ण करने जा रही थी।

बहन की उम्र बढ़ने के साथ भाई की चिंता बढ़ना भी स्वाभाविक था। अत्यधिक तनावग्रस्त होने पर वह कुछ पल आंखें मूंद कर आध्यात्मिक आनन्द में लीन होने की चेष्टा करता लेकिन वाह्यय दृष्टि बन्द होने पर अन्तर्दृष्टि में उसे मालती की छवि और भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगती।

आखिर एक दिन समाचार पत्र में दिये वैवाहिक विज्ञापन के माध्यम से एक सभ्य, सुसंस्कृत परिवार के शिक्षित, नौकरीपेशा लड़के का रिश्ता आया तो निराश हो चुके आनन्द के जीवन में आशा की एक किरण जाग उठी। मालती की प्रतिभा पर मुग्ध हो लड़के ने जब रिश्ते के लिये स्वीकृति दे दी तो आनन्द के पास विलम्ब और प्रतीक्षा की गुंजाइश ही कहां थी ? आनन्द की स्वीकृति पर मालती ने भी स्वीकृति की मुहर लगा दी। लेन–देन का सौदा भी तय हो गया।

नियत तिथि पर धूमधाम से विवाह समारोह का आयोजन हुआ, सभी नाते–रिश्तेदार और शुभचिंतक जो श्यामवर्णा, सुशिक्षित उम्र की उत्तरोतर सीढ़ियां चढ़ती मालती के चिरकुंवारी रहने की भविष्यवाणी करते नहीं थकते थे, आज उसे सहस्त्रों शुभकामनाओं से अभिषिक्त कर रहे थे।

आनन्द का आशीर्वाद और शुभकामनाएं तथा अनेकानेक उपहारों के साथ मालती ससुराल के लिये विदा हो गयी। भाई ने अपनी सामर्थ्यानुसार विवाह पर व्यय किया। मालती सपनों की सतरंगी दुनिया में हृदय के उच्चासन पर स्वप्निल राजकुमार को बैठा ससुराल पहुंच गयी।

सप्ताह भर में ही मालती के सपने भंग होने शुरू हो गये। सास हर पल मालती को अपने संरक्षण में रखती। उसका खुले में पति से बात करना सास–ससुर के सम्मान के विरूद्ध समझा जाता। रात्रि को छोड़ दिन के उजाले में न तो वह पति के साथ बैठ सकती और न ही अपने मन की कोई बात कह पाती। परम्पराओं और संस्कारों की बेड़ियों में जकड़ दी गयी मालती का 'स्व' कुछ महीनों के दाम्पत्य जीवन में कहां लुप्त हो गया पता ही न चला।

उस दिन तो मालती का अपने ससुराल से मोह भंग ही हो गया जब उसकी सास ने उस से कहा–''बहू ! जमीन खरीदे तीन साल हो गये हैं। अब अगर मकान बनाना है तो पैसों का भी प्रबंध करना पड़ेगा। तुम अपने भाई से कहकर दो लाख का प्रबंध कराओ तभी हम काम शुरू करवायें''। मालती के पैरों तले जमीन खिसक गयी।

रात को पति के समक्ष सास द्वारा कही गयी बात को जब मालती ने कहा तो पति की प्रतिक्रिया देख मालती पूरी तरह टूट गयी। सास और पति का दुर्व्यवहार मालती की दिनचर्या का अंग बन गया।

मालती का भावुक मन जो यथार्थ भोग रहा था, उसमें रेत की शुष्कता थी, सरसता तो जाने कहां लुप्त हो गयी थी। जीवन की रसधारा परिस्थितियों की रेत सूखती जा रही थी। गृहस्थ–जीवन की सुखद कल्पनाएं रेत के टीले की भांति ढहती जा रही थी। अब उसके पास शेष था–सब कुछ होने के बाद भी कुछ न होने का अहसास।

दाम्पत्य जीवन और पति से मोहभंग हो जाने पर उसने वापस भाई के घर लौटने का निश्चय किया और इसी आशय से भाई को पत्र प्रेषित किया। पत्र पहुंचाने से पूर्व ही आनन्द के पास मालती की हत्या की सूचना दूरभाष से पहुंच गयी। यह समाचार सुनते ही मानो वह अपने भीतर तहखाने में उतरता ही चला गया। संज्ञाशून्य पड़े आनन्द के पास संवेदना व्यक्त करने वालों का तांता लग गया।

चेतना लौटते ही वह उठा और कांपते शरीर तथा लड़खड़ाते पैरों से पहुंच गया पुलिस स्टेशन मन ही मन यह संकल्प लेते हुए 'मैं दहेज से अनुबंधित एवं प्रदर्शनयुक्त विवाह नहीं करूंगा, न ही ऐसे विवाह समारोह में भाग लूंगा।'

पुलिस स्टेशन में रिपार्ट दर्ज कर ली गयी लेकिन आज भी दोषियों को सजा दिलाने के लिये वह पुलिस स्टेशन के चक्कर काट रहा है..... न जाने कब तक...।

**नीलम बिष्ट**
ललित आर्य महिला इंटर कालेज
हल्द्वानी उत्तराखण्ड

3

# आत्मबोध

**मैंने उसकी पूरी बात ध्यान से सुनी और उसे समझाते हुए बोली, ''बेटा गौरव, ऐसे कर्म करने से भविष्य तुम्हारा बिगड़ेगा, मां–बाप का नहीं। जिन्होंने तुम्हारा नाम 'गौरव' रखा है कम से कम उनकी आशाओं को मत मिटाओ। आज तुम शपथ खाओ कि ना तो तुम नशीले एवं मादक पदार्थों का सेवन करोगे और ना ही भविष्य में किसी और को अपने सामने करने दोगे।**

वंदना ने इस विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर पिछले माह ही कार्यभार संभाला था। आते ही पता चल गया कि एक माह बाद विद्यालय का वार्षिकोत्सव होना निश्चित हुआ है। यह तिथि पूर्व प्रधानाचार्य ने निर्धारित की व परिवर्तन करना संभव नहीं था।

शहर के जिला उपायुक्त को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था, उनके ही हाथों होनहार छात्रों को पुरस्कार दिया जाना था। वंदना अपने कक्ष में कुछ कार्य कर रही थी कि सांस्कृतिक कार्यक्रम की अध्यक्षा ने आकर सूचना दी कि मैडम विशिष्ट अतिथि महोदय आ रहे हैं।

वंदना तुरंत बाहर आई और मुख्य अतिथि जी का स्वागत करते हुए उनके लिये निर्धारित स्थान पर सम्मानपूर्वक ले गयी। अतिथि महोदय ने वंदना को देखते ही उनके चरण स्पर्श किये। योजनानुसार वे मंच पर गये और होनहार छात्रों को पुरस्कृत किया। तत्पश्चात् विशिष्ट अतिथि जी ने भाषण प्रस्तुत किया, ''उपस्थित गुरुजन, अभिभावकगण एवं विद्यार्थियों! बड़े गर्व की बात है कि मैडम वंदना जैसी गुरु इस विद्यालय की प्रधानाचार्य हैं। मेरे द्वारा चरण स्पर्श करने पर वो अभी तक आश्चर्यचकित हैं, शायद उन्होंने मुझे पहचाना नहीं है। मैं उनका वही दिशाहारा शिष्य गौरव हूं जो अपने मार्ग से भटक गया था।

मुझे याद है वह दिन जब मैं गलत मित्रों की संगत में फंसकर मादक द्रव्यों एवं नशीले पदार्थों–जैसे भांग, गांजा, चरस, अफीम, शराब इत्यादि का सेवन करने लगा था। हर वक्त मेरी आंखें नशे से लाल रहतीं व स्वास्थ्य भी दिन–प्रतिदिन गिरने लगा था। कक्षा में क्या पढ़ाया जा रहा है, मुझे इससे कोई मतलब नहीं था। कभी–कभी नशे की लत को पूरा करने के लिये मैं घर से पैसे भी चुराता था और यदि पैसे हाथ नहीं लगते तो घर का कीमती सामान चुरा कर सस्ते दामों पर बेच देता।

मैं उस वक्त उम्र के उस मोड़ पर था जहां से बच्चा राह भी भटक सकता है और यदि सही मार्ग दर्शन मिल जाये तो जीवन में अपने लक्ष्य तक पहुंचा भी सकता है। एक दिन मैंने अपनी जरूरत पूरी करने के लिये एक राह चलते व्यक्ति की जेब काट ली। उसके शोर मचाने पर मैं पूरी शक्ति के साथ दौड़ने लगा।

अतिथि महोदय अपना भाषण धारा प्रवाह दिये जा रहे थे और वंदना अतीत के पिछले 17 वर्षों पूर्व में चली गयी। अवकाश का दिन था। वंदना बाजार से कुछ जरूरत का सामान खरीदकर घर लौट रही थी कि एक 14–15 वर्ष का लड़का, गौर वर्ण, आकर्षक नयन नक्श, मैले वस्त्र पहने दयनीय हालत में वंदना का हांथ पकड़कर बोला, ''मैडम, कृपया मुझे मेरे पीछे आने वाले लोगों से बचाइये। मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा। मैं एक ही क्षण में सारी स्थिति समझ गयी। लड़के के मुख से दुर्गन्ध आ रही थी, शायद उसने नशीले पदार्थ का सेवन कर रखा था। मैंने ऑटोरिक्शा रुकवाया और लड़के को घर ले गयी। घर जाकर मैंने बड़े अपनेपन से पूछा, ''तुम्हारा नाम क्या है ?''

लड़के ने धीमे स्वर में कहा, ''गौरव.... गौरव शर्मा''।
मैंने प्रश्न का क्रम जारी रखते हुये कहा,'' और तुम्हारे माता–पिता ?''

लड़के ने सहमते हुए कहा, ''मेरे पिताजी शहर में कपड़े के थोक के व्यापारी हैं और मेरी मां एक स्वयंसेवी संस्था चलाती है जो कि गरीब व अनाथ बच्चों की मदद करती है।

मैं अवाक रह गयी जीवन के ऐसे कटु सत्य को सुनकर, कैसे मां–बाप हैं जो अपने असली उत्तरदायित्व से बच रहे हैं और समाज में झूठी शान बनाये रखने के लिये दिखावा करते हैं।

मैंने फिर पूछा, ''बेटा कुछ खाओगे ? भूख लगी होगी ?'' लड़के ने उत्तर दिया, ''हां, थोड़ा कुछ... ।'' मैंने उसे कुछ बिस्कुट–नमकीन दिये, साथ में एक गिलास फलों का रस पिलाया। मैंने उससे पुनः पूछा, ''तुम मादक–द्रव्यों का सेवन कब से और क्यों कर रहे हो ?'' गौरव ने उत्तर दिया, ''मैडम, एक वर्ष से। मां एवं पिताजी की उदासीनता एवं खुद का अकेलापन दूर करने के लिए यह रास्ता मेरे मित्र विनय ने बताया था। इसका सेवन करने के बाद मुझे अकेलापन नहीं खलता था।''

मैंने उसकी पूरी बात ध्यान से सुनी और उसे समझाते हुए बोली, ''बेटा गौरव, ऐसे कर्म करने से भविष्य तुम्हारा बिगड़ेगा, मां–बाप का नहीं। जिन्होंने तुम्हारा नाम 'गौरव' रखा है कम से कम उनकी आशाओं को मत मिटाओ। आज तुम शपथ खाओ कि ना तो तुम नशीले एवं मादक पदार्थों का सेवन करोगे और ना ही भविष्य में किसी और को अपने सामने करने दोगे। तुम स्वयं शिक्षित होकर समाज की नई पीढ़ी, जो राह से भटक गयी है, मार्गदर्शक बनकर उसे उत्थान की ओर ले जाओगे।''

वह कुछ गंभीरता से सोचता रहा। फिर अपने दोनों हाथों से मेरे हाथ पकड़कर कहने लगा, '' मैं आपके समक्ष प्रण करता हूं कि भविष्य में मैं आपकी सीख का मान रखूंगा।''

सत्रह वर्षों बाद आज वह फिर मुझे मिला, बिल्कुल एक नये गौरव के रूप में। मुझे लगा कि मेरी शिक्षा सार्थक हो गयी। कुछ वर्षों पूर्व जो सूर्य धुंधला गया था आज प्रखर रूप से अपनी किरणों से पूरी दुनिया को प्रकाशमान कर रहा था।

तभी विशिष्ट अतिथि महोदय ने अपना भाषण खत्म करते हुए कहा,''मैं अनुरोध करता हूं अपने प्यारे विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों एवं उपस्थित गुरुजनों से कि वे भी मेरे संग मिलकर शपथ लें कि वे न तो भविष्य में किसी प्रकार के नशीले पदार्थों एवं मादक द्रव्यों का सेवन करेंगे और न ही अपने सामने किसी और को करने देंगे। तभी स्वस्थ एवं प्रगतिशील भारत का निर्माण हो सकेगा। जय–हिन्द।'' गौरव को एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में देखकर मेरी आंखों से खुशी के आसुओं की अविरल धारा बहने लगी।

**गीता सिंह**
मदर टेरेसा, राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय
कल्याणपुरी, दिल्ली

4

# नया सबक

**मोहन ने कहा, "मुझे लगता है तुम बहुत डरपोक हो, यदि तुम मुझे अपना साथी बनाओगे तो तुम्हें किसी से डरने की जरूरत नहीं है। मैं इस कॉलेज में किसी से नहीं डरता। जानते हो, जब कॉलेज में तोड़फोड़ या हड़ताल करनी होती है तो मेरे सिनियर्स मुझ से ही सहायता मांगते हैं।"**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे किसी न किसी साथी की आवश्यकता अवश्य होती है परन्तु यह संगति ही उसके व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करती है।

संगति का प्रभाव मनुष्य पर अवश्य पड़ता है। कुछ साल पहले मुझे राहुल नाम का एक लड़का मिला, जो कि मेरे मौहल्ले में अपने माता–पिता के साथ रहता था। राहुल में बहुत ही भोलापन था। वह अपनी बारहवीं की परीक्षा पास कर चुका था। अब उसे कॉलेज में प्रवेश करना था।

राहुल कॉलेज के वातावरण से बिल्कुल अनभिज्ञ था। कुछ दिन बाद वह कॉलेज जायेगा, उसे यह चिंता सताये जा रही थी। उसने सुन रखा था कि कॉलेज के वरिष्ठ विद्यार्थी बुरे तरीके से अपने से कनिष्ठ विद्यार्थियों की 'रेगिंग' करते हैं, उनसे छेड़छाड़ करते हैं, बेहूदा मजाक करते हैं। बेचारा राहुल आखिर करता भी तो क्या ?

धीरे–धीरे समय बीतता गया। राहुल की चिंताएं बढ़तीं जा रही थीं। आखिर वह दिन आ गया जब राहुल कॉलेज में प्रवेश कर गया। उसने 'रेगिंग' तक को बर्दाश्त कर लिया, लेकिन कॉलेज में बढ़ती हिंसात्मक प्रवृत्तियों ने तो मानो उसकी नींद ही उड़ा दी।

आये दिन छात्रों द्वारा कॉलेज में हड़ताल–तोड़फोड़। पढ़ाई का नामोनिशान ही नहीं। कभी संस्था को लेकर हड़ताल तो कभी अध्यापकों को लेकर। आखिर कब थमेगी यह बिन मौसम बरसात ?

राहुल की कक्षा में मोहन नाम का एक लड़ाकू लड़का पढ़ता था। राहुल को वह बहुत पसंद करता था। एक दिन उसने राहुल से कहा, ''मैं तुम जैसे लड़कों को ही अपनी दोस्ती के काबिल समझता हूं। क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे ?''

राहुल ने कहा, ''मैं तो तुम्हारे व्यवहार से खुश नहीं हूं, फिर हम दोनों दोस्त कैसे बन सकते हैं ?'' मोहन बोला, ''मैं समझ गया हूं कि तुम यह सब क्यों कह रहे हो ? तुम इन सब झमेलों से दूर रहना चाहते हो।'' राहुल ने कहा,'' कौन से झमेले ?''

मोहन ने कहा, ''मुझे लगता है तुम बहुत डरपोक हो, यदि तुम मुझे अपना साथी बनाओगे तो तुम्हें किसी से डरने की जरूरत नहीं है। मैं इस कॉलेज में किसी से नहीं डरता। जानते हो, जब कॉलेज में तोड़फोड़ या हड़ताल करनी होती है तो मेरे सिनियर्स मुझ से ही सहायता मांगते हैं।''

राहुल थोड़ी देर चुप रहा फिर कुछ पल बाद बोला, '' मोहन, क्या तुम कक्षा से समय निकालने के बाद मुझसे किसी शांत जगह मिलोगे ?'' मोहन बोला, '' क्यों भाषण, सुनाना है कोई ? मैंने बहुत भाषण सुने है।''

राहुल ने कहा, ''यदि तुम सचमुच मुझे अपने ग्रुप में शामिल करना चाहते हो, तो तुम्हें मेरी एक शर्त माननी होगी। राहुल की बात सुनकर मोहन दुविधा में पड़ गया,आखिरकार उसने मोहन से मिलने का वादा कर डाला।

कुछ दिन बाद वे दोनों कॉलेज के मैदान में मिलते हैं। राहुल ने कहा, ''मोहन, यह विद्यार्थी जीवन क्या है तुम जानते हो ? मैं बताता हूं, विद्यार्थी का लक्ष्य है विद्या प्राप्ति। तुम इस विद्या के मन्दिर में आकर आए दिन हड़ताल, तोड़फोड़ करके अपनी पढ़ाई का नाश कर रहे हो।

राहुल ने आगे कहा, ''क्या तुन्हारे सिनियर्स तुम्हे नौकरी दिलवा सकते हैं ? कोई डिग्री दिलवा सकते हैं ? दोस्त ! अध्ययन करके भविष्य का निर्माण करना ही हमारे पूर्वजों का सपना है।'' मोहन गम्भीरता से राहुल की सुन रहा था। राहुल बोला, ''कैसे होगा यह सपना साकार ? महंगाई की वजह से पहले ही हमारा देश अनेक समस्याओं से जुझ रहा है, फिर यह तोड़फोड़, हिंसात्मक प्रवृत्तियां–जैसे गाड़ियां जलाना, इमारतों को नुकसान पहुंचाना हमारे देश को कितने पीछे कर देगा तुमने कभी सोचा है ? शायद नहीं ? समय नहीं मिला होगा ? शुक्ल जी ने ठीक कहा है 'कुसंग का ज्वर बड़ा भयानक होता है। दुर्जन का साथ पग–पग पर हानि देता है। अपमान और अपयश देता हूं। विशेष रूप से दोस्त, विद्यार्थियों को सत्संगति का महत्व समझना चाहिए, क्योंकि वे अपरिपक्व अवस्था में होते हैं और कच्ची मिट्टी के समान उन्हें किसी भी रूप में ढाला जा सकता है।''

कुछ देर के लिये मोहन चुप्पी साधे खड़ा रहा, मानो गम्भीर चिंतन में पड़ गया हो। अचानक मोहन की आंखों से आंसुओं की धार बहने लगी। उसने राहुल से कहा, ''दोस्त ! तुमने तो आज मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाया है, मेरी आत्मा को जगाया है जो अब तक सोई हुई थी। आज से मैं प्रण करता हूं मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा। केवल पढ़ाई पर ध्यान दूंगा, अच्छा विद्यार्थी बनकर राष्ट्र का नाम ऊंचा करूंगा।''

मोहन ने न केवल अपने में बदलाव किया बल्कि राहुल के साथ मिलकर सारे कॉलेज में हिंसात्मक प्रवृत्तिंयों की रोकथाम कर दी। दोनों मित्र प्रत्येक दिन खुशी–खुशी कॉलेज में आते और सबको नया सबक सिखाते।

**अनीता फोतेदार**
डी. एल. एफ. पब्लिक विद्यालय,
राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, उ0 प्र0

# वचन का पालन

**चीते ने कहा, "मैं कसम खाता हूं आज के बाद किसी जानवर को हानि नहीं पहुंचाऊंगा। मैं भी तुम्हारी तरह फल, घास आदि खाकर अपना पेट भर लूंगा। तुम मुझे बचा लो।" बंदर ने बड़ी सी टहनी नदी मैं डाली और चीते को बचा लिया। सभी जानवरों ने बंदर को शाबासी दी। इस घटना के बाद चीते ने भी अपने वचन का पालन किया और किसी जानवर को नहीं मारा।**

"अहिंसा सब धर्मों का मूल है। अहिंसा का तत्व–चिंतन है मेरा सभी प्राणियों से मैत्री भाव है, किसी से बैर नहीं है। अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुये अध्यापिका जी ने अपने विद्यार्थियों को समझाया कि अहिंसा का अर्थ है– हिंसा न करना । किसी को न मारना। अहिंसक व्यक्ति विश्व का मित्र होता है उसे अजातशत्रु (जिसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली हो) कहते हैं। हिंसा दो प्रकार की होती है – एक क्रियात्मक दूसरी भावात्मक हिंसा। क्रियात्मक हिंसा क्रिया द्वारा अर्थात् करने से होती है और भावात्मक हिंसा क्रिया भाव द्वारा अर्थात् मन में सोचने से होती है।"

विद्यार्थियों ने पूछा, "कैसे ?"

अध्यापिका ने कहा, "एक राजा को शिकार करने का बहुत शौक था। वह एक दिन जब शिकार करने जंगल में गया तो उसे वहां एक मुनिराज मिले। राजा ने उन्हें प्रणाम किया। मुनि ने राजा को समझाया कि राजन आप शिकार करना छोड़ दीजिये। जीवों की हत्या करना पाप है। यह हिंसा कहलाती है।"

'इस दया धर्म का धरती पर तुम
खून बहाना छोड़ दो।
मार्ग अहिंसा का अपनाओ,
हिंसा करनी छोड़ दो।'

राजा को मुनि की बात समझ आती है और वह प्रण करता है कि वह अहिंसा के मार्ग पर चलेगा, शिकार करना छोड़ देगा।

राजा ने अपना वचन निभाया और शिकार करना छोड़ दिया परंतु वह अपने मन से जानवरों को मारने का ख्याल नहीं निकाल सका और कागज पर चित्र बनाकर उन्हें फाड़ता और नदी में प्रवाहित कर देता था। मुनिराज एक दिन वहां से निकल रहे थे तो उन्होंने राजा को हिरन, शेर, चीता आदि जानवरों के चित्र कागज पर बनाते और उन्हें फाड़कर नदी में फेंकते हुए देख लिया और कहा– "राजन् ! आपने तो हिंसा न करने का प्रण किया था लेकिन आप तो अभी भी वहीं कार्य कर रहे हैं।" राजा ने उत्तर दिया– "महात्मन ! मैंने तो शिकार करना छोड़ दिया है।"

मुनिराज ने राजा को समझाया, ''राजन ! आपने अपने हाथों को शिकार करने से रोका है, मन को नहीं। अगर आप मन से अहिंसा को अपनायेंगे, तभी आप अहिंसा प्रेमी कहलाएंगे।'' राजा को यह बात समझ आ गई और वह फिर से प्रण करता है– मैं मन से, वचन से, काया से किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करूंगा।

सभी बच्चे कहानी सुनकर खुश होते हैं। तभी एक विद्यार्थी प्रश्न पूछता है कि जब एक जानवर दूसरे जानवर को मारता है तो क्या यह भी हिंसा कहलाती है ? अध्यापिका जी उत्तर देती हैं, ''प्यारे बच्चो ! माना कि एक जानवर दूसरे जानवर को मारकर अपना पेट भरता है, पर हिंसा तो यह भी है। परंतु वे जानवर है। उनमें सोचने–समझने की क्षमता नहीं होती है।

लेकिन उन्हें सिखया जाये तो वह भी हिंसा छोड़ देते हैं। जैसे घर में रह रहे पालतू जानवर को जो दिया जाता है, वह वही खाता है। एक बंदर ने भी एक चीते को हिंसा छोड़ने के लिए मना लिया था।

बच्चे, ''कैसे अध्यापिका जी।''

अध्यापिका बोली, ''एक बार एक चीता पेड़ के नीचे सो रहा था। पेड़ के ऊपर एक बंदर था अचानक एक फल नीचे सो रहे चीते पर गिरा तभी चीता उससे नीचे उतरने को कहता है। उसकी आवाज सुनकर अन्य जानवर भी वहां चले आते हैं।

हाथी उन दोनों से झगड़े का कारण पूछता है। बंदर कहता है, ''दादा, मैं फल खा रहा था तभी फल मेरे हाथ से छूट कर नीचे सो रहे चीते पर गिर गया।'' हाथी ने बंदर से कहा, ''तुम चीते से माफी मांगो।'' बंदर ने क्षमा मांगी और चीते ने उसे छोड़ दिया।

एक दिन चीता शिकार करने निकला। जंगल में एक नदी थी जिस पर सभी जानवर पानी पी रहे थे। चीता वहीं घात लगाकर बैठ गया। तभी हिरन पानी पीने आया और चीते ने उसे पकड़ने की कोशिश की लेकिन हिरन वहां से भाग गया। चीते ने छलांग लगाई परंतु नदी के गहरे पानी में गिर गया। अब वह 'बचाओ, बचाओ' चिल्लाने लगा। उसकी आवाज सुनकर सभी जानवर वहां आ गये। बंदर भी वहां आया था।

उसने कहा, ''चीते, मैं तुम्हें बचा तो सकता हूं, पर बचाऊंगा नहीं।'' चीते ने कहा, ''मुझे बचा लो बंदर भाई। पुरानी बात भूल जाओ।''

बंदर ने कहा, ''तुम जंगल के जानवरों को मारते हो। तुम्हें मर जाना चाहिये।'' चीते ने कहा, ''मैं किसी को नहीं मारूंगा तो खाऊंगा क्या ?'' बंदर ने कहा, ''जब हम घास, फल–फूल खा सकते हैं तो तुम क्यों नहीं खा सकते ? सारे जानवर तुमसे डरते हैं। सभी जानवरों को भी जीने का अधिकार है।''

चीते ने कहा, ''मैं कसम खाता हूं आज के बाद किसी जानवर को हानि नहीं पहुंचाऊंगा। मैं भी तुम्हारी तरह फल, घास आदि खाकर अपना पेट भर लूंगा। तुम मुझे बचा लो।'' बंदर ने बड़ी सी टहनी नदी में डाली और चीते को बचा लिया। सभी जानवरों ने बंदर को शाबासी दी। इस घटना के बाद चीते ने भी अपने वचन का पालन किया और किसी जानवर को नहीं मारा।

अध्यापिका जी ने बताया बच्चों ! आपके खानपान का प्रभाव भी आपके विचारों पर पड़ता है। यदि आप शाकाहारी भोजन खाते हैं तो आपके विचारों में अहिंसा की भावना उत्पन्न होगी। यदि आप मांसाहारी भोजन खाते हैं तो आपके विचार हिंसात्मक होंगे। यही सुनकर सभी बच्चे प्रण करते हैं कि वे कक्षा में तोड़फोड़ नही करेंगे। अध्यापिका जी ने कहा, शाबास! यह संकल्प आपको प्रतिदिन दोहराना होगा।

**बबीता जैन**
इंन्द्रप्रस्थ इंटरनेशनल स्कूल,
द्वारका, नई दिल्ली

**टीमें बनाने के उपरांत सभी बच्चों ने गांव में जाकर अच्छी सफाई करने का निर्णय किया और अगले ही दिन सभी बच्चे कैंप के लिये चले गये। उन्होंने गांव में जाकर अनेक पशु–पक्षी जैसे कुत्ता, मुर्गी, बैल, गाय, आदि देखे। सभी ने गांव की मिलकर अच्छी सफाई की तथा सड़कें, नालियां आदि भी साफ करवाए।**

भारत गांवों का देश है। उनमें से एक गांव है सुजानपुर। सुजानपुर में बड़ा विद्यालय है। विद्यालय में गांव के सभी लड़के–लड़कियां पढ़ते हैं। खेलने में भी इस विद्यालय ने कई उपलब्धियां प्राप्त की हैं। विद्यालय के प्राचार्य जी बहुत ही नेक तथा अकलमंद इन्सान हैं। वे किसी भी कार्य को बड़े तरीके, सूझबूझ से करते हैं। विद्यालय में समय से आना, बच्चों की देखभाल करना ये उनकी विशेषताएं हैं। सभी बच्चे उनसे बहुत प्यार करते हैं। प्राचार्य जी बच्चों को नेक कर्म करने तथा समय का पाबंद रहने की शिक्षा देते हैं।

आज सोमवार है। प्राचार्य जी ने एक सभा बुलाई हैं जिसमें विद्यालय के सभी वरिष्ठ विद्याथिर्यों को प्रगति और विकास के लिए विद्यालय का चीफ नियुक्त करना चाहते हैं। जो विद्यार्थी नेक, अनुशासन का पालन करने वाला तथा साफ–सफाई वाला होगा वह उसे विद्यालय का चीफ नियुक्त करेंगे।

चीफ का नाम सुनते ही सभी विद्यार्थियों में चीफ बनने की ललक दोड़ पड़ी। राम, श्याम, सोनू, मोनू, मंगल, नरेन्द्र, संदीप, सुनील, राजेश सब के सब प्रेम तथा अनुशासन के देवता बन गए। विद्यालय के सभी विद्यार्थी साफ–सुथरे कपड़े तथा अपने शरीर को साफ तथा स्वच्छ रखने लगे। अब तक जो आलसी थे सबसे आगे आने लगे। प्रत्येक उम्मीदवार बड़ा साफ–सुथरा रहने लगा। हर एक विद्यार्थी अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखने की कोशिश करता। अब तो जो विद्यार्थी हमेशा देरी से आते वे भी जल्दी आने लगे। जब प्रिसिंपल साहब कक्षा से गुजरते तो शांत स्वभाव से पढ़ने की धीमी–धीमी आवाज आने लगती। सभी विद्यार्थी इस प्रकार रहने लगे जैसे नम्रता और सदाचार के देवता मालूम हो।

इस प्रकार नियमबद्ध देखकर प्राचार्य जी को भी चुनाव करना कठिन हो गया और उन्होंने सभी बच्चों का नजदीक के गांव में सफाई तथा जागृति के लिये एन.एस.एस का कैंप लगा दिया। सभी वरिष्ठ विद्यार्थियों ने अपनी–अपनी टीमें बनाईं। राम, श्याम तथा नीलू एक टीम में हैं। दूसरी टीम में राजेश, रमेश तथा सोनू हैं। तीसरी टीम में संदीप, सुनील तथा राजेन्द्र हैं और दो अन्य टीमें भी हैं।

टीमें बनाने के उपरांत सभी बच्चों ने गांव में जाकर अच्छी सफाई करने का निर्णय किया और अगले ही दिन सभी बच्चे कैंप के लिये चले गये। उन्होने गांव में जाकर अनेक पशु–पक्षी जैसे कुत्ता, मुर्गी, बैल, गाय, आदि देखे। सभी ने गांव की मिलकर अच्छी सफाई की तथा सड़कें, नालियां आदि भी साफ करवाए।

सभी बच्चे अपने काम से संतुष्ट थे पर उनमें से दो विद्यार्थी अपने काम से संतुष्ट नहीं थे क्योंकि उन्होंने गांव के लोगों को शराब पीते देखा था। वे लोगों को इसके गलत परिणामों से अवगत कराना चाहते थे। तभी सबने मिलकर सारे गांव वालों को इकट्ठा किया।

उन्होंने सभी को शराब के गलत परिणामों से अवगत करवाने के लिये दो कांच के बर्तन लिये। एक में शराब तथा दूसरे में पानी डाला। सभी के सामने दोनों में एक–एक केंचुआ डाल दिया। कुछ देर बाद शराब वाले बर्तन में केंचुआ मर गया और उसकी चमड़ी जल गई पर दूसरे बर्तन, जिसमें पानी था, केंचुआ जिंदा था। उसके कुछ नहीं हुआ।

तभी गांव वालों में से एक नागरिक ने पूछा, ''क्या शराब हमारे शरीर को इस प्रकार जला देती है ? राजेश ने उत्तर दिया, ''हां शराब में तेजाब होता है जिससे यह हमारे शरीर में जाने से अंदर की नरम चमड़ी व मांस को जला देती है। हमारे शरीर की शक्ति नष्ट करती है। नाड़ियों को भी खत्म कर देती है जिससे हमारी सेहत बिगड़ जाती हैं। हम बीमार हो जाते है और व्यक्ति की आयु घट जाती है।'' तभी भीड़ में से एक युवक ने कहा, ''हा, तभी शराब के सेवन करने के पश्चात् मेरे पिता की स्मरण शक्ति कम हो गई।''

सभी गांव वालों को यह बात समझ में आ गई और उन्होंने कभी भी शराब न पीने का निर्णय किया।

रमेश तथा राजेश के इस काम को देख कर सभी गांव वाले खुश हुए। गांव के सरपंच ने रमेश तथा राजेश को बधाई दी। राजेश को विद्यालय का चीफ तथा रमेश को विद्यालय का सहायक चीफ बना दिया। सभी बच्चे बहुत खुश हुए।

**संदीप कुमार घोड़ेला**
जवाहर नवोदय विद्यालय,
चोप्पदंडी, करीम नगर, आंध्र प्रदेश

**उधर सपना के सास–ससुर ने रोज उसे किसी न किसी बात पर प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। आखिरकार जब उनकी मांग पूरी नहीं हुयी तो सपना को उसके ससुराल वालों ने जला कर मार दिया। जब सपना के मायके वालों को पता चला तो वे बहुत दुखी हुये और उसकी ससुराल वालों के खिलाफ दहेज के मामले में केस दर्ज कर दिया। पुलिस ने सपना के ससुराल वालों को पकड़ लिया।**

मोहनलाल एक मध्यमवर्गीय परिवार से संबंध रखता था। वह बहुत अहंकारी व लालची प्रवृत्ति का था। उसके दो बेटे और एक बेटी थी। उसने अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान की। उसका बड़ा लड़का अनुज इंजीनियर बना। उसकी शिक्षा में काफी खर्च हुआ। अनुज स्वभाव से बहुत सरल और शांत था। छोटा बेटा अभय स्वभाव से निडर तथा स्पष्टवादी था। वह बड़ा होकर वकील बना।

जब अनुज विवाह योग्य हुआ तो उसके लिए कन्यापक्ष से काफी रिश्ते आने लगे। एक साधारण परिवार से अनुज का रिश्ता आया। कन्या बहुत सुशील थी। विवाह की बातचीत आगे बढ़ने पर मोहनलाल ने कन्या के पिता से पूछा, ''शादी कैसी करोगे ?'' कन्या के पिता ने कहा, ''मोहनलाल भाई!बारात की खातिर अच्छी कर दूंगा तथा आवश्यकता का जो भी सामान है, अपनी बेटी को दूंगा।'' मोहनलाल ने कहा, ''मेरा बेटा इंजीनियर है...इंजीनियर। आपको पता है मैंने खून–पसीना एक करके अपने बेटे को इंजीनियर बनाया है, आप अंदाजा लगा सकते हैं उसकी पढ़ाई पर कितना खर्च हुआ होगा ?''

जब अभय ने यह वार्तालाप सुना तो उससे बोले बिना नहीं रहा गया। उसने कहा, ''पिता जी, क्या आपने भैया को कोई वस्तु समझ रखा है जो उनकी बोली लगा रहे हैं ?'' मोहनलाल ने कहा, ''तुम चुप रहो !क्या सही है, क्या गलत, इसका फैसला मैं करूंगा।''

मोहनलाल गुस्से में कहता है, ''आप अपनी बेटी के लिये कोई और क्लर्क ढूंढ लो। बेचारी कन्या का पिता वहां से अपमानित होकर चला गया।

कुछ समय बाद अनुज का रिश्ता एक मध्यमवर्गीय परिवार से आया। बातचीत आगे बढ़ी, शादी की तारीख पक्की हो गयी। बड़ी धूमधाम से अनुज की शादी हुयी। बहू दहेज में आवश्यकता का सारा सामान लायी । इतना सब कुछ होने पर भी आदत से मजबूर मोहनलाल अपनी पुत्र वधू को शब्द बाणों से प्रताड़ित करने लगा। उसकी पत्नी भी उसको अपमानित करती और कहती, ''दहेज में लाई ही क्या है ? इतना सब कुछ तो आम बात है।''

मधुलिका बेचारी चुपचाप सुनती रहती। न तो अपने पति से कुछ कहती, न मायके वालों से। एक बार सबको किसी शादी में जाना था। मोहनलाल ने कहा, ''यह गाड़ी–बाड़ी कुछ लायी नहीं, अब जाएं कैसे ?'' मैं उस समय चुपचाप रहा तो इसके मायके वालों ने मेरी शराफत का नाजायज फायदा उठा लिया। ''मधुलिका ! अपने बाप से कहो एक बढ़िया सी गाड़ी भेज दें।'' मधुलिका ने कहा, ''जी बाबू जी।''

[illegible] इंतजाम कर दूंगा। लेकिन वह मन ही मन बहुत परेशान हुए। उनके ऊपर मानो मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा हो। वह मन ही मन सोचने लगे अब बेटी दी है तो उसको परेशान थोड़े ही देख सकता हूं। कुछ न कुछ अवश्य करूंगा चाहे मुझे मकान ही क्यों न बेचना पड़े।

इधर मोहनलाल की बेटी सपना भी विवाह योग्य हो गई। काफी जगह से रिश्ते की बात चली लेकिन हर जगह से मोहनलाल को ना में उत्तर मिला। वह अपना सा मुंह लेकर चला आया। आखिर सपना का रिश्ता एक साधारण परिवार में तय हो गया।

लड़का एक कंपनी में क्लर्क था। बातचीत आगे बढ़ने पर लड़के के पिता ने कहा, ''शादी में कितना खर्च करने का विचार है।'' मोहनलाल ने कहा, ''आप चिंता मत करो शादी आजकल के हिसाब से होगी।

सपना की शादी बड़ी धूमधाम से हुयी। शादी के कुछ दिन बाद ही सपना की सास और पति ने उसे ताने देने शुरू कर दिये – ''यह शादी कोई आजकल के हिसाब से हुयी है क्या ? आजकल शादी में तो गाड़ी वगैरह सब कुछ देते हैं।''

सपना का ससुर फोन पर मोहनलाल से कहता है, ''गाड़ी का इंतजाम करो।'' मोहनलाल ने कहा, ''ठीक है।'' जब मोहनलाल के छोटे बेटे अभय को इस बात का पता चला तो उसने कहा, ''पिता जी ! कोई जरूरत नहीं है आज आप इनकी मांग पूरी करोगे, कल फिर ये किसी और चीज की मांग कर देंगे।''

उधर सपना के सास–ससुर ने रोज उसे किसी न किसी बात पर प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। आखिरकार जब उनकी मांग पूरी नहीं हुयी तो सपना को उसके ससुराल वालों ने जला कर मार दिया। जब सपना के मायके वालों को पता चला तो वे बहुत दुखी हुये और उसकी ससुराल वालों के खिलाफ दहेज के मामले में केस दर्ज कर दिया। पुलिस ने सपना के ससुराल वालों को पकड़ लिया।

जज ने सपना की सास को कटघरे में बुलाकर पूछा, ''क्या तुमने अपनी पुत्र वधू को जलाकर मारा ?'' उसने कहा, ''नहीं जज साहब ! उसने स्वयं जलकर आत्महत्या की है।'' सपना के भाई अभय ने इस केस की पैरवी की। उसने जज साहब के सामने कहा, ''जज साहब! मेरी समझ में यह नहीं आता हमेशा बहुएं ही जलकर क्यों मरती हैं ? सास तो कभी जलकर मरती नहीं देखी। कितनी अजीब बात है कि औरत ही औरत की दुश्मन होती है। दूसरों की बेटी लाकर उसे प्रताड़ित करते हैं जबकि अच्छे से जानते हैं कि कल को उनकी बेटी को भी पराये घर कि बहू बनना है और अन्जाने में अपने पापों का बोझ अपनी ही बेटी के कंधों पर डाल देते हैं। शादी में दहेज दान के रूप में दिया जाये, वर मूल्य के रूप में नहीं और प्रदर्शन से युक्त विवाह फिजूल खर्ची है। ऐसा विवाह अधिक समय तक नहीं टिक पाता।''

जज अभय की बात पर गौर करता है और फैसला सुनाता है। ''इस दहेज रूपी कोढ़ को समाज से पूरी तरह हटाने के लिये युवक–युवतियों को जागरूक होना पड़ेगा। मांग कर दहेज लेने वालों को सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिये।'' ऐसा कहकर जज न्यायपूर्वक सपना के ससुराल वालों को सजा सुना देता है।

इन सभी बातों को सुनकर मोहनलाल कि आंखें खुल गईं। उसकी आंखों से पश्चाताप के आंसू वह निकले। उसने निश्चिय किया कि वह अपने छोटे बेटे का दहेज से अनुबंधित एवं प्रदर्शन युक्त विवाह नहीं करेगा।

**वन्दना विश्नोई**
बी. एन. पब्लिक स्कूल डबुआ शाखा,
फरीदाबाद, हरियाणा

ठ

# रास्ते कहां मुड़ते हैं ?

**होनी को कुछ और ही मंजूर था। ठकुराइन ने ठाकुर पर काली करतूतों का साया डाल उसे मरवा दिया। उसने नटनी ठकुराइन को जहर दिलवा दिया। उस जहर के असर से नटनी ठकुराइन तो बच गई किंतु उस का दिमाग पागल हो गया। ठाकुर निर्वंशी मर गया था, इसलिये उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं रहा और इसी सोतिया डाह ने इस हवेली को उजाड़ बना दिया।**

आज बरसों बाद जब मैं समझने लगा, तो मन में यह अहसास हुआ कि हमारी विरासत, हमारा इतिहास हमें कई बार बहुत कुछ कहना चाहता है, अगर हम उसकी रो में बहकर उसकी भाषा समझने की कोशिश करें।

मैंने वर्षों पहले जब इतिहास में रूचि लेना शुरू किया तो मैं यह जान भी न पाया कि कहीं अवचेतन में दबी उस हवेली की बात ही मेरे इस झुकाव की बीज थी। कई बार कोई बीज कहां, कैसे, किस भूमि में दबकर अनायास ही अंकुरित होने लगता है, हमें इसका आभास भी नहीं हो पाता।

गुलाबी नगरी से मेरा संबंध आज से ही नहीं, बल्कि तब से रहा, जब मेरे दादाजी गांव से यहां आकर बस गये। यहां उस समय राजाओं का शासन हुआ करता था और आज जितनी आपा–धापी नहीं हुआ करती थी। मेरे दादाजी कहा करते थे कि इसे घी वालों की गली कहते थे। सबसे पहले घी बेचने वाले यहां आये थे, इसलिये इसका नाम यह पड़ा।

घी का व्यवसाय आज भले ही धन कुबेरों का व्यवसाय न रहा हो लेकिन उस समय ये बड़े धनी लोगों का ही काम था। जब हम यहाँ आकर रहने लगे, तो हमारे घर के सामने वाली हवेली में जो परिवार रहा, उस परिवार और हमारे परिवार, दोनों में न जाने कितने मधुर संबंध बने, ये तो मेरे पिताजी ही जानते होंगे, किंतु हम बच्चों ने अपने आपसी अपने संबंधों को 'पा' नाम दे दिया और वह पा दोस्ती।

उनके घर के बाहर एक पेड़ हुआ करता था, अब तो सड़क चौड़ी करने के लिए उसे काट दिया गया। वहां उसके नीचे के चबूतरे पर हम और सरल अपने दुनिया भर के दोस्तों के साथ गिल्ली–डंडा, तो कभी पोसम्बा और कभी सितोलिया खेलते और फीफा वर्ल्ड कप या क्रिकेट वर्ल्ड कप से कोई बड़ा जोश हो तो इसे महसूस करते थे।

वहां सामने की हवेली के नीचे वाले कमरे से हमेशा एक बुढ़िया मां के रोने–चिल्लाने और हंसने की आवाजें आतीं। पूरे मौहल्ले को डर था कि वो बुढ़िया भूतनी है और वह हवेली भी भूतिया है, सो हमारे वहां जाने का तो प्रश्न नहीं था।

भूतहा बुढ़िया और उसकी हवेली के बारे में।

बिल्कुल सुनसान, करीब 30–40 बरस पहले यहां राजसी ठाठ हुआ करते थे। ये राजसी ठाठ–बाटी रौनक वाली इस हवेली से भूतिया हवेली तक की यात्रा की कहानियां वहां के लोगों में प्रचलित थीं। हमने इन्हें काना–फूसी के द्वारा सुना था।

बात यह थी कि वह कथित बुढ़िया, आज जो 80 बरस की रही होगी, लगभग 65 बरस पहले इस हवेली में छोटे ठाकुर नरेन्द्र की बहू बनकर आई। छोटे ठाकुर के पिताजी ठाकुर राम नारायण बड़े सनकी आदमी थे। जो मन में आ जाता वो करते।

एक बार उन्होंने गांव के बाहर शमशान के पास लगे नटों के डेरे में नाचती एक नटनी को देख इतने मोहित हुए कि उन्होंने उसे अपनी पत्नी ही बना लिया। लेकिन इस बात को उनकी पहली पत्नी, जो ठाकुरों के खानदान से ही थी, मानिनी और रूपवती, इस बात को स्वीकार नहीं कर पाई और प्रण किया की वह इस नटनी को ठकुराइन का पद नहीं लेने देंगी।

पहली ही रात उसने धोखे से नई ठकुराइन को जहर दिलवा दिया। ठाकुर साहब का बेटा नरेन्द्र उसी बड़ी ठकुराइन का बेटा था। जैसे ही ठाकुर साहब को यह बात पता चली कि बड़ी ठकुराइन ने ऐसा सोतिया डाह के चलते किया है, तो उन्होंने उसे मरवा दिया और नरेन्द्र का ब्याह भी उसी नट परिवार में कर सबको हवेली में सेवक रख लिया।

इस प्रकार एक नटनी ठकुराइन बनी लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था। नरेन्द्र ने अपनी इस ठकुराइन को कभी नहीं अपनाया बल्कि अपने पिता का बदला इससे लिया और षडयंत्र कर कुछ समय बाद ठाकुर को भी मरवा दिया गया। नटनी ठकुराइन ने जीवन भर ब्रहम्चर्य व्रत पाला किंतु अपनी हवेली को छोड़कर नहीं गई।

नरेन्द्र का दूसरा ब्याह ठकुराइन से हुआ। वो रूपवती रानी अपने पति को पूरी तरह अपने वश में रखती थी। एक बार नटनी ठकुराइन जब स्नान कर रही थी तो महल में किसी कारण से ठाकुर आ गए और नटनी ठकुराइन के रूप–लावण्य के ऊपर मोहित होकर हमेशा उसी के ख्यालों में खोये रहने लगे। वह अपने भाग्य को कोसते कि मैंने क्यों बिना देखे नटनी ठकुराइन को छोड़ दूसरी औरत को वह स्थान दिया ?

होनी को कुछ और ही मंजूर था। ठकुराइन ने ठाकुर पर काली करतूतों का साया डाल उसे मरवा दिया। उसने नटनी ठकुराइन को जहर दिलवा दिया। उस जहर के असर से नटनी ठकुराइन तो बच गई किंतु उस का दिमाग पागल हो गया। ठाकुर निर्वंशी मर गया था, इसलिये उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं रहा और इसी सोतिया डाह ने इस हवेली को उजाड़ बना दिया।

नटनी ठकुराइन जब पागल हो गई थी, इसलिये वो अपनी हवेली में पागलों की तरह घूमा करती थी, पागलों सी कभी हंसती, कभी रोती रहती थी।

उस हवेली पर बड़ी नटनी ठकुराइन का साया था, इसलिये उसकी आत्मा भी वहां घूमती थी, ऐसा भी गांव के लोग कहते थे।

आज मुझे पुरातत्व विभाग में निरीक्षण अधिकारी के पद पर कार्यरत कुछ अरसा बीता और पुनः विदेश से लौटकर अपनी उस बीजभूमि पर कार्य करने का मौका मिला। इस बीच एक घटना और हुई जो सेतु का काम कर गई कि बीज के अंकुरण के लिये भूमि भी उर्वरा होनी चाहिये। यह भूमि गलत संगति के कारण बंजर होने के कगार पर थी।

जब कालेज में था तो गलत लड़कों की संगति के कारण नशे का आदी होकर असाध्य रोग का आसान शिकार बन गया। तब मुझे मेरे ही कॉलेज के इतिहास के नए प्रोफेसर साहब ड़ॉ करन बतरा ने राह दिखाई। कैसे उन्होंने मुझे मार्ग दिखाया, यह भी एक रोचक कथा है।

मैं नशे की लत का शिकार ड्रग्स लेने और खरीदने के लिये रुपये न मिलने पर इसकी बिक्री में सहयोग भी करने लगा। कुछ सर्दियों के दिनों की बात है। एक दिन मैं कॉलेज गेट पर आते वक्त नए शख्स से टकराया और मेरा बैग खुलकर गिर गया। मेरी किताबों और कुछ ड्रग्स के पैकेट्स जो बैग में थे, बाहर निकल पड़े। प्रोफेसर की निगाह पड़ गई थी किंतु उन्होंने अनदेखा किया। उस समय तक मुझे यह आभास भी नहीं था कि यह अनजान व्यक्ति कौन है ?

कॉलेज में लंच के बाद का पीरियड इतिहास का हुआ करता था। मैं न जाने किस आकर्षण में केवल उसी विषय के पीरियड तक रुका रहता था। नशे से लाल आंखें लिए मैं जब क्लास में पहुंचा, तो वहां उसी अन्जान व्यक्ति को क्लास में पढ़ाते पाया। मेरा नशा न जाने कहां गायब हो गया और मैं हिचक गया। उन्होंने मुझे न केवल बैठने को कहा बल्कि मेरे डर को भी दूर भगा दिया।

फिर तो वह प्रोफेसर मेरे ही क्या, पूरे कॉलेज के पसंदीदा लेक्चरर बन गये। जैसे–जैसे वह चलाते गए वैसे–वैसे हम चलते रहे। इतिहास के प्रति आकर्षण तो था ही और अब वह आकर्षण जनून बन गया था।

और आज मैं सोचता हूं यदि मैं इस नशे की लत को नहीं छोड़ता तो शायद कभी भी इतनी प्रतिष्ठित व सम्मानित जिन्दगी न जी पाता। सच ! नशा जीवन के रास्ते का अंत है।

**विजय लक्ष्मी जांगिड़**
सुबोध पब्लिक स्कूल,नजदीक एयर पोर्ट,
जयपुर, राजस्थान

# जीवन का सफर

**वंदना ने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की। उसने अपने पिता की पारिवारिक मजबूरी के बारे में अपने सास–ससुर को बताया लेकिन उसके सास–ससुर के कानों में जूं तक नहीं रेंगी। उन्होंने वंदना का घर से बाहर निकलना व किसी अन्य व्यक्ति से बात करना भी बंद करवा दिया। जब कभी उसके पति का फोन आता तो उसकी सास उसे अपने पति से बात भी नहीं करने देती।**

वंदना एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की थी। उसके परिवार में धन का अभाव था लेकिन संस्कारों की कोई कमी नहीं थी। उसमें संस्कार कूट–कूट कर भरे हुए थे। संस्कारों की धनी वंदना स्कूल के सफर में प्रत्येक दिन सहपाठियों तथा अध्यापकों की संगति में अध्ययनरत रहते हुए दिन–प्रतिदिन, वर्ष तथा प्रतिवर्ष पूरा करके अगली कक्षा में पहुंचती रही। जीवन के इस सफर से होते हुए वह युवावस्था के अगले सफर में पदार्पण करती रही।

युवावस्था में पहुंचते ही उसके परिवार के सदस्यों ने उसे घर गृहस्थी की ओर मोड़ने हेतु प्रयास आरम्भ कर दिए। वंदना स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद बी. एड. की डिग्री प्राप्त कर अपने पांवों पर खड़ी होना चाहती थी। उसने अपने पारिवारिक सदस्यों को अपने विचारों से अवगत कराया और समझाया कि इससे वह अपने पैरों पर खड़ी होकर भविष्य में किसी भी कठिनाई का डटकर मुकाबला कर पायेगी।

लेकिन उसके माता–पिता ने उसे अपनी पारिवारिक समस्याओं से अवगत कराकर उसके विचारों पर विराम लगा दिया। उन्होंने उसे समझाया कि विवाह एक ऐसा बंधन है जो जीवन का सफर है और इस जीवन के सफर में हमसफर का साथ होना आवश्यक है। पति–पत्नी गृहस्थी में रथ के दो पहियों के समान है। अकेले एक पहिए का अपने पथ पर आगे बढ़ना असम्भव है।

परिवार के बड़े व्यक्तियों के प्रयास रंग लाए और उसके जीवन में घर गृहस्थी का नया अध्याय आरम्भ हो गया। बड़े बुजुर्गों और परिवार के अन्य सदस्यों की सहमति से विवाह सम्पन्न हो गया। वंदना गुणों की खान थी। उसने अपने व्यवहार व गुणों से परिवार के सभी सदस्यों का दिल जीतने की भरपूर कोशिश की। दाम्पत्य जीवन शुरुआती दौर में बहुत ही अच्छा रहा लेकिन विवाह के छः महीने बाद ही अचानक उसके हमसफर का स्थानान्तरण हो गया और उसे नौकरी के सिलसिले में बाहर जाना पड़ा।

इसी बात का फायदा उठाकर उसके माता–पिता व ननद ने वंदना को दहेज के लिये प्रताड़ित करना आरंभ कर दिया। उन्होंने उसे शारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार की असह्य यातनाएं दीं। उसे मजबूर किया कि वह अपने मायके जाये व वहां से दहेज की मोटी रकम लाये।

वंदना ने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की। उसने अपने पिता की पारिवारिक मजबूरी के बारे में अपने सास–ससुर को बताया लेकिन उसके सास–ससुर के कानों में जूं तक नहीं रेंगी। उन्होंने वंदना का घर से बाहर निकलना व किसी अन्य व्यक्ति से बात करना भी बंद करवा दिया। जब कभी उसके पति का फोन आता तो उसकी सास उसे अपने पति से बात भी नहीं करने देती।

वंदना दिन–प्रतिदिन कृशकाय व लालिमाहीन हो गई। उसके जीवन में नीरसता छा गई थी। वह अपने दिल की बात भी किसी को नहीं बता सकती थी। एक दिन वह रसोईघर में दिनचर्या का काम कर रही थी, तभी उसकी सास ने उस पर मिट्टी का तेल छिड़क दिया व ससुर ने आग लगा दी। उसके माता पिता व पति को सूचना दी गई कि रसोई घर में सिलेण्डर के फटने से वंदना की मृत्यु हो गई।

वंदना के मरणोपरांत उसके सास–ससुर ने बहुत सहजता व नाटकीय ढंग से उसे इस संसार से विदा कर दिया। उसके पति ने भी अपनी जीवन संगिनी का साथ होना यहीं तक समझा व अपने गम को दफन कर दिया।

एक दिन प्रातःकाल भ्रमण के समय उसके पड़ोसी ने संकोचवश उसके पति को उसके मां–बाप की करनी के बारे में बताया। उसे उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ परंतु फिर भी उसने बड़े ही ज्ञान व विवेक से अपने माता–पिता से सब कुछ उगलवा लिया। तब उसके पति ने सजल नेत्रों से यह बात गांठ बांध ली कि वह दहेज से अनुबंधित एवं प्रदर्शन से युक्त विवाह नहीं करेगा और न ही भाग लेगा। इस जघन्य अपराध के लिये उसने अपने माता–पिता के विरुद्व पुलिस चौकी में शिकायत दर्ज की व उन्हें दंड़ दिलवाया।

**सीमा नौटियाल**
बी. एन. पब्लिक स्कूल,
शाखा– एस. जी. एम
फरीदाबाद

**पिता की कांपती आवाज उनकी बेबसी स्पष्ट कर रही थी, '''अरे साहब ! बैंक मैनेजर क्या इस नैनो में बैठ कर जायेगा। यह तो आप भी समझ सकते हैं। इसमें रिश्ते के समय बात करने की कौन सी बात आ गई।'' सार्थक के पिता की कड़कती आवाज से विवाह–मंड़प में सन्नाटा–सा छा गया। सब कानाफूसी करने लगे। कोई वर पक्ष को उचित ठहरा रहा था, कोई अनुचित बता रहा था।**

''**बा**रात आ गई, बारात आ गई है।'' इन आवाजों के साथ ही बैंड की ध्वनि अर्चिका के कानों से टकराई। उसके गाल शर्म से गुलाबी हो गये। कानों से गर्मी सी निकलने लगी। दिल इस तरह उछलने लगा कि जैसे अभी निकल पड़ेगा।

वैशाली ने उछलते हुए बताया, '' जीजाजी बहुत स्मार्ट लग रहे हैं !'' अर्चिका कि नजरें झुक गई। मन अतीत की गलियों में विचरने लगा। मौसाजी इस रिश्ते का प्रस्ताव लेकर आये थे। सार्थक के घरवालों ने सुन्दर अर्चिका को देखते ही पसंद कर लिया था। अर्चिका माता–पिता की इकलौती संतान थी। अतः लेन देन की बात आमने सामने नहीं हुई थी। शायद मौसाजी ने वर पक्ष को समझा दिया था कि सब कुछ देर सवेर अर्चिका के ससुराल वालों का ही होना है।

रीति–रिवाज और लोकाचार के बाद विवाह की सबसे महत्वपूर्ण रस्म निभाने की बारी आयी। सप्तपदी की यह रस्म ही दो अनजान शरीर और आत्माओं को एक जीवन पथ का राही बना देती है। मंत्रोच्चार और कुछ रस्म के बाद पंडित जी ने सप्तपदी के लिये वर–वधू को खड़ा होने का निर्देश दिया परन्तु वर ने खड़े होने के स्थान पर अपने मामाजी को इशारे से बुलाया और कान में कुछ कहा।

मामाजी धीमी–सी हंसी के साथ बोले, ''समधी जी ! फेरे तो हो ही जायेंगे। सार्थक की एक छोटी–सी जिद है। जरा पहले इस पर विचार करलें।'' अर्चिका के कान सुन्न होने लगे। जो वह टी.वी. में देखती थी, कहानियों में पढ़ती थी, क्या आज उसके जीवन में भी घटित होने वाला था ? एक बार तो उसे लगा सारा विवाह मंडप गोल–गोल घूम रहा है। वह वेसुध सी पीछे की ओर लुढक गयी।

मामाजी के शब्द उसे दूर कुएं से आते सुनाई पड़ रहे थे। ''समधी जी, आपका इकलौता दामाद है। आपके बाद सब कुछ इसी का होना है, छोटी गाड़ी की जगह यदि बड़ी गाड़ी से इसकी जिद पूरी होती है तो क्या हर्ज है।'' ''परन्तु रिश्ता तय हाते समय तो दहेज की कोई बात ही नहीं हुई थी। मैं तो यह सब भी बेटी को उपहार रूप में दे रहा था।''

पिता की कांपती आवाज उनकी बेबसी स्पष्ट कर रही थी– 'अरे साहब ! बैंक मैनेजर क्या इस नैनो में बैठ कर जायेगा। यह तो आप भी समझ सकते हैं। इसमें रिश्ते के समय बात करने की कौन सी बात आ गई।'' सार्थक के पिता की कड़कती आवाज से विवाह–मंड़प में सन्नाटा सा छा गया। सब कानाफूसी करने लगे। कोई वर पक्ष को उचित ठहरा रहा था, कोई अनुचित बता रहा था।

तभी एक कोमल परन्तु दृढ़ स्वर विवाह मंड़प में गूंज उठा, '' आप अपनी बारात वापस ले जा सकते हैं। मुझे यह विवाह नहीं करना। ''यह स्वर अर्चिका का था। दृढ़ता से भरा उसका मुख सत्य की आभा से दमक रहा था।

''इतना अपमान, इतनी मुंहफट लड़की, अब तो इस विवाह का कोई प्रश्न नही उठता।'' लगभग आधे घंटे पूरा विवाह–स्थल खाली हो गया। कुछ करीबी रिश्तेदार व घर की औरतें इस तरह सिर झुकाए बैठी थी मानो वहां किसी की मातमपुर्सी हो रही हो।

धीर–धीरे एक वर्ष बीत गया। अर्चिका ने अपने आप को सभांल लिया। परंतु मां उसी दिन से बिस्तर से लग गई। बहुत दवा हुई, अनेक डॉक्टरों ने देखा परंतु बेटी की चिंता मां को घुन की तरह खाए जा रही थी। पिता व बेटी मां की बीमारी से चिंतित थे। पड़ोस की सुधा आंटी की सलाह पर मां को अणुव्रत न्यास द्वारा संचालित एक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र ले गये। डाक्टरों को जब महीनों तक कुछ समझ नहीं आया तो उन्होंने मनोचिकित्सक से सलाह लेने का परामर्श दिया।

पिता जी विद्यालय से अवकाश लेकर मां को मनोचिकित्सक के पास ले गये। 'सुधीर मोरे' नामपट्टिका देखकर पिता जी को यह नाम जाना पहचाना सा लगा। दिमाग पर बहुत जोर डालने पर भी याद नही आया कि ये साहब कौन हैं, अन्दर गये...चेहरा ध्यान से देखा परन्तु.....।

ड़ॉ॰ साहब ने केस हिस्ट्री के लिये फाइल खोली, नाम पढ़ते ही चौंके। उठे मां–पिता जी के पैर छुआ और बताया कि दसवीं कक्षा में सा0 ज्ञान विषय पढ़ाया था। इस विषय में मेरी बिल्कुल रुचि नहीं थी परन्तु जब दसवीं कक्षा में विनायक जी के पास यह विषय आया तो मानो चमत्कार हो गया। मां की तरफ देखकर ड़ॉ. साहब बोले, ''माता जी, मुझे इस विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया था। वह देखिए उस समय का फोटो। '' दीवार पर लगे फोटो को दिखाते हुए ड़ॉ. साहब अतीत की यादों में खो गये।

मां की केस हिस्ट्री पढ़कर व मां से सारी बातें जानकर सुधीर की आंखें भर आई। उसे याद आया वह दिन जब विद्यालय में हुई एक नाटिका के बाद विनायक सर ने अपने सभी छात्रों से जीवन में दहेज न लेने की शपथ दिलवाई थी। आज वही सर उसी दहेज रूपी राक्षस के हाथों पराजित उसके सामने बैठे अपनी बेबसी पर आंसू बहा रहे हैं।

मां तो कुछ कहने की स्थिति में ही नहीं थी। अपने जीवन के नीति नियामक, ऐसे गुरु की दुर्दशा ने सुधीर के मन को विचलित कर दिया परन्तु तभी एक बिजली–सी उसके दिमाग में कौंधी, वह कुर्सी से उठा, मां व गुरु के चरणों में प्रणाम कर बोला, ''मां पिताजी ! क्या मैं आपकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता हूं। हां पिताजी, आपके सिद्वान्त किताबी नहीं हैं। उन्हें इस दुनिया में व्यवहार में प्रयोग में लाया जा सकता है। मैं आपकी बेटी से विवाह कर दुनिया को बताना चाहता हूं कि विवाह के इस पवित्र बंधन को दहेज का नाम लेकर अपवित्र मत करो।...और मां की सूनी आंखें पूरे एक वर्ष बाद आज खुशी से चमक उठी।

**नीलम वर्मा**
प्रियदर्शिनी सर्वोदय कन्या विद्यालय
फतेहपुर बेरी, दिल्ली

**नीरजा सुदर थी पर पिता के पास धन नही था। उन्होने अभय का सामाजिक मान–मयादा के बारे मे खूब समझाया मगर वह नहीं माना। आखिर उसकी जिद्द के सामने उन्हें झुकना पड़ा। एक सादे से समारोह में वे नीरजा को बहू बनाकर ले आये। बड़ी जेठानियों के तानों ने बहू का स्वागत किया। वह संस्कारवान होने के कारण शांत रही और अपने घर में कदम रखा। इस घर में, परिवार के दिल में जगह बनाना उसके लिऐ चुनौती बन गया।**

सूरज प्रकाश सचिवालय में क्लर्क का काम करता था और उसकी पत्नी सुरीला घर पर ही ट्यूशन पढ़ाती थी। दोनों मिलजुल कर जो भी कुछ कमाते, उससे अपने परिवार का पालन पोषण बड़े प्यार से करते। न तो घर में कोई अभाव था और न ही बहुत सम्पन्नता। उनके परिवार में चार बेटे, बूढ़े माता–पिता व एक बहन स्नेहा थी।

सूरज प्रकाश ने थोड़ा–थोड़ा करके कुछ धन परिवार खर्च से बचाया और अपनी भविष्य निधि से कुछ पैसा निकलवा कर अपनी बहन स्नेहा का विवाह एक योग्य लड़का ढूंढ़ कर कर दिया। जीवन अब निश्चिंत व सुचारू रूप से ठीकठाक चल रहा था। दोनों ही बड़े शांत व धार्मिक विचारों वाले थे। सुरीला भी अपने सास–ससुर के मान–सम्मान का पूरा ध्यान रखती व खूब सेवा करती। ऐसे ही संस्कार उन्होंने अपने बच्चों को भी दिये।

समय के साथ–साथ बच्चे बड़े हो गये और बड़ा बेटा अमर एक निजी कम्पनी में मैनेजर लग गया। दूसरा बेटा अक्षय बीमा कम्पनी में एजेन्ट बन गया। शेष दोनों अभय और अमन अभी पढ़ ही रहे थे। अमर की नौकरी भी अच्छी थी व देखने में भी आकर्षक युवक था तो अच्छे–अच्छे रिश्ते आने लगे। बेशक सूरज प्रकाश के पास कोई कमी नहीं थी फिर भी समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाने का लालच घर कर गया था। वे अमर के लिये अमीर घराने की लड़की चाहने लगे ताकि मौहल्ले भर में उनकी नाक ऊंची हो।

सौभाग्य से एक धनी व्यापारी की लड़की रानी से उसका रिश्ता तय हो गया और विवाह बड़े धूमधाम से हुआ। बहू दहेज में कार सहित घर का सभी सामान लाई। मौहल्ले भर में उनका सम्मान काफी बढ़ गया तथा सब सूरज प्रकाश व सुरीला को भाग्य का धनी बताने लगे। वे दोनों भी फूले नहीं समा रहे थे। सुरीला ने इतना दहेज लाने वाली बहू को सिर पर बिठा लिया।

कुछ समय यूं ही हंसी–खुशी व सैर–सपाटे में निकल गया। इसी दौरान रानी के पांव भारी हो गये। सुरीला घर के सारे काम अकेले ही करती रहती। यदि वह रानी को कुछ काम कह भी देती तो वह तबीयत का बहाना बनाकर उसे टाल देती। बेचारी मन मसोस कर आखिरकार खुद ही सब कुछ संभालती रहती। रानी ने बेटी को जन्म देकर मानो घर के सारे कामों से पूरी तरह छुटकारा ही पा लिया।

अब अक्षय के भी रिश्ते आने लगे। पहले की तरह ही उन्होंने एक सम्पन्न घर की लड़की सुमेधा को अपनी दूसरी बहू बना लिया। बहू क्या थी, वास्तव में सुमेर का खजाना थी। रोज–रोज उसके परिवार

पास महंगे उपहार लेकर मिलने जाते। शुरू–शुरू में तो सुरीला को ये सब अच्छा लगता लेकिन कुछ ही दिनों में देखा कि इस से घर का वातावरण तनावपूर्ण बनता जा रहा है और सुख–शान्ति भंग हो रही है तो उसे यह बुरा लगता।

उसने बातों–बातों में बहू को समझाने की कोशिश की तो सुमेधा तपाक से बोली, ''मां! क्या बेसिर पैर की बातें कर रही हो ? मैं अपने मां–बाप की इकलौती लाड़ली बेटी हूं, फिर बेटी के घर मां–बाप का न आना–जाना तो पिछड़ेपन की निशानी है। आप क्या जानें ये बातें ! हम इन्हें नहीं मानते।'' बेचारी मां चुप हो गई।

सुरीला जब कभी उसे किसी काम को कहती तो भी उत्तर मिलता, ''मैंने तो कभी घर का काम नहीं किया। हमारे घर तो सारे काम नौकर करते हैं। अगर आपकी हैसियत नहीं तो मैं अपने पापा से कहकर यहां भी नौकर लगवा देती हूं।'' सुमेधा का यह उत्तर उसका कलेजा छलनी कर गया।

वह सोचने लगी मैंने कभी अपने सास–ससुर का ऐसा अपमान नहीं किया और न मुझमें सहने की ताकत। रोज के क्लेश से मुक्ति पाना बहुत जरूरी हो गया। अंत में वही हुआ। सुमेधा और रानी दोनों ही अपने–अपने मायके की ओर घर लेकर रहने लगीं। बेटों से मिलना भी मुश्किल हो गया। मौहल्ले भर में भी बड़ी हंसी उड़ी मगर शेष जिम्मेदारियां तो निभानी ही थीं, सो जीवन फिर भी चलता रहा।

अभय अपनी पढ़ाई पूरी करके इंजीनियर बन गया और एक अच्छी कंपनी में नौकरी भी मिल गई। उसकी सहपाठिन नीरजा भी उसी कंपनी में काम कर रही थी। वे एक दूसरे को पसंद करते थे।

नीरजा सुंदर थी पर पिता के पास धन नहीं था। उन्होंने अभय को सामाजिक मान–मर्यादा के बारे में खूब समझाया मगर वह नहीं माना। आखिर उसकी जिद्द के सामने उन्हें झुकना पड़ा। एक सादे से समारोह में वे नीरजा को बहू बनाकर ले आये। बड़ी जेठानियों के तानों ने बहू का 'स्वागत' किया। वह संस्कारवान होने के कारण शांत रही और अपने घर में कदम रखा। इस घर में, परिवार के दिल में जगह बनाना उसके लिए चुनौती बन गया।

नीरजा अपने साथ संस्कारों की सच्ची दौलत लाई थी, इसलिये उसने बड़ी सहजता से सारी स्थितियों व जिम्मेदारियों को समझ लिया। इधर घर में वह संस्कारी बहू और ऑफिस में कुशल कर्मचारी की तरह सभी कार्यों को कुशलतापूर्वक देखती। वह हमेशा सन्तुलित व आदर सहित व्यवहार करती। वह ध्यान रखती कि कभी उसके सास–ससुर व परिवार के बड़े व छोटे सदस्यों को किसी प्रकार की ठेस न पहुंचे। सबकी हर छोटी–बड़ी जरूरतों को बड़े ध्यान व प्यार से पूरा करती।

घर में सुख की गंगा बहने लगी। ऐसी संस्कारी बहू पाकर दोनों समझ गये कि वास्तव में दहेज संस्कार होते हैं। इहीं से सजा–संवरा घर स्वर्ग के समान खुशियों का धाम बन जाता है।

दहेज लेकर आए और उनके घर व शेष जीवन को सुख व खुशियां से भर दे।

**ड़ॉ. भामा अग्रवाल**
भिवानी पब्लिक स्कूल,
भिवानी, हरियाणा

**समय बीतता गया और मैं एक विशाल वृक्ष बन गया व हरे–भरे पत्तों से लद गया। हरे–भरे पत्तों में छोटी–छोटी निबोरियां भी लगती थीं। बच्चे कभी–कभी इन्हें चूसते। बरसात के मौसम में लड़कियां मेरी डालियों पर झूला झूलती हैं। कुछ लोग मच्छरों, कीड़ों को मारने के लिये मेरी पत्तियां तोड़कर चले जाते थे। छुट्टी के दिनों में बच्चे मेरी छाया में तरह–तरह के खेल खेलते हैं।**

दस वर्ष पहले की बात है। अपने शोध कार्य के सिलसिले में मैं दिल्ली जा रही थी। बस यात्रा के दौरान जब मन और मस्तिष्क बोझिल हो गये, स्फूर्ति व उमंग के संचार हेतु एवं ताजी हवा का आंनद लेने के लिये मैं बस से उतरी। मेरे साथ कुछ अन्य यात्री भी उतरे।

अचानक मैंने देखा कुछ लोग वृक्षों की अंधाधुंध कटाई कर रहे थे। मुझे यह साधारण सी घटना लगी क्योंकि बचपन से ही मुझमें वृक्षों के प्रति कोई खास लगाव नहीं था। स्कूल में पढ़ते समय मेरे अन्य मित्रों को पेड़–पौधे लगाने, पौधों को पानी देने इत्यादि में बहुत रुचि थी लेकिन मैं इन गतिविधियों को अनदेखा किया करती और पढ़ाई के विषय में अधिक रुचि लेती थी।

यही नहीं, अपने गांव जाते समय भी मैंने वहां के देहाती लोगों को अक्सर वृक्ष काटते देखा था। इसके अलावा खाना बनाने हेतु आवश्यक लकड़ी बटोरने के लिये मैं स्वयं वन में जाकर वृक्षों की लकड़ियां काटकर घर ले जाया करती थी।

मेरे साथ जो अन्य यात्री थे, उन में से कुछ यात्रियों ने इसका विरोध किया और उन लोगों को रोका। लोगों ने बताया कि वे किसी कम्पनी के मजदूर हैं और कम्पनी ने वृक्षों को काटने का ठेका लिया है।

उन्होंने यह भी बताया कि वे केवल अपने मालिकों के आदेश का पालन कर रहे थे। उनकी विविशता व लाचारी जानकर हम सभी बस की ओर मुड़े। सभी बस में चढ़ गये लेकिन मैं जैसे ही बस में चढ़ने के लिये आगे बढ़ी, मुझे एक रुदन सुनाई पड़ा।

उस ओर देखने पर मुझे एक नीम का पेड़ दिखाई दिया। करुणा भरे स्वर में उसने मुझसे उसके और उसके अन्य साथियों के प्राणों की रक्षा करने की याचना की। रोते–सिसकते उसने मुझसे कहा,''गत पच्चीस वर्षों में इस वन के कोने में खड़ा हूं, मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब मुझे वनोत्सव के दिन यहां लगाया गया था। उन दिनों मेरी आयु वर्ष भर की रही होगी। दिन की तेज धूप से सताये जानवर मेरे नीचे आराम करते। कभी–कभी छोटे पिल्ले मिट्टी कुरेदने लगते तो मेरी जड़ों में तेज दर्द होता और मैं कराहने लगता।

समय बीतता गया और मैं एक विशाल वृक्ष बन गया और हरे–भरे पत्तों से लद गया। हरे–भरे पत्तों में छोटी–छोटी निवोरियां भी लगती थीं। बच्चे कभी–कभी इन्हें चूसते। बरसात के मौसम में लड़कियां मेरी डालियों पर झूला झूलती हैं। कुछ लोग मच्छरों, कीड़ों को मारने के लिये मेरी पत्तियां तोड़कर चले जाते थे। छुट्टी के दिनों में बच्चे मेरी छाया में तरह–तरह के खेल खेलते हैं।

बरसात के दिनों में लड़कियां मेरी डालियों पर झूला झूलती हैं। यही नहीं पक्षी मुझ पर घोंसले बनाते थे और वे अपने बच्चों को मेरी देख–रेख में छोड़कर चले जाते थे। इसके अलावा मैं हवा को स्वच्छ करने में व्यस्त रहता हूं। मेरी इच्छा है मैं सदा समाज के काम आऊं।

लेकिन क्या इस समाज ने कभी मेरे या मेरे साथियों के महत्व जाना है ? पेड़ से हमें लकड़ी, फूल पत्ती खाद्य पदार्थ गोंद तथा अन्य सामान प्राप्त होता हैं जिनके बिना जीवन का रूप कुछ और होता। वृक्ष और पर्यावरण का गहरा संबंध होता है। प्रकृति का संतुलन बनाये रखने के लिये धरती के 33 प्रतिशत भाग पर वृक्षों का होना आवश्यक है। भारत में आज केवल 23 प्रतिशत ही वन हैं। ऐसा कहकर नीम के वृक्ष ने बड़ी दयनीयता से मुझसे अनुरोध करते हुए कहा, '' मेरे और मेरे अन्य साथियों की रक्षा कीजिये। धरती को मरु–भूमि होने से बचाइये।''

यह सुनकर मेरी आंखों में आंसू आ गये। मैंने उन मजदूरों को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन कम्पनी के होने के कारण वे वृक्ष काटने के लिए विवश थे।

उस दिन वृक्षों के कटने एवं वन के नष्ट होने के कारण मैं बहुत बेचैन हुई। सबसे अधिक दुख मुझे इस बात का हो रहा है कि मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर पाई। उस दिन की घटना के बाद मैंने निश्चय किया कि भविष्य में न ही कभी स्वयं वृक्ष काटूंगी और न किसी को काटने दूंगी।

मैंने निर्णय लिया कि वृक्ष कटवाने वाले के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करूंगी और उन्हें सजा दिलवाऊंगी तथा अथक प्रयास करूंगी कि हमारे पर्यावरण का संतुलन न बिगड़े और प्रदूषण न फैले।

**के. चांदनी महेश**
डी. ए. वी. इन्टरनेशनल स्कूल,
नई मुम्बई, महाराष्ट्र

**शराबी लोगों को पता ही नहीं कि आने वाला समय कितना खतरनाक होगा। शराबी लोग अपने घर में जाकर लड़ाई–झगड़ा करके तथा अपने बीवी–बच्चों के साथ गलत व्यवहार करते थे। ऐसी स्थिति देखकर मेरा मन हमेशा चिंतित था कि अगर मंगलू जौहरी जीत गया तो गजब हो जायेगा।**

भारत में प्रत्येक पांच वर्ष में चुनाव की स्थिति आती है। मैं बचपन से देखता आ रहा हूं। चुनाव में मेरे क्षेत्र और गांव में जो नेताओं की नारेबाजी तथा जयकार होती थी, उन लोगों का अपने स्वार्थ के लिये आपस में लड़ना, शोर मचाना तथा शराब पीकर हल्ला करना एक अलग बात को प्रकट करता है मानो प्रत्येक पांच वर्ष के बाद चुनाव नहीं बल्की मेला आ गया हो।

उस भोली–भाली जनता को यह पता ही नहीं कि उसका आने वाला भविष्य अंधकारमय हो जायेगा या उज्ज्वल होगा क्योंकि अपने समर्थकों को शराब पिलाना तथा लड़ाई के लिये समर्थन देना केवल भ्रष्ट नेता ही करता है। अगर भ्रष्ट नेता के हाथों में उस जनता का नेतृत्व चला जायेगा तो वही जनता कुछ समय बाद अपने किये पर पछतावा करेगी।

चुनाव प्रकिया और उसमें चल रहे भ्रष्ट आचरण का ब्यौरा देना मेरी लेखनी के बाहर की बात है। चुनाव प्रकिया के दौरान सूरज निकलने से लेकर सूर्यास्त तक एक नेता और उसी की जय–जयकार करते लोगों को मैं बहुत व्यस्त देखता हूं। मेरा अनुभव रहा है जो व्यक्ति कभी काम नहीं करते वे चुनाव के समय में पूरी जी–जान से मेहनत करते है ऐसा केवल वे लोग चन्द खुशियों के खातिर करते हैं।

ऐसी ही एक स्थिति मेरे सुदूरवर्ती क्षेत्र उत्तरांचल की है। मैंने देखा लोग चुनाव में मस्त रहते थे। एक क्षेत्रीय दल के नेता, जिसका नाम मंगलू जौहरी था, वह दसवीं फेल था। उसके पास खानदानी पैसा था। बुजुर्गों द्वारा छोड़ी गयी जमीन को बेचकर मंगलू जौहरी चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहा था।

मंगलू जौहरी के सिर पर नेता बनने का भूत सवार था। उसको देखकर मैं भौंचक रह गया क्योंकि उसने अपने जेवर–गहने भी बेच दिये थे तथा पैसा पानी की तरह बहा दिया था। अपने समर्थकों को खुश करने के लिए वह तत्पर था। वह अपने समर्थकों की जुबान पर अपनी जय–जयकार सुनकर बहुत प्रसन्न हो जाता था तथा रोज शाम को अपने समर्थकों को शराब पिलाकर अपनी जय–जयकार करवाता था।

शराबी लोगों को पता ही नहीं कि आने वाला समय कितना खतरनाक होगा। शराबी लोग अपने घर में जाकर लड़ाई–झगड़ा करके तथा अपने बीवी–बच्चों के साथ गलत व्यवहार करते थे। ऐसी स्थिति देखकर मेरा मन हमेशा चिंतित था कि अगर मंगलू जौहरी जीत गया तो गजब हो जायेगा।

एक अन्य उम्मीदवार भी चुनाव मैदान में आया हुआ था जिसका नाम एडवोकेट भानूप्रताप था। वह एम.ए.एल.एल.बी.था। उसके पास चुनाव प्रकिया का बहुत अनुभव था। भानूप्रताप सामान्य परिवार से था। भानूप्रताप ने शिक्षा बहुत मेहनत के बल पर प्राप्त की थी।

मंगलू के जैसा पुस्तैनी पैसा जेवरात इत्यादि उसके पास न थे जिससे वह अपने समर्थकों को शराब पिलाकर खुश कर सके। दुःख इस बात का था कि लोगों को अच्छे बुरे का ज्ञान ही नहीं था। क्षेत्र के लोग मंगलू जौहरी की जय–जयकार करने में मस्त थे। उनको भानू वकील की योग्यता से कुछ लेना–देना नहीं था। अपने आने वाले भविष्य की कोई चिंता ही नहीं थी।

मैंने देखा कुछ पढ़े–लिखे लोग भानू वकील की तरफ से प्रचार–प्रसार कर रहे थे।
कुछ शराबी लोग गालियां देते हुये उनके सामने आते हुये भानू वकील व उसके समर्थकों को भला बुरा कहते थे। देखते ही देखते उनमें हाथापाई शुरू हो जाती।

जो लोग आपस में लड़ रहे थे उनमें से एक शराबी बोला, ''मैंने तो मंगलू को ही वोट देना है क्योंकि उसने मझे खिलाया पिलाया है।''

पढ़ा–लिखा व्यक्ति बोला, ''अरे भैया जी आपको पता नहीं आप बहुत बड़ी भूल कर रहें हैं।''

शराबी ने लड़खड़ाते हुए कहा, ''अरे भूल! भूल तो तुम मूर्ख लोग कर रहे हो जो भानू वकील के पीछे लगे हो।''

एक शिक्षित व्यक्ति बोला, ''अरे भानू वकील पढ़ा–लिखा है और मंगलू दसवीं फेल है।''

शराबी उखड़ गया, बोला, ''पढ़े–लिखे होने से कुछ नहीं होता, जो होता है, पैसे से होता है।''

ऐसी बातें वे शिक्षित लोग उन शराबियों को बता रहे थे जो व्यर्थ था : क्योंकि वे लोग तो कुछ सुनने को तैयार ही नहीं थे।

मैंने देखा छोटे–छोटे बच्चे भी स्कूल से आकर मंगलू की जय बोल रहे थे तथा उन शराबियों की नकल करके आपस में लड़ रहे थे। गांव की स्त्रियां भी आपस में बात करती थीं। आपस में गुट बाजी चलती थी। रोजाना वह एक–दूसरे की निंदा करतीं थीं। इस प्रकिया को मैं कई दिन तक देखता रहा लेकिन मैं बहुत छोटा था। इनके बारे में ज्यादा नही जानता था।

अन्ततः कई दिनों की आपाधापी व मेहनत के बाद वह समय निकट आया जिस दिन मतदान होना था। सभी बड़े जोर–शोर से नारों के साथ एक गांव से दूसरे क्षेगांव, एक क्षेत्र से दसरे क्षेत्र तक जा रहे थे। बैनर–पोस्टर लगाये जा रहे थे।

रात–रात भर लम्बी–लम्बी सभाएं होती तथा लोगों की भूमिका आवश्यक थी। उनके आगमन का ध्यान रखा जा रहा था। वोट डालने के दिन नेताजी सफेद कपड़े पहनकर खड़े थे तथा सभी को नमस्कार किया जा रहा था क्योंकि एक–एक वोट उनके लिए जरूरी था। परिणाम घोषित होने से पूर्व दोनो नेताओं के चेहरे पर चिंता की झलक साफ दिखाई दे रही थी।

तभी अचानक दिन के बारह बजे परिणाम आंखो के सामने था। इस तरह इस चुनाव प्रकिया का अन्त हुआ और भानू वकील की जीत हुई। मंगलू बेचारा पछतावे की आग में जल रहा था। अब उसके पास न रुपये थे, न गहने न जेवर और न जमीन–जायदाद ही थी। अब उसके पीछे जय जयकार करने वाले भी व्यक्ति नहीं थे।

यह सत्य है दुनिया में बाज का बाज के साथ, बटेर का बटेर के साथ संबन्ध होता ही है। मंगलू का साथ क्षण भंगुर था। अब वह सोच रहा था कि मैंने बड़ी भूल की। सब कुछ दांव पर लगाकर चुनाव प्रकिया में उतरा। अब उसे इस बात का भली–भांति अन्दाजा हो गया था कि जीत सत्य–अहिंसा और शिक्षा की ही होती है।

मंगलू को पछतावे की आग में जलता हुआ देखकर भली–भांति अन्दाजा हो गया था कि जनता जिसकी जय–जयकार करती है, यह जरूरी नहीं कि वह उसी के साथ हो अनैतिक आचरण शिक्षा के सामने घुटने टेक कर खड़ा था। मंगलू ने भी मन ही मन यह पक्का निर्णय कर लिया की चाहे जो कुछ भी हो वह भविष्य में चुनाव में अनैतिक आचरण नहीं अपनाएगा।

**रमेश चन्द्र**
अशोक मैमोरियल पब्लिक स्कूल,
फरीदाबाद हरियाणा

# बरसात का वो दिन

**तभी उस लड़की ने कहा, ''आपके हाथों में मेरा छाता है और यह रही आपकी फाइल, पर मुझे उन लोगों के साथ न तो खड़ा रहना है और न मदद करनी जो अपने शरीर के साथ–साथ अपने परिवार को तोड़ने का कार्य करते हैं और समाज में अपनी सम्पन्नता का परिचय सिगरेट और गुटखा खाकर देते हैं।''**

**बा**त उन दिनों की है जब मैं कक्षा बारहवीं का छात्र था। पारिवारिक रूप से सम्पन्न मैं एक 17 साल का युवक था। प्रायः मैं भौतिक विज्ञान और अंग्रेजी का ट्यूशन पढ़ने 3 से सायं 6 बजे तक जाया करता था। नई उम्र की उमंगों एवं तरंगों में मैं कभी उलझता और कभी खुद में खोया रहता था।

एक शाम मैं प्रतिदिन की भांति विद्यालय से सीधे कोचिंग जा रहा था। अचानक ठण्डी हवा के झोकों ने मुझे घेर लिया और बारिश की बूंदों ने मुझे भिगो दिया। हाथ में मेरे भौतिक विज्ञान के प्रैक्टिकल की बोर्ड फाइल थी, जिसकी प्रयोगात्मक परीक्षा आने वाले सप्ताह में थी।

अब मैं चिंतित भी था कि फाइल कैसे बचाऊं और दूसरा बारिश में भीग कर अपने चंचल मन को विचलित होने से रोक दूं। बस इसी दुविधा में किसी ओट की तलाश करने लगा, तभी मुझे लगा कि नीम के पेड़ की झुरमुट में कोई छाते के नीचे मुंह छिपाये खड़ा है। उसके छोटे बालों से पानी की बूंदें टपक रही थीं पर चेहरा छाते के अंदर ढका था।

खुद में सिमटी, सफेद चूड़ी पायजामी सूट में वो लड़की सामान्य कदकाठी की चश्मा लगाने वाली पढ़ाकू तरह की समझ में मुझे आ रही थी। मुझे उसका चेहरा देखने की ललक थी। मैंने तपाक से उस लड़की से पूछा, '' क्या आप मेरी इस फाइल को अपने छाते के नीचे रखकर पानी से बचा सकती हैं ? मेरा आने वाले सोमवार को प्रैक्टिकल है।''

लड़की ने बड़ी मासूमियत से फाइल मुझसे लेकर अपनी बांहों में ले ली। अभी भी मैं उसका चेहरा देखने को मचल रहा था। फिर मैने सोचा चलो जाने दो, फाइल तो बच गई। मैं बेफ़िक होकर खड़ा हुआ और अपनी जेब से गुटखा (मादक पदार्थ) पैकेट निकाला और चर्र से फाड़ा व मुंह में डाला।

जैसे ही गुटखा खाकर एक पिचकारी मारी, इस हरकत को देख अचानक वो लड़की बोली, ''सुनिये, क्या आप मेरा छाता पकड़ सकते हैं।''

मैने सहर्ष हां कह दिया क्योंकि मैं उसका चेहरा देखना चाहता था। वह लड़की सांवले रंग की सामान्य सी लड़की थी, पर उसकी आंखें और मुस्कुराहट किसी को भी जिन्दगी दे सकती थी। बस उसकी नजरों में जैसे जीना चाहता था।

[illegible]
लोगों के साथ न तो खड़ा रहना है और न मदद करनी जो अपने शरीर के साथ–साथ अपने परिवार को तोड़ने का कार्य करते हैं और समाज में अपनी सम्पन्नता का परिचय सिगरेट और गुटखा खाकर देते हैं।''

मैं इन सारी बातों को सुनता रहा और उसकी आंखों में झांकता रहा, पर वह लड़की बारिश की बूंदों में भीगती हुई कहां चली गयी, कुछ पता न चला।

उसका छाता और बारिश की बौछारें मेरे रोम रोम को छलनी कर गई। एक सप्ताह तक मैं उसे ढूंढता रहा पर वो कहीं नहीं मिली।फिर मेरा प्रैक्टिकल और परीक्षायें आरम्भ हो गईं, उसकी स्मृति मेरे मन में दिन–प्रतिदिन और गहरी होती गई।

अब मैं एक प्रसिद्ध इंगलिश मीडियम स्कूल में अध्यापक हूं। आज जिन्दगी के 15 वर्ष बीत चुके हैं, उस घटना से मेरा मन अभी भी व्याकुल है।

तभी नीचे से प्रधानाचार्य का बुलावा आया कि विद्यालय में कोई नई अध्यापिका आने वाली है। उसके साक्षात्कार में मुझे मैम के साथ बैठना है।

मैं नीचे साक्षात्कार कक्ष में जा पहुंचा अन्य सदस्य भी आ गये। अचानक उस अध्यापिका का उस कक्ष में प्रवेश हुआ। उसने अपने जवाबों से सबका मुंह बंद कर दिया। अचानक उसकी नजर मेरे पर रुकी और फिर पलकों के नीचे छिप गई।

अगला दिन रविवार का था। सोमवार से उसकी ज्वानिंग थी। मैंने सोच रखा था की सोमवार से मैं भी गुटखा खाना शुरू कर दूंगा क्योकिं जिन्दगी के 15 वर्ष इस लड़की के इंतजार में गुजारे थे बिना गुटखा खाए। उसका अब मिलना नामुमकिन था परिवार वाले विवाह के लिये भी जोर डाल रहे थे।

आज सोमवार का दिन था। ठण्डी हवा चारों तरफ बह रही थी। ऐसा लग रहा था कि आज फिर बारिश होगी.... .......

आज मैं विद्यालय जल्दी पहुंचा था। वहां जाते ही जोर से बारिश होने लगी। मैं अभी पेड़ की ओट तक पहुंच पाया था, तभी ऐसा लगा कि कोई और भी पेड़ की ओट ले रहा है। मैंने पलट कर देखा तो वो मैडम मिनी थी। मैं तो आज निश्चित करके आया था कि गुटखा खाकर ही रहूंगा।

मैंने जेब से गुटखा निकाला और चर्र से फाड़ा पर मुंह में नहीं डाल पाया क्योंकि मैडम ने मुझे रोकते हुए कहा, ''जिन्दगी के इतने साल जब गुटखा नहीं खाया तो आज क्यों? तुम्हे मुझ पर यकीन न हो तो क्या हुआ, मुझे तुम पर यकीन था, इसलिये जिन्दगी के 15 साल मैंने भी तुम्हारी आदत छोड़ने का इंतजार किया है, पर आप तो उसे एक पल में क्यों तोड़ रहे हैं ?''

मैंने जब मिनी की आंखों में देखा तो सच में उस बारिश के एक दिन ने मेरी जिन्दगी बदल दी और मुझे मादक पदार्थों के सेवन से बचा लिया। आज मैं और मिनी एक साथ हैं और समाज को मादक पदार्थों के सेवन के विरुद्ध जागरूक करने हेतु स्वैच्छिक संगठन बनाकर निःशुल्क रूप से काम कर रहे हैं। ये थी हमारी कहानी, कैसी लगी आपको?.....

**पूर्ति गुप्ता**
तथागत ज्ञानस्थली सीनियर सैकेंडरी स्कूल
बांदा रोड, अतर्रा,बांदा उ0 प्र0

**स्कूल के मुख्य अध्यापक ने भी श्वेता के पिता से शिकायत की थी कि स्कूल श्वेता की ऐसी हरकतें सहन नहीं करेगा। स्कूल में हिंसक प्रवृत्ति को सहन नहीं किया जायेगा। श्वेता अपनी सहपाठियों से अजीबो–गरीब हरकत करती थी, मारपीट तक की नौबत आ जाती थी। सभी लड़कियां उससे नाराज रहने लगी थीं लेकिन कोई भी श्वेता के अन्दर के दुःख को नहीं समझ पा रहा था।**

**मां** की मृत्यु के बाद वह पूरी तरह से अकेली थी। उसका मन घर में अकेले नहीं लगता था। जब भी वह पिता जी को देखती तो सोचती कि वह परमात्मा की नजरों से छिपाकर उसके पास से अपनी मां को वापस ले आए।

मां के जाने के बाद घर की सारी खुशियां समाप्त हो गई थीं। मां की आवाज उसके कानों में गूंजती रहती। उसकी आंखों से आंसू निकल आते। वह पिता जी के सामने रोती नहीं थी। वह नहीं चाहती थी कि पिता जी उसको रोते देखकर और दुखी हों।

मां भी ऐसी जिसने कभी श्वेता को गरीबी का अहसास नहीं होने दिया था। श्वेता की जान में मां की जान बसती थी। वक्त को शायद कुछ और ही मंजूर था। मां की मृत्यु के बाद श्वेता एकदम चिड़चिडी हो गई थी। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। वह बात–बात पर किसी से भी झगड़ा कर लेती थी। उसके पिता समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करे ?

स्कूल के मुख्य अध्यापक ने भी श्वेता के पिता से शिकायत की थी कि स्कूल श्वेता की ऐसी हरकतें सहन नहीं करेगा। स्कूल में हिंसक प्रवृत्ति को सहन नहीं किया जायेगा। श्वेता अपनी सहपाठियों से अजीबो–गरीब हरकत करती थी, मारपीट तक की नौबत आ जाती थी। सभी लड़कियां उससे नाराज रहने लगी थीं लेकिन कोई भी श्वेता के अन्दर के दुःख को नहीं समझ पा रहा था।

उसे तो बस अपनी मां चाहिये थी चाहे इसके लिये उसे भगवान से भी क्यों न लड़ना पड़े। वह अपने उग्र स्वभाव के कारण सबसे दूर होती गई और सबके प्यार से वंचित रहने लगी। घर में ऐसे कार्यक्रमों को देखने लगी जो उसकी उम्र के लिहाज से  ठीक नहीं थे लेकिन उसे आनंद आने लगा।

सोनिया उसकी सबसे अच्छी मित्र थी। वह जैन धर्म से संबंध रखती थी। सोनिया को साध्वी जी के प्रवचन सुनने जाना था तो श्वेता के पिता से बोल कर गयी थी की वे श्वेता को कल उसके घर अवश्य भेज दें। श्वेता जाना नहीं चाहती थी लेकिन सोनिया को वह नाराज नहीं करना चाहती थी।

अगले दिन श्वेता सोनिया के साथ साध्वीश्री जी का प्रवचन सुनने गई। वह साध्वीश्री जी के चेहरे की शांति और चमक देखकर हतप्रभ रह गई। उनके प्रवचन लोग बड़ी शांति से सुन रहे थे।

साध्वी जी ने जब विद्यार्थी अणुव्रत के नियम बताने शुरू किये तो श्वेता के मन–मस्तिष्क पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा। साध्वी जी प्रवचन कर रही थी कि विद्यार्थी अणुव्रत के नियमों के अनुसार हमें चाहिए कि हम प्रण करें कि अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे, अश्लील साहित्य नहीं पढ़ेंगे। हिंसात्मक और तोड़–फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लेंगे। हिंसक प्रवृत्ति का त्याग करेंगे।

श्वेता को साध्वी जी के प्रवचन सुनकर मां का प्यार और ममता साध्वी जी के मुख पर नजर आने लगा। इतने प्यार और गहराई से मां ही कोई बात समझा सकती है। प्रवचन के बाद घर लौट कर श्वेता रात को जब पिता जी से बात कर रही थी तो उसके पिता जी उसके चेहरे को एकटक देख रहे थे।

उन्हे आज श्वेता के चेहरे पर वैसा क्रोध और प्रभाव नहीं दिखाई पड़ रहा था जिसकी चिंता उन्हे खाए जा रही थी। इतने बदलाव की वजह जानकर वे साध्वी जी के आगे मन–ही–मन नतमस्तक हो गये। श्वेता ने पिता जी को वचन दिया कि वह अणुव्रत के सारे नियमों को जीवन में अपनायेगी।

श्वेता के पिता जी अपनी बेटी के इस व्यवहार से प्रसन्न थे। वे साध्वी जी के प्रति तथा अणुव्रत के नियमों के प्रति बड़े गर्व से हर किसी से कहते थे कि विद्यार्थी अणुव्रत के नियम किसी धर्म विशेष के लिये ही नहीं अपितु समस्त मानव जाति का कल्याण करने के लिये हैं।

**अमरजीत कौर**
एस0 एस0 जैन कन्या वरिष्ठ विद्यालय,
सिरसा, हरियाणा



## हतभागा

**हर–भरे वृक्ष देखकर सूरज, बादल, पवन सभी प्रसन्न थे। आज स्वास्थ्य मत्रीं द्वारा पद्रह अगस्त को हरिया को 'हरित क्रांति' पुरस्कार के लिये चुना गया है। उसके द्वारा दिखाई गयी राह व वृक्ष–मोह की अनूठी शिक्षा, जंगल के प्रति प्यार ने तो उसकी दिशा ही मोड़ दी जिससे उसे यह पुरस्कार प्राप्त हो रहा था।**

सरुली सोच नहीं पा रही थी कि उसके जन्म में उसका क्या दोष था? जिस जंगल में वह पली– बढ़ी जिस वृक्ष की डाली में उसने झूला झूला, उस वृक्ष का क्या दोष? कब वह सरुली से हतभागा बनी? नियति क्या खेल, खेल रही थी?

दूसरी मां से उत्पन्न छठी संतान (वह भी लड़की) होने का दंश झेल रही सरुली अपना सुख–चैन पेड़–पौधों में तलाशती बड़ी हो गई। फिर हरिया की जीवन–संगिनी बना दी गयी। किन्तु वह हरिया के कामकाज के बारे में कुछ नहीं जानती थी। हरिया तो आजीविका ही पेड़ काटकर, पशुओं की खाल बेचकर ही चलाता था।

वक्त बीतता गया। सरुली दो नन्हीं बेटियों की मां बनी। उसे लगा दो नन्हें पौधे उसकी बगिया में खिल आये। अब वह उन्हीं के साथ खेलती थी किन्तु जंगल का मोह कम नहीं हुआ। हरिया पेड़ काटता रहा जिससे सरुली दुखी रहती थी। बेटी शाखा सब समझने लगी थी कि मां अन्दर ही अन्दर घुल रही है, इसी हालत में आयूष का जन्म हुआ परन्तु वह बीमार ही रहता था। इससे हरिया आहत था कि उसका एक ही पुत्र है वह भी बीमार रहता है।

शाखा पिता को कविता के माध्यम से समझाती–''*जब धरा पर धूल उड़ती, गगन में चलता पवन है। श्वास नलिका में प्रवेशित, रोग का होता मिलन है।''*

पुत्र मोह में फंसा हरिया अपने बेटे के लिये चिन्तित था किन्तु पुत्र दम घुटने से काल के मुख में समा गया। पूरा परिवार शोक में डूब गया। ऐसे में सरुली ने बताया की एक पेड़ दस पुत्रों के बराबर होता है। यह हरिया की समझ में आया। उसने प्रण किया कि मैं पुत्र की कमी को पूरा करूंगा। वह पेड़ लगाने में जुट गया तथा वृक्षों से होने वाले फायदों के बारे में सोच रहा था। उसके मन में आया कि पहले उसे मस्तिष्कीय प्रदूषण दूर करना पड़ेगा तभी पर्यावरण का प्रदूषण दूर होगा।

उसने छोटे बच्चों की सेना तैयार की। उनकी मदद से सड़क के किनारे, पार्कों, नदियों के किनारों पर बड़े छायादार वृक्ष लगवाए तथा गली–गली, घर–घर जाकर वृक्ष महिमा बतायी। छोटे बच्चों के इस कार्य से खुश होकर अन्य लोग भी इनके संग हो गए।

हरिया ने एक और उपाय सोचा। उसने बच्चों से उनके जन्म दिन पर एक वृक्ष लगाने को प्रेरित किया। अब तो उस गांव की काया पलट हो गयी। दूर से वह वृक्षों का झुंड नजर आता। अब हरिया की सोच शहर की ओर चली। उसने कारखानों व फैक्ट्रियों के आसपास वृक्ष लगाये जिससे धूएं का प्रदूषण कम हुआ। घने वृक्षों के कारण पशु–पक्षी वहां निवास करने लगे जिससे सन्तुलन बनने लगा।

हरे–भरे वृक्ष देखकर सूरज, बादल, पवन सभी प्रसन्न थे। आज स्वास्थ मंत्री द्वारा पंद्रह अगस्त को हरिया को 'हरित क्रांति' पुरस्कार के लिये चुना गया है। उसके द्वारा दिखाई गयी राह व वृक्ष मोह की अनूठी शिक्षा, जंगल के प्रति प्यार ने तो उसकी दिशा ही मोड़ दी जिससे उसे यह पुरस्कार प्राप्त हो रहा था।

नौ हजार रूपये की राशि नकद पुरस्कार के रूप में पाकर वह खुश हो गया। उसने फिर एक संकल्प किया कि इस राशि को वह और अधिक वृक्ष लगाकर अपने वंश को पल्लवित करेगा।

सरुली को सब हतभागा कहते थे किन्तु हरिया ने कहा कि वास्तव में तो सरुली ने उसे हतभागा होने से बचा लिया और वृक्ष को पुत्र की तरह समझने की प्रेरणा दी। वह दुगने जोश से इस पुनीत कार्य को करने लगा तथा पॉलीथिन तथा सीमेंट का प्रयोग कम करके धरती को जल से सीचने की सलाह देने लगा।

हरिया का एक उदेश्य था जिसे वह तन, मन, धन से अपनी बच्ची की सेवा के साथ पूरा करता। आगे आगे हरिया पीछे–पीछे बच्चे हाथों में वृक्ष, कपड़े के थैले लेकर गुनगुनाते जा रहे हैं। एक नया वृक्ष–गांव बनाने–
कुछ यूं गुनगुना रहें हैं–

**पौधे छोटे खूब लगाओ,**
**पर,लगाकर भूल न जाओ।**
**बढ़कर ये तरुवर कहलाते,**
**थके पथिक को छाया देते।**

**हेमा हर्बोला**
ललित आर्य महिला इंटर कालेज
हल्द्वानी, उत्तराखंड

**गजाधर सिंह के पुत्र की लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ने लगी। संयोग से विधान सभा चुनाव होने वाले थे। ग्रामीणों ने गजाधर सिंह के पुत्र का होंसला बढ़ाया और उन्हें चुनाव लड़ने के लिये कहा, ग्रामीणों के कहने पर उसने विधान सभा चुनाव लड़ा।**

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जनपद के बलीपुर नामक ग्राम में गजाधर सिंह एवं फतेहसिंह नामक क्षत्रीय परिवार रहते थे। दोनों जमींदार थे और वे सैकड़ों बीघे जमीन के तालुकेदार थे। गजाधर सिंह का परिवार शिक्षित था परंतु फतेह सिंह का परिवार अशिक्षित था।

दोनों क्षत्रीय परिवार गांव में अपनी जमींदारी चलाना चाहते थे परंतु गजाधर के परिवार की दिन प्रतिदिन गांव में लोकप्रियता बढ़ती गई क्योंकि वे ग्रामीणों से अच्छा व्यवहार करते थे। उनकी समस्याओं का समाधान करते थे। गजाधर सिंह के दो बेटे थे–विजयप्रताप सिंह। व अजयप्रताप सिंह वे भी शिक्षित थे और अपने पिता की तरह ग्रामीणों से अच्छा व्यवहार करते थे। यहां तक यदा–कदा गजाधर सिंह के बेटे आर्थिक एवं शारीरिक क्षति भी उठा लेते थे।

वे ग्रामीणों को अपने बाग–बगीचों में आने–जाने के लिए भी मना नहीं करते थे। जबकि फतेह सिंह भी ग्रामीणों से अच्छा व्यवहार करते थे। उनकी मदद करते थे लेकिन उनमें अक्कड़पन था वे कभी–कभी ग्रामीणों से झगड़ा एवं मारपीट भी कर लेते थे।

गजाधर की भांति उनके भी दो बेटे थे जिनका नाम अखण्ड प्रताप सिंह एवं रघुराज प्रताप सिंह था। दोनों स्वभाव से झगड़ालू एवं अशिष्ट  थे। वे दोनों गजाधर सिंह के बेटों की भांति ग्रामीणों पर अपना प्रभाव बनाकर, उन्हें मारपीट कर अपनी लोकप्रियता बढ़ाना चाहते थे कि लोग उनसे डरें, उनका सम्मान करें परन्तु ग्रामीण उनके व्यवहार से खिन्न थे और उनका सम्मान नहीं करते थे। इस कारण फतेहसिंह के दोनों पुत्रों की ईर्ष्या होने लगी।

वे आये दिन ग्रामीणों से हिंसा, मारपीट करने लगे, लोगों को डराने–धमकाने लगे और अपने बाग–बगीचों से आने–जाने के लिये मना करने लगे। वे चाहते थे कि लोग उनसे डरें और खोफ खायें और उनका सम्मान करें परन्तु ग्रामीण अन्दर ही अन्दर उनसे दुखी थे।

यहां तक की दोनों गांव में अपनी जमींदारी स्थापित करने के लिए और लोग उनसे डरे इसके लिये उन्होंने अपने चाचा के तीन वर्षीय पुत्र को जहर दे दिया और अपने चाचा लाल सिंह की धारदार हथियार से हत्या कर दी। गांव में सनसनी फैल गयी। बड़े–बूढ़े बच्चे उनसे डरने लगे और डर से उनका सम्मान करने लगे।

संयोग से पंचायत का चुनाव हुआ जिसमें गजाधर सिंह के ज्येष्ठ पुत्र और फतेह सिंह के ज्येष्ठ पुत्र ने चुनाव लड़ा। जहां गजाधर के ज्येष्ठ पुत्र ने ग्रामीणों से सीधा संपर्क किया, उनकी समस्याओं को सुना और उनकी हर तरह से मदद करने को कहा, वहीं फतेह सिंह के ज्येष्ठ पुत्र अखण्ड प्रताप सिंह ने ग्रामीणों को डराया–धमकाया व मरवाया। यही नहीं, कुछ लोगों का अपहरण करके उन्हें प्रताड़ित

किया और ग्रामीणों में भय पैदा कर दिया और वोट न देने पर उनके पूरे परिवार को मार देने की धमकी दी।

तदोपरान्त चुनाव हुआ। गजाधर को सफलता मिल गयी। वह चुनाव जीत गया परन्तु फतेह सिंह का पुत्र चुनाव हार गया। इस पराजय से फतेह सिंह का बेटा बौखला गया और उसने 50 ग्रामीणों की दिन–दहाड़े हत्या कर दी। यह मामला पूरे प्रदेश में सुलगती आग की तरह फैल गया। पुलिस ने उसे गिरफ्तार करना चाहा।

अदालती कारवाइयां चलीं, उसकी जमीन की कुर्की होने के आदेश हो गये। उधर फतेहसिंह का बेटा छुप–छुप कर भागता रहा और उसका सम्पर्क कुछ नक्सलवादियों से हो गया। वह आये दिन ग्रामीणों एवं कार्यालयों पर हमला करने लगे।

गजाधर सिंह के पुत्र की लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ने लगी। संयोग से विधानसभा चुनाव होने वाले थे। ग्रामीणों ने गजाधर सिंह के पुत्र का होंसला बढ़ाया और उन्हे चुनाव लड़ने के लिये कहा। ग्रामीणों के कहने पर उसने विधानसभा चुनाव लड़ा।

उधर फतेह सिंह के कनिष्ठ पुत्र ने भी अपने ज्येष्ठ भ्राता के प्रभाव व खौफ को देखकर चुनाव लड़ा और उसे हर संभव मदद नक्सलवादियों से मिली। अंत में, गजाधर सिंह के पुत्र को बड़ी शानदार सफलता मिली जबकि फतेह सिंह का छोटा पुत्र चुनाव हार गया।

गजाधर सिंह का पुत्र एक कैबिनेट मंत्री बन गया जबकि फतेह सिंह का दूसरा पुत्र भी चुनाव में हारने के बाद नक्सलवाद में कूद पड़ा और हिंसात्मक एंव तोड़फोड़ मूलकप्रवृत्तियों में भाग लेने लगा और अंत में पुलिस मुठभेड़ में मारा गया।

**डी.के.सोनी**
तथागत ज्ञानस्थली सीनियर सैकेंडरी स्कूल,
अतर्रा बांदा, उत्तर प्रदेश

**अब विचारणीय बात यह थी कि देश को किस और बढ़ाया जाए। उत्तर की तरफ बढ़ाते हैं तो चीन नहीं बढ़ने देगा, पश्चिम की ओर पाकिस्तान, पूर्व में बंगलादेश और दक्षिण में श्रीलंका बाधक बनेगा। एक ही रास्ता था और वह था 'रियेलटी शो' का रास्ता, मतलब जनता की राय।**

''आओ हम मिलकर देश को आगे बढ़ायें। अपनी सेवाएं देकर, यानी देश को एक उचित नेता दे कर। अपने देश की न केवल रक्षा अपितु उसके विकास में अपना योगदान दें।'' कुछ ऐसी ही बातें सुनकर नेता जी के भाषण पर पं0 श्याम नारायण ने अपने मन में ठान लिया कि जो भी हो आज और अब से देश को बढ़ाने में हम अपना पूर्ण योगदान देंगे और जा पहुंचे मंत्री जी के कार्यालय में व बन बैठे पार्टी के कार्यकर्ता।

हालांकि देश उन्हें सदैव भगवान की तरह लगा। यानी कि न उन्हें भगवान नजर आता था, न ही देश। नजर आता था तो केवल घर–मौहल्ला और ज्यादा से ज्यादा गांव व नगर। देश की तो भगवान के समान बातें ही सुनाई देती थीं। जैसे उन्हीं की तरह सब पंड़ित भगवान से प्रेम रखने को कहते, वैसे ही नेता लोग भी देश से प्रेम रखने को कहते रहते हैं।

सो सुबह से शाम तक देश से प्रेम करना सिखाना नेता का चोखा धंधा है। पंडित हो या नेता, दोनों ही देशवासियों को अपनी–अपनी तरह से उल्लू बनाने में लगे हैं परंतु जब पंड़ित नेता बन जाता है और वह भी पंडित श्याम नारायण जैसा तो बस राम ही राखे।

इस बार तो पंडित जी चक्कर में आ ही चुके थे, आखिरकार एक जिम्मेदार कार्यकर्ता थे पार्टी के। अब चाहे जो हो, कुछ तो करना ही था देश की खातिर। लेकिन शुरुआत कहां से होगी, इस बात का जरा भी अंदाजा न था। ऊपर से नेता जी ने भी एक बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी थी कि पंडित जी ने वादा किया है जनता से देश को बढ़ाने का, इसलिये जाइये और देश को आगे बढ़ाइए।

अब तो देश को बढ़ाना पंडित जी के लिये चिंता का विषय बन चुका था क्योंकि देश तो देखा ही नहीं था, केवल उसका नक्शा ही देखा था। नक्शा भी उन्हें अपनी हाथों की बनाई रोटी के समान ही नजर आता था।

अब विचारणीय बात यह थी कि देश को किस और बढ़ाया जाए। उत्तर की तरफ बढ़ाते हैं तो चीन नहीं बढ़ने देगा, पश्चिम की ओर पाकिस्तान, पूर्व में बंगलादेश और दक्षिण में श्रीलंका बाधक बनेगा। एक ही रास्ता था और वह था 'रियेलटी शो' का रास्ता, मतलब जनता की राय।

फिर क्या था, पंडित जी अपना झोला बगल में दबाकर, छाता पीठ पर कुर्ते के कॉलर में अटकाकर और हाथ में अपनी धोती का सिरा पकड़कर निकल पड़े लोगों की या यूं कहो जनता की राय लेने ।

[illegible] ? ''हां बढ़ा तो रहें हैं।'' सेठजी बोले, ''देखो भाई देश को बढ़ाना एक ऊंचा भाव है, इसीलिये हम चीजों के भाव बढ़ा रहे हैं।''

लेकिन यहां कुछ बात समझ आई नहीं तो पंडित जी सरकारी दफ्तर के एक बाबू के पास जा पहुंचे यह सोच कर कि महान है, इसीलिये सरकारी बाबू बने।

उनसे भी उन्होंने वही सवाल दोहराया, '' बाबूजी, क्या आप देश को आगे बढ़ा रहें है ?''

''हां बढ़ा देंगें, दो हजार लगेंगे।'' बाबूजी बोले, ''मैं समझा नहीं ?'' पंडित जी ने आश्चर्य से पूछा,'' अरे भाई जब एक दुबली–पतली फाइल को आगे बढ़ाने में सौ–पचास ले लेते हैं तो फिर यह तो इतना बड़ा देश है। पचास तो चपरासी ही ले लेगा। '' बाबूजी बोले।

अब तो यह सब पंडित जी के ऊपर से जाने लगा। और तभी उन्हें फिल्म 'जागृति' का वह गाना याद आया ''इस देश को रखना मेरे बच्चों सभांल के।'' वह यह विचार करके कि देश का अंततः भविष्य तो नौजवानों के कंधों पर है सो यह सोच कर उन्होंने अपने कदम कॉलेज की ओर बढ़ा दिए और जा पहुंचे एक शिक्षित बेरोजगार के पास। वह शिक्षित बेरोजगार लड़कियों के कॉलेज के बाहर खड़ा होकर छुट्टी का इंतजार कर रहा था। उससे भी वही सवाल किया, ''क्यों बेटा, क्या कर रहे हो तुम इस देश को बढ़ाने के लिये ?''

उसने अपने गालों पर हाथ फेरते हुए कहा, ''फिलहाल तो हम अपनी दाढ़ी बढ़ा रहे हैं, तुम अपनी गाड़ी बढ़ाओ। फुटो यहां से, छुट्टी होने वाली है।'' अब तो पंडित जी जहां जाते, उनकी उलझने बढ़ जातीं।

दूध वाले के पास गए तो उसने कहा, ''हम तो दूध में पानी बढ़ा रहे हैं''। डॉक्टर ने कहा, ''हम फीस बढ़ा रहे हैं। अदालत ने कहा, '' हम तो तारीख बढ़ा रहे हैं।'' कुल मिलाकर यह कि नेताओं के नारों के कारण देश में हर कोई कुछ न कुछ बढ़ा रहा था मगर देश है कि बढ़ ही नहीं पा रहा।

थक–हार कर पंड़ित जी एक धार्मिक पीठ पर पहुंचे। वहां एक पीपल के पेड़ के नीचे लेट गये और उनकी नजर बोर्ड पर पड़ी जिस पर लिखा था– 'तुम सुधरोगे, जग सुधरेगा, तुम बढ़ोगे, जग बढ़ेगा।'

बस फिर क्या था, उन्हें सवाल का जवाब मिल गया था और वह लेटे नहीं रह पाए। उन्हें अपने हिस्से के देश को आगे बढ़ाने का सूत्र मिल गया था।

अगले दिन ही उन्होंने अपने राजमिस्त्री को बुलवाया। अपना चबूतरा तुड़वाकर दो फुट आगे गली में बढ़वा दिया। गली संकरी हो गई थी पर उन्होंने अपने हिस्से का देश आगे बढ़ा लिया था और लोगों

[illegible]
पूरा देश कितना आगे बढ़ जाए और कहां का कहां पहुंच जाए' राम ही जाने !

**अंजलि नैथनियल**
अशोक मैमोरियल पब्लिक स्कूल,
अशोक इन्कलेव फरीदाबाद, हरियाणा

**19**

## क्या कष्ट है बच्चा !

**मैं दादाजी के पीछे–पीछे आने लगा तो नीचे दादाजी खड़े थे। वह मेरी ओर ही देख रहे थे। उनके होंठ तो हिल रहे थे परन्तु उनकी आवाज मुझे सुनाई दी 'इस नालायक अनिमेष ने भी हमारी नाक कटवा दी–काम का ना काज का दुश्मन अनाज का।' अब मेरी समझ में आया कि मुझे तो हर सजीव–निर्जीव के मन की बात सुनाई देने लगी है। मुझे देखकर वह बोली, "आजा बेटा अनिमेष.. .आजा।" दादी के इस दोगले व्यवहार से मैं खिन्न था।**

" हे भगवान ! बस अबकी बार सुन ले... आप तो सब कुछ कर सकते हैं । हे परम्पिता...दीनानाथ ...दीनबंधू...अबकी बार...बस अबकी बार पास करा दे दाता...बराबर में किसी होनहार विद्यार्थी को बैठा दे या फिर कोई पर्ची ही दिला देना...या फिर ऐसा निरीक्षक हो जो खुद ही बता दे। हे अन्नदाता... तू तो कुछ भी कर सकता है। कम से कम इतना ही करना कि परीक्षक को गलत लिखा भी सही लगे। हे मेरे भोलेनाथ !.....हे शिव शम्भू !" ऐसे अनगिनत नामों को मैं रटता जा रहा था।

किताब हाथ में थी पर ध्यान शिव पर लगा हुआ था। कर्म से अधिक भाग्य पर भरोसा कर रहा था। करूं भी क्यों नहीं, मैंने अनगिनत ऐसे उदाहरण और चमत्कार देख और सुन रखे थे जो भगवान शिव की कृपा से ही सम्भव थे। फिर यह तो मात्र बारहवीं कक्षा में पास होने की बात थी। मुझे किताब में लिखा एक भी शब्द दिखाई नहीं दे रहा था। उसके स्थान पर भगवान शिव के विभिन्न शिवलिंग व निवास स्थान ही दिखाई दे रहे थे। रह–रहकर रावण, भील, भस्मासुर आदि पर हुई भगवान शिव की कृपा मानस पटल को झंकृत कर रही थी। बार–बार शिव शक्ति और शिव महिमा जैसी फिल्मों के दृश्य भी दिखाई दे रहे थे।

यह सब सोचते हुये मैं कब तंद्रा से निद्रा में चला गया, मुझे पता ही नहीं चला। अचानक एक कर्णप्रिय आवाज ने मुझे जगाया.....''जागो पुत्र अनिमेष।" मेरी आंखें खुलीं तो खुशी का ठिकाना न रहा। सामने भगवान भोलेनाथ खड़े थे। उनकी आवाज गूंज रही थी। दिव्य बिखेरता उनका ललाट, त्रिपुंडधारी, वाघाम्बर पहने, हाथ में त्रिशूल व डमरू मन को मोहित कर रहे थे। विषधर की फुंकार भी मनमोहक थी। बड़े–बड़े दो नेत्र, लम्बी भुजाएं और आशीर्वाद की मुद्रा देख मैं रोमांचित हुआ जा रहा था। कुछ पलों तक बस मैं उन्हें निहारता ही रहा। भगवान शिव बोले– "क्या कष्ट है बच्चा।...क्यूं हमें याद कर रहे थे ?"

मैं तो पहले ही समझ गया था कि मैं अवश्य पास हो जाऊंगा, इसलिये समय नष्ट न करते हुए मैंने अपने मन की बात कह देना ही उचित समझा परन्तु मेरी तुरन्त बुद्धि ने कहा कि अगर भगवान शिव से यह मागूं कि मुझे पेपर में नकल करा देना तो वे क्या सोचेंगे ? असमंजस बढ़ता जा रहा था और मैं समझ नहीं पा रहा था कि अपने मन की बात उन्हें कैसे कहूं ? परन्तु शिव तो अन्तर्यामी हैं, वे सब के मन की बात बिना बताए ही समझ जाते हैं।

वे थोड़े मुस्कुराकर बोले, "मैं तुम्हारे मन की बात समझ गया हूं अनिमेष। तुम यही चाहते हो ना कि सामने वाला क्या सोच रहा है ? क्या लिख रहा है ? अथवा क्या बोल रहा है ? यह सब तुम्हें सुनता रहे।" मैं थोड़ा सा शरमाया भगवान जी फिर बोले, "तथास्तु..... जा पुत्र ऐसा ही होगा।"

आज मेरे जितना खुशनसीब इतना कोई नहीं था। बड़ा खुश था मैं। बड़े जोर–जोर से चूम रहा था, खुशी के मारे पागल हुआ जा रहा था कि आवाज आई, ''अई मां मर गया !'' मैं रुक गया और इधर– उधर देखा परन्तु कोई दिखाई नहीं दिया। दरवाजा जोर से खोलकर बाहर निकला तो फिर आवाज आई, ''इतने जोर से मत पटक भाई, हम भी उसी भगवान की संतान है, हमें भी दर्द होता है।''

मैं ठिठका, आगे पीछे देखा कोई न था। उत्साह की अधिकता ने रोमांचित कर रखा था, इसलिए अन्जाना–सा बन पुनः कमरे के अन्दर चला गया और किताब को उठाकर इधर–उधर फेंकना शुरू कर दिया तथा घमण्ड में चिल्लाया, ''अब मुझे किताबों की आवश्यकता नहीं है ? मैं सब कुछ जानता हूं, सारा ज्ञान समाहित है मेरे मन में, मैं सर्वज्ञ हो गया हूं, स्वयंभू हूं मैं....हा...हा...हा (दर्प में रावण जैसी हुंकार भर रहा था। इतना भी भूल गया था कि स्वयंभू का क्या अर्थ होता है।

''हमारा निरादर करके कोई सुखी नहीं रहा भाई।'' मेरे कानों में यह आवाज एकवचन नहीं, बहुवचन में सुनाई दी जो कानो को चीर देने वाली थी। मैंने कानों पर हाथ रख लिए और चिल्लाया...''कौन है ?''

'' होता कौन...तुम्हारा दादा हूं। ''दादाजी कमरे में प्रवेश करते हुए बोले। मैं थोड़ा–सा घबरा गया था और शरमाते हुए किताबों को ठीक करने लगा और बोला, ''दादाजी आप !''

'' हां मैं, पर तू इतना शोर क्यूं मचा रहा है ?'' दादाजी ने बेंत को मेरी ओर करते हुए कहा। मैं डर गया और झिझकते हुए बोला ''क... कुछ नहीं.....।''

वे तिरस्कार भरे स्वर में बोले, ''पढ़ ले बैठकर, आज तेरा पेपर भी तो है।''

''जी दादाजी।'' कहकर मैंने किताब खोल ली। दादाजी चले गये लेकिन मुझे उनकी आवाज पुनः सुनाई दी 'इस नालायक को यह भी नहीं पता कि हम कितनी मेहनत–मजदूरी करते हैं और ये...।'

मैं दादाजी के पीछे–पीछे आने लगा तो नीचे दादी जी खड़ी थी। वह मेरी ओर ही देख रही थीं। उनके होंठ तो हिल रहे थे परन्तु उनकी आवाज मुझे सुनाई दी इस नालायक अनिमेष ने भी हमारी नाक कटवा दी 'काम का ना काज का दुश्मन अनाज का।' अब मेरी समझ में आया कि मुझे तो हर सजीव–निर्जीव के मन की बात सुनाई देने लगी है। मुझे देखकर वे बोली, ''आजा बेटा अनिमेष... आजा'। दादी के इस दोगले व्यवहार से मैं खिन्न था। मम्मी–पापा, भाई–बहन सबके मन की बातें मुझे सुनाई दे रही थीं। पापा कह रहे थे, ''लाट साहब को या तो मनमर्जी करने दो वरना घर छोड़कर भाग जायेगा।''

बहन कह रही थी ''जाने इसे कब अक्ल आयेगी ?''

आते ही सबकी भाषा ही बदल गई। सभी मेरी खातिरदारी में लग गये। आज मुझे कक्षा में पढ़ाई गयी रत्नाकर डाकू की कहानी याद आ गयी कि करते सब के लिये हैं परन्तु भुगतना अकेले को पड़ता है।

आज यदि मैं किसी लायक होता तो शायद मेरे घर वाले मुझे तिरस्कृत नहीं, सम्मानित करते। मेरे ज्ञान–चक्षु खुल गये। हे भगवान भोलेनाथ ! वास्तव में अपनी अक्ल, अपनी पढ़ाई और अपनी कमाई ही अपने काम आती है। मुझे क्षमा करें प्रभु। मुझसे भूल हो गयी। मेरी मति मारी गयी थी। आप अपना आशीर्वाद वापस ले लें और कुछ देना ही है तो सच्ची लगन और मेहनत करने की क्षमता प्रदान करें। भगवान शिव प्रसन्न हो गये और 'तथास्तु' कहा। मैं अत्यंत प्रसन्न हो गया था। मैंने कसम खाई कि 'परीक्षा में अवैध उपायों का सहारा नहीं लूंगा।'

**अरविंद कुमार**
सिल्वर बैल्स पब्लिक स्कूल,
शामली, उत्तर प्रदेश

**वहां से उन्होंने देखा कि उनका हमउम्र लड़का एक पैकेट लेकर निकल रहा है। उन दोनों ने उसका पीछा किया लेकिन वह लड़का रिक्शे से लगभग आधा किलोमीटर दूर निकल चुका था। वे दोनों तेजी से रिक्शे के पीछे दौड़ रहे थे। अचानक एक कार उनके करीब आकर रुकी और उसमें सवार आदमियों ने नरेश को तो खींचकर अंदर कार में डाल लिया लेकिन राकेश अपना हाथ छुड़ाकर कालोनी की गलियों में जाकर छिप गया।**

गर्मियों की छुट्टियां प्रारंभ हो गई थीं, इसलिए राकेश इन छुट्टियों में कुछ करना चाहता था, किंतु वह तय नहीं कर पा रहा था कि वह क्या करे। अचानक उसकी नजर अखबार के एक विज्ञापन पर गई, उसमें लिखा था विद्यार्थी खाली समय बरबाद न करें, कमाई पांच हजार रुपये तक।'

राकेश खुश हो गया और विज्ञापन में दिये गये मोबाइल नंबर पर फोन किया, '' सर! मैंने दसवीं की परीक्षा दी है, मैं खाली समय में कुछ काम करना चाहता हूं। उधर से रोबीली किंतु शिष्ट आवाज सुनाई, पड़ी ''वैरी गुड, हमारी कंपनी को तुम्हारे जैसे होनहार बच्चों की तलाश है। वेलकम।''

अगले दिन राकेश यह सोचकर कि मम्मी–पापा को सरप्राइज दिया जाये, उन्हें बताये बिना इंटरव्यू स्थल पर पहुंच गया। वह एक फाइव स्टार होटल था। उसके स्वागत कक्ष में एक सुन्दर युवती बैठी थी। राकेश ने उसे अपना नाम बताया और वह भी उसकी उम्र के लड़कों के साथ बाहरी कक्ष में बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसका इंटरव्यू के लिये नंबर आया।

राकेश ने झिझकते हुऐ दरवाजा खोला और फिर 'मे आई कम इन सर' बोला। अंदर सोफे पर बैठे फ्रेंच कट दाढ़ी वाले सूटेड– बूटेड व्यक्ति ने औपचारिकता के तौर पर 'कम ऑन' कहकर अंदर आने का इशारा किया।

उस व्यक्ति ने औपचारिकता के तौर पर राकेश से कुछ सवाल किये जिनके राकेश ने आसानी से उत्तर दिये। उस व्यक्ति ने राकेश की पीठ थपथपाते हुये कहा,'' मुझे विश्वास है तुम हमारी कंपनी का काम अच्छी तरह से कर सकोगे।'' ''सर मुझे क्या करना होगा ?'' राकेश ने खुशी से पूछा।

''कुछ खास नहीं, हमारी कम्पनी के प्रोडेक्ट का प्रचार कालोनियों में करना होगा, यदि अच्छा लगे तो दो दिन बाद आ जाना।'' डायरेक्टर ने कहा। राकेश ने खुशी से 'यस सर' कहा। थोड़ी देर बाद वह राकेश को रोकते हुए बोला, ''बेटा ! बसंत विहार में रहते हो ना ! आर.के. पुरम तो तुम्हारे रास्ते में ही पड़ता होगा''। राकेश ने कहा, ''जी हां।''

डायरेक्टर ने झिझकते हुऐ राकेश से कहा, '' आर.के.पुरम में मेरा एक दोस्त रहता है, उसके लिए यह गिफ्ट पहुंचा दो तो तुम्हारी बहुत मेहरबानी होगी।'' राकेश उसके लिये तैयार हो गया और उस गिफ्ट पैकेट को लेकर घर के लिए चल दिया।

आर.के. पुरम वहां से तीन किलोमीटर दूर था। रास्ते में उसका मित्र नरेश मिल गया। वह उछलकर बोला,''यार राकेश, मेरी नौकरी लग गई।'' उसने भी वही सब कुछ बताया जो राकेश के साथ हुआ था, वही

[illegible]
हुए पते पर पहुंचा दे और ऐश कर।''

राकेश को शक हो गया कि वह व्यक्ति तस्कर तो नहीं है जो कि पार्ट टाइम नौकरी देने के बहाने हमारा इस्तेमाल कर रहा हो। उसने नरेश से कहा, ''यार मुझे तो सब गड़बड़ मालूम पड़ रहा है। हमें तुरंत पुलिस को खबर करनी चाहिए, वह अपने आप छानबीन कर लेगी।''

नरेश ने उसे घूरकर देखा, फिर बोला, ''तेरा दिमाग तो खराब नहीं है, तू भी बात का बतंगड़ बना रहा है। वह तो भला आदमी है जिसने हमें नौकरी दी है और तू है कि उस बेचारे को ही फंसा रहा है।'' बाद में वे दोनों इंटरव्यू स्थल पर दोबारा पहुंचे। चाय पीने के बहाने होटल के सामने एक ढाबे में बैठ गये।

वहां से उन्होंने देखा कि उनका हम उम्र लड़का एक पैकेट लेकर निकल रहा है। उन दोनों ने उसका पीछा किया लेकिन वह लड़का रिक्शे से लगभग आधा किलोमीटर दूर निकल चुका था। वे दोनों तेजी से रिक्शे के पीछे दौड़ रह थे। अचानक एक कार उनके करीब आकर रुकी और उसमें सवार आदमियों ने नरेश को तो खींचकर अंदर कार में डाल लिया लेकिन राकेश अपना हाथ छुड़ाकर कालोनी की गलियों में जाकर छिप गया।

जब वह निश्चिंत हो गया कि वे लोग चले गये तो उसने पास के पुलिस स्टेशन जाकर वह पैकेट दिया व नरेश के अपहरण की कहानी बताई। पुलिस तुरंत हरकत में आ गई। शहर के चारों ओर नाकेबंदी कर दी गयी। लगभग अठारह घंटे बाद नरेश को छुड़वाया और पचास पैकेट बरामद किये जिनमें ब्राउन शुगर थी। उन्होंने राकेश को धन्यवाद दिया और गणतंत्र दिवस पर उसे सम्मानित किया। दोनों मित्र खुशी से गले मिले । राकेश ने नरेश से चुटकी लेते हुए कहा, ''यार, मैंने कहा था न दाल में कुछ काला है !'' नरेश ने कहा, ''यार, तेरी वजह से न जाने कितने घर बरबाद होने से बच गये।''

**सत्यनारायण शर्मा**
जवाहर नवोदय विद्यालय,
मुडिपु, दक्षिण कन्नड़ जिला, कर्नाटक

**समय पख लगाकर उड़ने लगा। बारहवीं कक्षा में पढ़ने वाला विनम्र एम.बी.ए. करके प्राइवेट कम्पनी में नौकरी करने लगा। अनन्या की शादी न होने के कारण घर में लड़ाई–झगड़ा बढ़ने लगा। विनम्र की प्रतिज्ञा उसकी दीदी के विवाह में रोड़ा बन गई थी। एक दिन वह अपनी कम्पनी के काम से पंजाब नेशनल बैंक गया तो वहां मैनेजर को देखकर चकित हो गया। वह उसके मित्र अमित के भैया आशीर्वाद थे जो अभी दो दिन पूर्व स्थानान्तरित होकर दिल्ली आए थे।**

तीव्र गति से साइकिल चलाता हुआ विनम्र घर की ओर जा रहा था। भादो मास की तपती धूप में भी उसके मन में उत्साह, जोश और स्फूर्ति थी। पैरों में बिजली की शक्ति पैदा हो गई थी। वह शीघ्रातिशीघ्र घर पहुंचना चाहता था। उसके कानों में विद्यालय में की गई प्रतिज्ञा के शब्द गूंज रहे थे 'मैं दहेज से अनुबंधित एवं प्रदर्शन से युक्त विवाह नहीं करूंगा और न ही भाग लूंगा।'

उसकी विचार–तन्द्रा तब टूटी जब वह अपनी मंजिल पर पहुंचा। घर में दीदी अनन्या और मां को देखकर उसका मुख प्रसन्नता से चमक उठा। ''विनम्र ! क्या बात है आज बहुत खुश हो ?'' दीदी ने उत्सुक्ता से पूछा।

विनम्र से विद्यालय में की गई प्रतिज्ञा की बात सुनकर अनन्या दीदी ने उसका माथा चूम लिया पर मां कुछ पल अवाक् सी रह गई फिर बोली, ''बेटा, घर में तुम्हारी अविवाहित दीदी है। तुम ऐसी प्रतिज्ञा कैसे कर सकते हो ?''

'' दीदी सर्वगुण सम्पन्न, सुन्दर तथा शिक्षित है। आप उनकी इतनी चिंता क्यों करती हो मां ?'' विनम्र बोला। मां असन्तुष्ट–सी डाइनिंग टेबल पर खाना लगाने लगी। उसकी प्रतिज्ञा ने मां की परेशानी बढा दी थी।

शाम को विनम्र के पिता जी ने आफिस से आकर यह समाचार सुना तो आग–बबूला हो उठे, ''तुम अपने लिये कुछ भी करो, हमें आपत्ति नहीं परन्तु तुमने ऐसे विवाह में भाग न लेने की प्रतिज्ञा क्यों की ? क्या तुम अपनी बहन की शादी में भी सम्मिलित नहीं होगे ?''

''पिता जी ! हम दीदी के विवाह में दहेज नहीं देंगे। दीदी नौकरी कर रही है तो दहेज देने का प्रश्न ही नहीं उठता।''

''बेटा, हम जिस समाज में रहते हैं वहां सब लोग अपनी लड़कियों को विवाह में दहेज देते हैं। आजकल तुम्हारे जैसे समाज–सुधारक लड़के कहां हैं जो बिना दहेज के शादी करेंगे।''

''पिता जी, अब समय बदल रहा है। आजकल इन्टरनेट के द्वारा वर ढूंढ सकते हैं। हमें दीदी के लिये ऐसा सुशील और संस्कारी लड़का अवश्य मिल जायेगा जो दीदी से बिना दहेज के विवाह करेगा।''

समय पंख लगाकर उड़ने लगा। बारहवीं कक्षा में पढ़ने वाला विनम्र एम.बी.ए. करके प्राइवेट कम्पनी में नौकरी करने लगा। अनन्या की शादी न होने के कारण घर में लड़ाई–झगड़ा बढ़ने लगा। विनम्र की प्रतिज्ञा उसकी दीदी के विवाह में रोड़ा बन गई थी। एक दिन वह अपनी कम्पनी के काम से

[illegible]
आशीर्वाद थे जो अभी दो दिन पूर्व स्थानान्तरित होकर दिल्ली आए थे।

उसने उन्हें अपने घर आकर रहने को कहा तो वह उसका आग्रह टाल न सके। आशीर्वाद भैया के आने से मम्मी–पापा खुश रहने लगे। भैया ने अपनी हंसमुख प्रवृत्ति के कारण सबका दिल जीत लिया। एक दिन पिताजी ने उनसे अनन्या दीदी के विवाह की बात की तो उन्होंने स्वीकृति दे दी। आखिर वह दिन आ गया जब दोनों की शादी बिना दहेज के बड़ी सादगी से कर दी गई। दीदी भैया के साथ उनके फ्लैट में चली गई।

''बेटा ! अब तो शादी कर लो। तुम्हें जो लड़की पसन्द है, ले आओ।'' मां प्रतिदिन एक ही रट लगाए रहती।

आखिर एक दिन विनम्र के सहकर्मी गुप्ता जी ने अपनी लड़की शालिनी की शादी के लिए उससे बात की । शालिनी शिक्षित, सुशील, संस्कारी लड़की थी। वह केन्द्रीय विद्यालय में कार्यरत थी। अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप विनम्र ने माता–पिता की उपस्थिति में मन्दिर में सादे ढ़ंग से शादी कर ली। विनम्र और शालिनी का गृहस्थ जीवन चलने लगा।

शालिनी भी समाजसेवा एवं समाज सुधार संस्था की सदस्या है जो कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध आवाज उठाती है। आज उनका परिवार खुश, सुखी एवं सम्पन्न है। वह अपनी पत्नी शालिनी को अपनी प्रतिज्ञा की बात बता रहा था कि उसके विद्यालय के प्राचार्य का फोन आया, ''बेटा विनम्र, आज शाम पाँच बजे हमारे विद्यालय में आयोजित एक समारोह में आपको सम्मानित किया जाएगा। आप अपने परिवार सहित अवश्य आइएगा।''

''धन्यवाद सर।'' प्रसन्न होकर विनम्र ने शालिनी और परिवार के लोगों को यह समाचार सुनाया तो उसके माता–पिता का माथा गर्व से ऊंचा हो उठा। विनम्र की उस प्रतिज्ञा ने उनके मान–सम्मान को बढ़ा दिया। विनम्र के कानों में उसकी प्रतिज्ञा के शब्द प्रतिध्वनित होने लगे– ''मैं दहेज से अनुबंधित एवं प्रदर्शन युक्त विवाह नहीं करूंगा और न भाग लूंगा।

**कुमारी गुरमीत कौर**
केन्द्रीय विद्यालय, वायुसेना अवस्थान,
सरसावा सहारनपुर, उत्तर प्रदेश



## आम का पेड़

**एक दिन पेड़ काटने वाला कुल्हाड़ी लेकर आया तो मोहन ने पेड़ काटने से मना कर दिया। वह पेड़ से लिपट गया और रोते हुये बोला, '' मैं इस पेड़ को नहीं काटने दूंगा। यह मेरा दोस्त है। यह हमें शुद्ध वायु देता है। यह हमें छाया तथा मीठे फल भी देता है। बदले में बेचारा हमसे कुछ भी नहीं लेता।''**

एक बार की बात है किसी गांव में मोहन नाम का एक लड़का रहता था। वह अपने दादाजी से बहुत प्यार करता था। दादाजी उसे हर रोज कहानियां सुनाते थे और उसके साथ गांव में घूमने जाते थे। एक दिन मोहन ने दादाजी से कहा, '' दादाजी, अगर हमारे घर में एक आम का पेड़ होता तो कितना अच्छा होता। जब जी चाहता आम तोड़कर खाता।''

देखो बेटा, फल के अलावा जब पेड़ बड़ा होता है तो ठंडी हवा, छाया, आम की पत्तियां तथा और भी बहुत कुछ तुम्हें देता है। अरे तुम भूल गए, आम की पत्तियों से तुम पीपनी बनाकर बाजा भी तो बजाते हो।'' दादा जी ने हंसते हुए कहा।

अगले दिन दादाजी एक आम का पौधा ले आये जिसे देखकर मोहन की खुशी का ठिकाना न रहा। दादाजी बोले, ''जब यह पौधा पेड़ बन जायेगा तो इस पर तरह–तरह के पक्षी आया करेंगे– जैसे तोते, कोयल, मैना आदि। ''अब तो बड़ा मजा आयेगा। कोयल की आवाज कितनी मीठी होती है।'' ''हां मोहन पेड़ इंसान के सबसे अच्छे दोस्त होते है।''

''दादाजी पेड़ तो बात नहीं करते। फिर वे हमारे दोस्त कैसे बन सकते हैं ?''

दादाजी बोले, '' पेड़ वातावरण से जहरीली गैस और कार्बन डाई ऑक्साइड लेते हैं और हमें शुद्ध वायु या ऑक्सीजन देते हैं। यदि ऑक्सीजन न हो तो हम सांस नहीं ले सकते। ''

''मैं समझ गया, दादा जी! पेड़ हमारे सबसे अच्छे दोस्त हैं!'' समय बीतता गया। मोहन प्रतिदिन आम के पौधे को पानी देता गया। पौधा बड़ा होकर पेड़ बन गया। कुछ समय पश्चात् मोहन के दादाजी की मृत्यु हो गई। मोहन उसी पेड़ के नीचे बैठ कर पढ़ता था। मोहन के पिता जी को उस पेड़ से परेशानी होने लगी क्योंकि बाहर से बच्चे पत्थर मारकर आम तोड़ने की कोशिश करते थे। रोज–रोज इन घटनाओं से उसके पिता तंग हो गये और उन्होंने पेड़ कटवाने का निश्चय कर लिया।

एक दिन पेड़ काटने वाला कुल्हाड़ी लेकर आया तो मोहन ने पेड़ काटने से मना कर दिया। वह पेड़ से लिपट गया और रोते हुये बोला, '' मैं इस पेड़ को नहीं काटने दूंगा। यह मेरा दोस्त है। यह हमें शुद्ध वायु देता है। यह हमें छाया तथा मीठे फल भी देता है। बदले में बेचारा हमसे कुछ भी नहीं लेता।''

मां सोचने लगी, ''मोहन ठीक कहता है। यह पेड़ तो बस हमें देता ही है, लेता कुछ नहीं। यह दाता है। फिर क्यों न मोहन की बात मान ली जाए ?''

थोड़ा सोचकर मां फिर बोला, ''तुम ठीक कहते हो मोहन। अब मैं आम का पेड़ नहीं कटने दूंगा। अब हम अमरूद, लीची, तथा नीम का पेड़ भी लगायेंगे।''

''हां बेटा, हम गलती कर रहे थे। पेड़ सचमुच हमारे दोस्त हैं।'' उसके पिता ने गंभीरतापूर्वक कहा।

''मोहन अब हम पेड़ काटने की गलती नहीं करेंगे पेड़ों से प्यार का रिश्ता जोड़ना ही ठीक है। पेड़ पानी बरसाने और बाढ़ रोकने में भी हमारी मदद करते हैं।'' मां ने कहा।

पिता जी मोहन को समझाने लगे, ''पेड़ प्रदूषण को रोकने का भी कार्य करते हैं। जैसे फैक्ट्रियों,वाहनों आदि से निकलने वाले धुएं से वायु प्रदूषण को बढ़ने से रोकते हैं। इसलिये बेटा आज हमें समझ में आ गया है कि पेड़ हमारे लिये कितने आवश्यक हैं।''

**किरन सेठी**
पार्थ पब्लिक सी0 सै0 स्कूल,
जी. टी. रोड़, घरौंडा, हरियाणा



## कन्यादान

**प्राचार्य जी के परिवार ने मातृकुल का सारा कार्य सम्पन्न कराया। हल्दी और उबटन लगवाए। धीरे–धीरे वैवाहिक तिथि नजदीक आ गई। नव–दम्पत्ति ने मिलकर कार्ड छपवाया और बिना दहेज के विवाह की व्यवस्था हुई। दोनों ने मिलकर खर्च का भार उठाया। एक तरफ से विद्यालय के शिक्षक बराती थे, दूसरी तरफ के शिक्षक घराती थे। पगरैत प्राचार्य जी थे और कन्यादान के लिए सहायक आयुक्त आए हुए थे।**

अप्रैल माह का महीना चल रहा था। केन्द्रीय विद्यालयों का नवीन सत्र प्रारंभ हो चुका था। मैंने अपने मित्र प्रहराज जी से कहा, ''यार गर्मी का महीना चल रहा है। आजकल शादियों का दौर चल रहा है किन्तु अपने यहां कोई भोज दिखाई नहीं दे रहा। यार, कुछ तो होना चाहिये।''

प्रहराज जी बोले, '' एक मई को आप लोगों को दिव्य भोज का प्रबंध कर रहे हैं पर यह मत पूछना कि भोज कौन दे रहा है?''

उनकी इस टिप्पणी से हठात् जिज्ञासा हुई कि आखिर ऐसा कौन सा कार्य है जिसमें दिव्य भोज की व्यवस्था है। मन में अनेक प्रश्न उठ रहे थे। विद्यालय के अन्य मित्रों से इस विचित्र भोज के विषय में पूछताछ भी की किन्तु कुछ सुराग हाथ नहीं लगा।

शाम को श्रीमती जी से उस भोज की चर्चा की और यह निर्णय लिया गया कि प्रहराज के यहां चलकर इस रहस्य का पता लगाया जाये। सायंकाल में घूमते–घूमते हुए प्रहराज जी के घर पहुंच गया। बातों–बातों में उनकी पत्नी से पूछा, ''भाभी जी, सर एक मई को किस बात का भोज दे रहे हैं ? क्या भतीजा आने वाला है। इनका कहना है भोज की खुशी का इजहार उसी दिन किया जाएगा जिस दिन भोज होगा। कम से कम आप अर्धांगिनी हैं तो आधी बात तो अवश्य जानती होंगी।''

प्रहराज जी की पत्नी ने मुस्कराते हुए अपने पति से कहा, ''आप क्यों नहीं बता देते ?'' प्रहराज जी बोले, ''विषय गंभीर है, समय से पूर्व बता दिया तो सब चौपट हो जायेगा और मामला बिगड़ जायेगा।''

वे गंभीरता से आगे बोले की एक मई को कामनी मैडम की शादी है और उसी शादी में वे दोनों भोज देंगे। मैं और मेरी पत्नी दंग रह गये क्योंकि कामिनी मैडम की उस समय उम्र 46 वर्ष थी। उस समय मैं लगभग बैयालिस वर्ष का था जबकि मेरे चार बच्चे थे। मेरा बड़ा लड़का दसवीं में पढ़ रहा था।

मैंने कहा, ''मित्र, पत्थर दूब यह कैसे जमा रहे हो ? आप इस अनोखे विवाह से कैसे जुड़े हैं ?'' उन्होंने कहा, ''मेरे बड़े साढ़ू की पत्नी कुछ दिन पूर्व दिवंगत हो गई है और उनके तीन बच्चे हैं। वे उच्च अधिकारी हैं। प्राचार्य ने उन्हीं के पुनर्विवाह की चर्चा मुझसे की थी।''

मैंने कहा, ''क्या इस विवाह के लिये मैडम तैयार होंगी ?'' उन्होंने कहा, ''बिल्कुल नहीं, बल्कि प्राचार्य कक्ष से रोती हुई बाहर चली गईं जब प्राचार्य जी ने यह प्रस्ताव रखा था।

मैडम के इनकार के बाद भी प्राचार्य जी ने हिम्मत नहीं हारी और प्रयास जारी रखा। मैडम की मित्र सरोजिनी से विवाह के लिये तैयार करने की बात की। मैडम के प्रयास से जब कामिनी मैडम ने मुंह खोला तो उन्होंने कहा कि मैं यदि शादी करूंगी तो उसी लड़के से जिससे मेरी शादी 24 वर्ष पूर्व तय हुई थी।

सरोजिनी मैडम ने कहा, ''क्या वह लड़का अभी भी शादी के लिये बैठा होगा ?'' तो मैडम बोली, ''हां, आज भी वह मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।'' वह रोती हुई आगे बोली, ''जब हमने 24 वर्ष पहले विवाह का निर्णय लिया तो मेरे परिवार वालों ने मना कर दिया कि उसका स्तर हमारे योग्य नहीं है। वह तो हमारे दिये दहेज को घर में नहीं रख पायेगा। ऐसे विवाह की फिर कभी चर्चा नहीं करना नहीं तो बुरे परिणाम भोगने पड़ेंगे।''

हमारा परिवार स्थानीय राजा के सामंत परिवार से संबंध रखता था। वे लोग मानते थे कि ऐसे साधारण परिवार में विवाह से उनकी इज्जत में बट्टा लग जायेगा और उनके परिवार की जग हंसाई होगी। उस समय मेरी मां ने हम तीनों बहनों को कभी शादी न करने की शपथ दिलाई थी और सदैव कुंवारी रहने का वचन लिया था। उन्होंने सभी पर पुरुष के अत्याचार के विरोध में यह शपथ दिलाई थी।

हम दोनों एक दूसरे को दिल दे चुके थे। दोनों ने कसम खाई कि यदि विवाह करेंगे तो एक दूसरे से वरना जीवन भर कुंवारे रहेंगे। लड़का अपने तीन भाइयों में बड़ा था। वे भी अच्छे ब्राह्मण थे। उसने अपने बीमार पिता को बचाने के लिए मुझसे अनुरोध किया था कि एक बार मेरे घर चलकर मेरे पिता के सामने बहू बनना स्वीकार कर लें तो वे बच जाएंगे। मैंने ऐसा किया भी और उनके पिता स्वस्थ भी हो गए किन्तु परिस्थितियों से हार मानकर उसने अपने छोटे भाइयों का विवाह कर दिया। उनके आज बड़े–बड़े बच्चे हैं किन्तु वह स्वयं कुंवारा ही है।

मैडम के इस रहस्य को जानकर सरोजनी मैडम ने इस रहस्य का विस्तृत वर्णन प्राचार्य जी से किया तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने लड़के का पता पूछा। पता चला कि लड़का भी केन्द्रीय विद्यालय संगठन में अध्यापन कार्य कर रहा है तो इसे और सहज मानकर लड़के को फोन किया और उससे कहा, ''आप मैडम से शादी के लिये तैयार हैं ?'' लड़के ने कहा, ''सर, मैं एक जन्म क्या, सात जन्म तक मैडम की प्रतीक्षा करूंगा।'' मामला तय हो गया और एक मई को विवाह की तारीख तय हई।

इधर प्राचार्यजी ने विवाह तय तो करा दिया लेकिन जब मैडम के घर वालों का पता चला तो उन्होंने प्राचार्य और शिक्षकों व मैडम को खूब धमकाया और परिणाम भुगतने के लिये कहा। मैडम घबराई और सुबह रोते हुई प्राचार्य जी से कभी विवाह न करने का संकल्प दुहराया। प्राचार्य जी ने कहा, '' आप चिंता न करें, मैं सब व्यवस्था कर लूंगा।'' उन्होंने स्थानीय मंत्री से पुलिस सहायता की बात कर ली। सहायक आयुक्त से विवाह में कन्यादान लेने की और शिक्षकों से मैडम की निगरानी रखने की बात कर ली।

प्राचार्य जी के परिवार ने मातृकुल का सारा कार्य सम्पन्न कराया। हल्दी और उबटन लगवाए। धीरे–धीरे वैवाहिक तिथि नजदीक आ गई। नव दम्पत्ति ने मिलकर कार्ड छपवाया और बिना दहेज के विवाह की व्यवस्था हुई। दोनों ने मिलकर खर्च का भार उठाया। एक तरफ से विद्यालय के शिक्षक

करते थे, दूसरी तरफ के शिक्षक करते थे। [illegible] प्राचार्य जी थे और कन्यादान के लिए सहायक आयुक्त आए हुए थे।

विवाह के दिन मैडम का भाई विवाह प्रारंभ होने के बाद पहुंचा। मैंने समझाया कि आ गए हैं तो बहन का कन्यादान कर लें। आपके तीन लड़के ही लड़के हैं। आप के पिता जी ने भी कन्यादान नहीं किया। वे तैयार हो गये और सोने की एक अंगूठी देकर कन्यादान लिया।

मैडम तीन बहनें थीं और उनके तीन भतीजे उनके दत्तक पुत्र थे। उनकी बहनें सारी कमाई भाई को देती थीं और स्वयं कुंवारी थीं। आज उनके भाई ने कन्यादान करके अपना और शायद अपने परिवार का उद्धार कर दिया था।

इस अनोखे विवाह को शायद सारा समाज और बड़े–बड़े नेत्रों वाले स्वयं जगन्नाथ जी भी देख रहे थे और वे अपने नेत्रों से यह संदेश भी दे रहे थे कि यदि भारत को श्रेष्ठ बनाना है तो ऐसे ही दहेज रहित, स्वाभाविक प्रेम–संबधों को सहर्ष स्वीकार करना होगा तभी हम विश्व को सच्चे प्रेम का संदेश दे सकते हैं और भारतीय संस्कृति की ध्वजा लहरा सकते हैं।

**हरि शंकर द्विवेदी**
केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना,
आमला, जिला : बैतूल, मध्य प्रदेश

**वहां जाकर देखा तो वह पलंग पर पड़ा–पड़ा उछल रहा था। पास में उसकी पत्नी तथा बच्चे फटे कपड़े पहने नंगे पैर खड़े थे। उसका परिवार उसकी बुरी आदतों के कारण हमारे से भी ज्यादा गरीब हो गया था। कुछ समय बाद डॉक्टर ने लाला के ऊपर सफेद कपड़ा डाल दिया और बोला, ''अब ये नहीं रहे।''**

बात उस समय कि है जब मैं दस साल का था। तब से मैं नशे का परिणाम देख रहा हूं। हम बहुत गरीब थे। हमारे पिता जी के पास पास साइकिल थी और खुशी से गुजर–बसर कर रहे थे। हमारे घर के पास कोका कोला की एक बहुत बड़ी दुकान थी। दुकान का मालिक बहुत अमीर था, सब उसे लाला कह कर पुकारते थे।

उसके पास बहुत सारे मकान, गाड़ी और बहुत सी सुख–सुविधाएं भी थीं। मुझे कोका कोला पीने का बहुत शौक था। मैं अपना जेब खर्च कोका कोला पीने में लगाता था। जब मैं कभी रात को कोका कोला खरीदने जाता तो देखता लाला कुछ पी रहा होता। उसके मुंह से बदबू आती थी।

एक दिन मैंने लाला से पूछा, ''लाला, ये आप क्या पी रहे हैं ?'' लाला जी ने कहा, ''यह शराब है।'' मैंने घर आकर पिता जी से पूछा कि यह शराब क्या होती है ? पिता जी बोले, ''यह बहुत गंदी चीज होती है, यह नशा होता है। यह घर बर्बाद कर देती है।''

लाला की एक पत्नी, तीन बच्चे थे। लाला बहुत हृष्ट–पुष्ट था। धीरे–धीरे लाला कमजोर होने लगा। वह शराब के नशे में अपनी पत्नी और बच्चों को मारने लगा। उसका समाज में मान–सम्मान घटने लगा। उसने घर बेच दिया और बीमार रहने लगा। उसकी आदतों से तंग आकर उसकी पत्नी उसे छोड़ कर चली गयी। लाला को तो नशे का भूत सवार था।

एक बार गर्मी के दिनों में मैं सुबह ट्यूशन पढ़ने जा रहा था। मैंने देखा लाला साइकिल पर जा रहा था, थोड़ी दूर जाकर उसने साइकिल शराब की दुकान के पास रोक दी। दुकान तो बंद थी फिर भी आवाज लगाने लगा। थोड़ी देर में दुकानदार बाहर निकला और लाला को गिराकर गाली देने लगा। लाला वहीं गिर गया और दुकान खुलने का इंतजार करने लगा।

कहां तो लाला का पूरे शहर में इतना मान–सम्मान था और कहां आज उसे लाला जी कहना तो दूर, नशे के कारण दुकानदार ने उसका कितना अपमान किया। जब मैं ट्यूशन से वापस आया तो पता चला लाला बहुत बीमार है और उसे अस्पताल ले गये हैं। उसे खून की उल्टियां तथा दस्त लगे थे। शाम को मेरे पिता जी उससे मिलने अस्पताल गये तब मैं भी उनके साथ चल दिया।

वहां जाकर देखा तो वह पलंग पर पड़ा–पड़ा उछल रहा था। पास में उसकी पत्नी तथा बच्चे फटे कपड़े पहने नंगे पैर खड़े थे। उसका परिवार उसकी बुरी आदतों के कारण हमारे से भी ज्यादा गरीब

हो गया था। कुछ समय बाद डॉक्टर ने लाला के ऊपर सफेद कपड़ा डाल दिया और बोला, "अब ये नहीं रहे।''

नशे के कारण ही लाला का सब कुछ बिक गया और जो बचा था वह भी इलाज में खत्म हो गया था। आज लाला के बीवी–बच्चों का पता नहीं है। न वह आलीशान मकान है, न दुकान है, न कार है, न मोटर साइकिल है और न ही लाला प्रेमचन्द्र है। लाला का शहर में कुछ भी नहीं है।

लाला को शहर में लोग प्रेमचन्द्र के नाम से जानते थे। समय–समय की बात है। कहां लाला का मान–सम्मान था, दौलत थी, अच्छा परिवार था परंतु नशे के कारण कुछ भी नहीं रहा। नशा जिन्दगी को बर्बाद कर देता है और नशे का अंत बुरा ही होता है।

**मीनाक्षी ग्रोवर**
पार्थ पब्लिक सी0 सै0 स्कूल,
जी.टी.रोड, घरौड़ा, हरियाणा

**उत्कष के पिता उसकी मा को दहेज के लिये प्रतिदिन प्रताड़ित करते परन्तु जहा चूल्हा बुझने की नौबत हो, वहां पैसा कहां मिले, बेचारी चुप–चाप मार खा लेती। उत्कर्ष की पीड़ा सुनने वाला मैं एकमात्र श्रोता ढांढस बंधाने के अलावा कुछ नहीं कर पाता। दहेज शब्द सुनते ही मुझे उत्कर्ष की मां के जख्म याद आ जाते।**

**स**नसनाती हवा उत्कर्ष के बालों को छू रही थी। दूर छुपता सूरज मानो विदाई की दुहाई दे रहा हो– उसके कांपते पैर, आगे झुकी कमर, पुरानी पहाड़ी की चोटी पर खड़ा कुछ इंतजार–सा करता। मैं चिल्लाया, दौड़ा. . . तब तक उसने छलांग लगा दी। अपने मित्र को मरते देख दिल दहल गया। सब कुछ थम–सा गया।

बचपन के वो दिन याद आते है जब उत्कर्ष ने यहां खड़े होकर कसम खाई थी। उसके वे दहकते शब्द– ''चाहे कुछ भी करना पड़े एक दिन बहुत बड़ा आदमीं बनूंगा। मैं उसकी स्थिति जानता था पर आज की तरह कुछ भी न कर सका।

उत्कर्ष के पिता उसकी मां को दहेज के लिये प्रतिदिन प्रताड़ित करते, परन्तु जहां चूल्हा बुझने की नौबत हो, वहां पैसा कहां मिले, बेचारी चुप–चाप मार खा लेती। उत्कर्ष की पीड़ा सुनने वाला मैं एक मात्र श्रोता। ढांढस बंधाने के अलावा कुछ नहीं कर पाता। दहेज शब्द सुनते ही मुझे उत्कर्ष की मां के जख्म याद आ जाते।

उत्कर्ष पढ़ाई में अच्छा था परंतु भरसक प्रयत्नों के बवजूद प्रथम आने में चूक जाता था। एक दिन परीक्षा कक्ष में एक प्रश्न पर उलझ गया। हल न कर सका, तभी उसने दाहिनी ओर बैठे हुए सहपाठी की कापी से एक हल किया हुआ प्रश्न उतार लिया। इस परीक्षा में वह प्रथम आया। अब उत्कर्ष के हाथ तरकीब लग गयी। वह जमकर नकल करने लगा, फलतः पढ़ाई से ध्यान हटता गया।

अवैध उपायों के सहारे कितने दिन कटते, बार–बार पकड़ा जाता, कक्षा से बाहर निकाल दिया जाता। जो गुरुजनों की आंख का तारा था, वह प्रतिदिन उनसे आंखे चुराता। आखिर वही हुआ जिसका डर था– उत्कर्ष फेल हो गया। घर बैठ गया। घर पर मां की पीड़ा व पढ़ाई छूटने की शर्मिन्दगी से वह मुझसे दूर होने लगा। एक दिन उत्कर्ष को रमेश मिला।

रमेश का काम था आवारा घूमना, मारपीट करना। अब उत्कर्ष का साथी रमेश था। उत्कर्ष की प्रवृत्ति हिंसात्मक होती गयी। मैंने समझाने का बहुत प्रयास किया लेकिन वह नहीं माना। धीरे–धीरे उत्कर्ष रमेश की प्रवृत्ति में विख्यात होने लगा और जल्दी व ज्यादा पैसा कमाने की तरकीब में शामिल हो गया। उस दौड़ में उत्कर्ष तेज भागने लगा। अब वह उत्कर्ष 'भाई' बन चुका था। अधिक अवैध सम्बंध व पैसे के साथ दुश्मन भी बहुत बन गये थे।

उस वर्ष मैं सिविल सर्विस की तैयारी कर रहा था। एक दिन पता चला उत्कर्ष 'भाई' के दुश्मनों ने उसके मां–बाप की हत्या कर दी। जिस मां के कारण पैसों का अंबार लगा रहा था। वही सिर

[illegible]
जमीन पर सिर पटक–पटक कर रो रहा था। दुनिया उसकी अंधकारमय हो गई थी। बढ़ती पीड़ा और एकाकीपन के साथ वह नशे की ओर बढ़ता गया। अब उसका साथी था नशा और सिर्फ नशा। उसकी यह स्थिति देखकर आंखे भर आईं, नम आंखों से मैं घर लौट आया।

कल मेरी परीक्षा का परिणाम आया और मैं उत्तीर्ण हुआ। यह सुनकर उत्कर्ष मेरे घर आया। बहुत दिनों के बाद उसे बदहोशी से बाहर देखा। खुशी छलकती आंखों से उसने मुझे बधाई दी– 'मोहन बधाई हो, तेरा सपना पूरा हुआ। उसने मुझे बधाई दी–बाधई हो तेरा सपना पूरा हुआ। अचानक मेरे मुंह से निकला यह तो तेरा सपना था। चारों तरफ एक चुप्पी सी छा गयी। मैंने उसे बहुत समझाया कि यह सब छोड़ दे परन्तु वह कहां मानने वाला था।

उत्कर्ष की आंखें नम होने लगीं। खुद को समेट कर उसने मुझे फिर बधाई दी और कहा, ''फिर कभी तुम्हे शिकायत का मौका नहीं दूंगा। अगले दिन जब में बाजार से घर लौट रहा था, मैंने उसे पुरानी पहाड़ी की ओर जाते हुये देखा था। जब मैं घर पहुंचा तो मैंने हमारी मित्रता की निशानी लाल रूमाल बिस्तर पर रखा देखा मैं पहचान गया कि उत्कर्ष उसी मित्रता को आज यहां छोड़ गया है। मैं उस रूमाल को देखकर बहुत रोया। मेरी जिन्दगी का अभिन्न अंग था मेरा मित्र उत्कर्ष। मैं उसे कभी भुला नहीं पाऊंगा।

**शैला त्यागी**
मदर टेरेसा राजकीय सर्वोदय
कन्या विद्यालय, कल्याणपुरी,
दिल्ली

**तभी ऐश्वर्या बोली, "मैंने सच्चे मन से आपको चाहा है पर मुझे नहीं पता था कि आप जैसे दिखते हैं, वैसे हो नहीं। क्या आपने कभी सोचा दहेज का लालच इन्सान को कितना गिरा देता है ? मैं ऐसे गिरे हुए इन्सान से शादी नहीं कर सकती चाहे मुझे जीवन भर कुंवारा ही क्यों न बैठना पड़े ?"**

हमेशा की तरह निशीकांत आज भी गंभीर, परंतु शांत दिखाई दे रहा था मानो किसी नतीजे पर पहुंचा हो। निशीकांत पढ़ा–लिखा बी.ई.एम.ए.बी.ए. पास था। वह मुम्बई की कम्पनी में मैनेजर के पद पर कार्यरत था। निशीकांत के परिवार में माता–पिता और बहन सुनयना ये सदस्य थे। सुनयना नाम के अनुरूप दिखने में खूबसूरत, सुशील और बहुत ही विनम्र थी।

आज उसे सॉफ्टवेयर कम्पनी में नौकरी मिली। तनख्वाह भी अच्छी तय हुई। वह भी अपने भाई की तरह इंजीनियर बनी। निशीकांत के पिता जी वृद्धावस्था से गुजर रहे थे। अपनी छोटी बहन के हाथ पीले करने की जिम्मेदारी उस पर ही थी क्योंकि पिता जी सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त हो चुके थे। मां घरेलू कामकाज तक ही सीमित थी।

निशीकांत के घर की स्थिति काफी अच्छी थी। समाज में प्रतिष्ठित और धनिक लोगों में एक इनका भी घर था। निशीकांत हमेशा सोचता था कि बहन के लिए अच्छा वर मिल जाए तो माता–पिता जी की चिंता दूर हो जायेगी। बस वह एक अच्छे वर की तलाश में था।

निशीकांत काफी व्यस्त था। यह अपने परिवार के लिये समय नहीं दे पाता था। निशीकांत ने अब तय कर लिया था कि एक–दो वर्ष में ही अपनी सुनयना का विवाह कर देगा।

निशीकांत का मित्र सुमित उसी की कम्पनी में कार्यरत था। दोनों में गहरी दोस्ती थी। सुमित का परिवार छोटा था। उसके घर में माता–पिता, छोटी बहन इतने ही सदस्य थे। पिता जी डॉ॰ शोभन हृदय रोग विशेषज्ञ थे। मां भी स्त्री रोग की डॉक्टर थी। पिता जी की बहुत इच्छा थी की सुमित डॉक्टर बने और उनका दवाखाना संभाले। पर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। उनका बेटा इंजीनियर बना और बेटी मां की तरह डॉक्टर बनी। डॉ॰ शोभन काफी व्यस्त और धनवान परिवार से थे। उनके भाई मोहन लाल एक कम्पनी के मालिक थे। डॉक्टर शोभन ऊंचे विचारों के पुरुष थे।

आज डॉ॰ शोभन के घर में उनकी 60 वीं वर्षगांठ का समारोह था। उसमें समाज के प्रतिष्ठत लोगों को बुलाया गया था। वे अपना जन्मदिन अलग तरह से मना रहे थे। जन्मदिन के अवसर पर उन्होंने एक शिविर भी आयोजित किया था जिसमें सभी जरूरतमंद लोगों की मुफ्त में हृदय चिकित्सा की थी।

आज कार्यक्रम समाप्त होने पर सुमित ने निशीकांत के परिवार से आपस में परिचय करवाया। दोनों ही परिवार जल्द ही मित्रता के बंधन में बंध गये। फिर क्या था ? हर इतवार को मिलना–जुलना, एक–दूसरे के घर आना–जाना होता था। सुमित की एक चचेरी बहन निशीकांत की कम्पनी में ही काम करती थी। निशीकांत और ऐश्वर्या एक–दूसरे को पसंद करते थे। अचानक निशीकांत की मां को

दिल का दौरा पड़ा। उसे डा० शर्मा के अस्पताल में ले गये। वहां पर आठ–दस दिन इलाज चलने के बाद घर वापस लाया गया।

निशीकांत की मां दोनों का विवाह जल्द ही कर देना चाहती थी। दो तीन रिश्ते भी आये लेकिन निशीकांत ने बात टाल दी और मन की बात मां को बता दी। निशीकांत और सुनयना दोनों का रिश्ता तय हुआ। निशीकांत का ऐश्वर्या से और सुनयना का सुमित से एक तारीख एक दिन तय हुआ।

सब कुछ अच्छी तरह चल रहा था कि अचानक 'दहेज' नामक शत्रु ने ऐश्वर्या के दिल को ठेस पहुंचाई और बात बिगड़ गई, विवाह रद्द हो गया। ऐश्वर्या के पिता दहेज देने को भी तैयार हो गए परंतु स्वाभिमानी ऐश्वर्या इस बात के खिलाफ थी। उसे फिजूल का दिखावा करके शादी नहीं करनी थी। इन बातों को वह बनावटी मानती है जो इन्सान को कमजोरी को छुपाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

इधर सुनयना व सुमित का विवाह भी तय हुआ था। ऐश्वर्या की वजह से उनके विवाह में भी समस्या उत्पन्न हो सकती है, यह सोचकर निशीकांत और उसकी मां दोनों की आंखें खोलने के लिये एक युक्ति अपनाते हैं। सुनयना की शादी के एक दिन पूर्व निशीकांत अपने माता–पिता के साथ सुमित के घर आता है। वहां पर ऐश्वर्या के माता–पिता भी पहले से मौजूद थे। जलपान के पश्चात् सुमित निशीकांत को बहुत ही खरी–खोटी सुनाता है।

सुमित गुस्से में बोला, ''निशीकांत, मैं तुम्हे सच्चा मित्र मानता हूं। रिश्ता तो अपना बाद में तय हुआ, पहले तुम मेरे अच्छे दोस्त हो। आज मैं एक दोस्त की हैसियत से बोलूंगा। आप जैसे इतने पढ़े–लिखे नवयुवक को दहेज की मांग करना शोभा नहीं देता। दहेज समाज के लिए सबसे बड़ा कलंक है। मेरी चचेरी बहन ऐश्वर्या भी तुम्हारे समान पढ़ी–लिखी और अधिक तनख्वाह ले रही है। तुमने उसके साथ खिलवाड़ किया है। तुम्हें पैसों की कोई कमी नहीं फिर भी आज तुम दहेज की मांग करके घटिया बन गए।''

तभी ऐश्वर्या बोली, ''मैंने सच्चे मन से आपको चाहा है पर मुझे नहीं पता था कि आप जैसे दिखते हैं, वैसे हो नहीं। क्या आपने कभी सोचा दहेज का लालच इन्सान को कितना गिरा देता है ? मैं ऐसे गिरे हुए इन्सान से शादी नहीं कर सकती चाहे मुझे जीवन भर कुंवारा ही क्यों न बैठना पड़े ?''

दोनों की डांट व अपनी बहन का रिश्ता टूटते देख निशीकांत के पैरों तले जमीन खिसक गई। उसे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। इतने में सुमित कहता है, ''मैं ऐसे इन्सान की बहन से कैसे शादी कर सकता हूं जिसका भाई दहेज प्रथा की बीमारी से ग्रसित हो।''

निशीकांत सुमित के पैरों पर पड़कर गिड़गिड़ता है, मिन्नतें करता है। अपनी बहन के जीवन की भीख मांगता है। सुमित बोला, ''ऐश्वर्या भी किसी की बहन है, ये कैसे भूल गये तुम?''

[illegible]
दिन देखकर दोनों का विवाह बिल्कुल सामान्य रूप से संपन्न होता है। कुछ वर्ष बीतने पर निशीकांत के पुत्र सोहन की पाठशाला में 'बाल दिवस' के अवसर पर निमंत्रित किया। वहां पर उन्होंने 'दहेज प्रथा' विरोधी भाषण दिया और उसके पश्चात् उपस्थित विद्यार्थियों से यह प्रतिज्ञा करवाई की हम सब विद्यार्थी यह शपथ लेते हैं कि हम बड़े होकर विवाह के समय दहेज नहीं लेंगे और जो दहेज लेगा, उसके खिलाफ आवाज उठायेंगे। दहेज प्रथा बहुत ही बुरी प्रथा है। इसका समाज में हम खंडन करेंगे। हम छात्राएं दहेज मांगने वालों से विवाहबद्ध नहीं होंगी। हम सभी विधार्थी अणुव्रत के आचरणों का पालन करेंगे। दहेज लेने वालों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करेंगे। हम विवाह में दिखावा करके नाहक खर्च नहीं करेंगे। विवाह का बनावटी शान–शौकत का पैसा बचाकर जरूरतमंद विद्यार्थियों की मदद करेंगे।''


**विजया सुभाष महाजन**
ध. ना. चौधरी बहुउद्देशीय
विद्यालय,
डोंबिवली पूर्व, महाराष्ट्र


27

## पश्चाताप

**कहत हैं कि इतिहास स्वय को दोहराता है। आज फिर वही घटना मेरी बेटी की मौत बनकर मेरे सामने है। सुहाना को आज नकल के आरोप में विद्यालय से निकाल दिया गया है। सुहाना यह सदमा सहन नहीं कर पाई और उसने अपनी दोनों कलाइयों की नसें काटकर आत्महत्या करने की कोशिश की है।**

रात के तीन बज रहे हैं। मैं आसू भरी आंखों से ऑपरेशन थियेटर की ओर टकटकी लगाये देख रही हूं। अंदर मेरी सोलह वर्षीय बेटी सुहाना का इमरजेन्सी ऑपरेशन होना है। सभी डाक्टर जवाब दे चुके हैं, सभी का कहना है कि डॉ. अंजू ही मेरी बेटी की जान बचा सकती हैं।

मुझे बार–बार लग रहा था कि मेरी बेटी बचेगी नहीं। अपने ऊपर से नियंत्रण खोकर एक बार मैं फिर जोर–जोर से रोने लगी। अचानक किसी ने मेरे पीछे से आकर मेरे कंधे पर हाथ रखा, मैंने पलटकर देखा तो दंग रह गयी। यह तो मेरी बहन अंजू थी। अंजू ने मुझे गले से लगा लिया और बोली, ''दीदी, हौंसला रखो, ऑपरेशन जरूर सफल होगा। मैं आ गई हूं ना !'' कहते हुये वह मेरी पीठ सहलाकर मुझे आश्वस्त करने लगी।

अंजू का सहारा मिलते ही मेरा रोना तो रुक गया पर मेरा मन गहन दुख के साथ–साथ आत्मग्लानि और अपराधबोध के तीव्र अहसास से भरता जा रहा था। सुहाना की चिंता के साथ–साथ इस वक्त मुझे अतीत में किये गये अंजू के साथ अपने कुकृत्य भी याद आ आकर रुला रहे हैं। आज मैं चाहकर भी आपनी काली करतूतों की यादों को दूर नहीं धकेल पा रही हूं।

अंजू मेरी सौतेली बहन थी। रंग–रूप, पढ़ाई तथा घर के अन्य कार्यों में वह मुझसे बेहतर थी। सभी आने–जाने वाले उसी की प्रशंसा करते थे। करते भी क्यों नहीं, अपनी मेहनत और लगन से वह दो कक्षा छोड़ कर मेरे साथ आ गई थी और मेरी ही कक्षा में पढ़ती थी। इसी बात ने बचपन से ही उसके प्रति मेरे मन में ईर्ष्या का बीज बोया था।

बचपन में ऐसी न जाने कितनी ही घटनायें थीं जिनकी वजह से अंजू को गलती न होने पर भी पापा से डांट खानी पड़ी तथा नीचा देखना पड़ा था। युवावस्था तक आते–आते मैंने चालाकी का दामन मजबूती से थाम लिया था और इसी के कारण मैं अंजू को दुःखी व परेशान करने का मौका अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहती थी। पर न जाने वह किस मिट्टी की बनी थी कि पलटकर मुझसे लड़ती–झगड़ती नहीं थी।

दसवीं बोर्ड की परीक्षा अंजू ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और मेरी बहुत कोशिश करने पर भी प्रथम श्रेणी न आ सकी। अब तो सभी लोग अंजू की बुद्धिमत्ता की तारीफ करते।

अंजू को किसी भी कारण से मुझसे ज्यादा महत्व मिले, यह मुझसे सहन नहीं होता था। शायद इसी कारण अपनी चिढ़ और द्वेष का शिकार हो मैं अट्ठारह वर्ष की कच्ची उम्र में ही गोपाल नाम के लड़के के चक्कर में फंस गयी। अंजू के लाख बार समझाने पर भी, कि गोपाल अच्छा लड़का नहीं है, मैंने उसकी बात नहीं मानी बल्कि क्रोधित स्वर में उसे जवाब दिया, ''गोपाल और मेरी जोड़ी देखकर तुम जल रही हो। मैं तो उससे दोस्ती रखूंगी, तुम अपनी हिदायत अपने ही पास रखो।''

''दीदी ! गोपाल के साथ मैं तुम्हें अपनी जिन्दगी बर्बाद नहीं करने दूंगी।'' ऐसी चेतावनी देने के बाद अंजू ने मम्मी–पापा से मेरी शिकायत कर दी।

डांट और मारपीट के जोर पर मैं गोपाल से दूर तो कर दी गई पर अंजू के प्रति मेरी नफरत बहुत बढ़ गई थी। अंजू से उसके किये का बदला मैंने बारहवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में ही ले लिया था।

आज भी मुझे याद है उस दिन हमारी अंग्रेजी की परीक्षा थी। सभी लड़कियां परीक्षा देने में व्यस्त थीं। कक्षा–निरीक्षक दो चार चक्कर लगाकर कुर्सी पर बैठ गये थे। तभी हमारे कक्ष में उड़न दस्ते ने प्रवेश किया। वे एक–एक कर सब लड़कियों की तलाशी ले रहे थे। मेरे मन में अंजू को सबक सिखाने का उपाय आया। मैंने नकल की पर्ची, जो कि अपने लिये लाई थी, अंजू की तरफ उछाल दी।

अंजू अपने काम में इतनी व्यस्त थी कि वह चिट देखकर हड़बड़ा गई और उसे खोलकर पढ़ने लगी। तभी उड़न दस्ते के एक सदस्य की नजर उस पर गई। उसने अंजू के हांथ से चिट ले ली व नकल करने का आरोप लगाने लगा। अंजू उससे बार–बार अपने बेगुनाह होने की दलील देती रही परन्तु वह मानने को तैयार नहीं हुआ।

अंजू ने जिस अपमान और पीड़ा से मेरी तरफ देखा था तो मेरा खुशी से नाचने को मन कर रहा था। आखिर अंजू को नकल करने के जुर्म में पकड़े जाने पर न केवल उस परीक्षा से हाथ धोना पड़ा वरन् उसे तीन साल तक परीक्षा में प्रतिबंध का दण्ड भी भुगतना पड़ा।

अंजू के विद्यालय से निष्कासित किये जाने का दुःख पापा सहन न कर सके और चल बसे। दो वर्ष बाद मां ने मेरी शादी की और वह भी चल बसी। अपने द्वेष व ईर्ष्या के कारण मैंने कभी अंजू के बारे में जानने की कोशिश नहीं की। आज उसे डॉक्टर के रूप में देखकर में हतप्रभ थी।

कहते हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता है। आज फिर वही घटना मेरी बेटी की मौत बनकर मेरे सामने है। सुहाना को आज नकल के आरोप में विद्यालय से निकाल दिया गया है। सुहाना यह सदमा सहन नहीं कर पाई और उसने अपनी दोनों कलाइयों की नसें काटकर आत्महत्या करने की कोशिश की है।

आज मुझे अपने किये की सजा मिलेगी, ऐसा कहते हुए मेरी आत्मा मुझे बार–बार धिक्कार रही है। अपनी करनी पर इस वक्त बुरी तरह पछता रही हूं मैं। ईश्वर मेरी जान लेकर सुहाना की जान बख्श दे, इसके लिये मैं तैयार हूं परंतु मैं जानती हूं कि ईश्वर मेरी प्राथना नहीं सुनेगा। अपराधबोध से तड़पती मैं अपनी बच्ची के बिना ही जिऊं वो यही सजा देगा मुझे।

सुबह पांच बजे एकाएक ऑपरेशन थियेटर का दरवाजा खुला। अंजू का सुस्त और थका हुआ चेहरा देखकर मैं रोते हुये भागी, ''अंजू...अंजू मेरी सुहाना नहीं रही न...मैंने उसकी जान ले ली।''

''ऐसे बुरे बोल मुंह से न निकालो दीदी, भगवान ने हमारी प्रार्थना सुन ली है। सुहाना अब खतरे से बाहर है।''

''प्रार्थना मेरी नहीं, तेरी स्वीकार की है भगवान ने। तू ही तो इतनी उदार और निर्मल हृदय की स्वामिनी है। मुझे मेरे द्वारा किये गये कृत्यों के लिये माफ कर दे अंजू।'' मैं उसके पैर पकड़कर रोने लगी।

''रोओ मत दीदी ! आप तो मेरी बहुत अच्छी दीदी हो।'' मुझे उठाकर अंजू मेरे आंसू पोंछते हुए कहने लगी, ''देखो दीदी, जो बीत गया वह वापस आ नहीं सकता। आप बड़ों के आशीर्वाद और अपनी मेहनत के बल पर आज आपकी छोटी बहन एक डॉक्टर बन गई है। आप तो मुझसे बस एक ही वादा कीजिये कि आप सुहाना को कभी भी परीक्षा में गलत उपायों का प्रयोग न करके ईमानदारी और मेहनत से पढ़कर एक अच्छा इन्सान बनाने में उसकी मदद करेंगी। हां, उसे मुझ जैसी मजबूत इरादे वाली जरुर बनाना।''

मेरे आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। आंसुओं के साथ वर्षों से भरे मेरे दिल में ईर्ष्या, द्वेष का जहर भी बाहर आ रहा था और समझ आ रहा था कि परीक्षा में गलत उपायों का प्रयोग करना या परीक्षा के समय किया गया मजाक किसी के लिये जानलेवा भी हो सकता है। काश ! यह बात मुझे जल्दी समझ आ जाती।

**शैलजा सिंह**
अशोक मैमोरियल पब्लिक स्कूल,
फरीदाबाद, हरियाणा

**गोपू की शिकायतें दिन–प्रतिदिन बढ़ने लगी। आखिर तंग आकर स्कूल के प्रधानाचार्य ने संध्या और अमित को बुलाकर उसकी शिकायत की। माता–पिता की उपस्थिति में यह सुनकर गोपू लाल–पीला होने लगा। अपने अहं की आग में जलते हुए गोपू ने कुसंगति की शरण ली।**

शहर की पढ़ी–लिखी संध्या गांव के वातावरण और रहन–सहन से सन्तुष्ट न थी, इसलिये गांव को छोड़कर उसने अपने पति अमित के साथ शहर में रहने का निर्णय लिया। गांव में अपने व्यापार को पीछे छोड़ आये अमित ने आजीविका के लिये दिन–रात एक कर दिया।

इसी बीच उनके एक पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम गोपू रखा गया। अमित ने व्यापार में भी दिनदोगनी रातचौगनी तरक्की की। संध्या क्षण भर के लिये भी गोपू को आंखों से ओझल नहीं होने देना चाहती थी। गांव के वातावरण से दूर रहकर आधुनिक सभ्य समाज में बेटे का पालन–पोषण करना उसका सबसे बड़ा सपना था। अतः बेटे को शहर के प्रसिद्ध अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में दाखिला दिलवाने के लिये उसने कोई कसर नहीं छोड़ी। अमित का भी एकमात्र ध्येय अपने व्यापार को बढ़ाना और परिवार के लिये उत्तम साधन जुटाना बन गया था।

गोपू पढ़ाई में निपुण था परन्तु शरारती भी बहुत था। संध्या का मानना था कि बच्चों के बौद्धिक और मानसिक विकास के लिये अति आवश्यक है कि उनके द्वारा किये गए किसी भी कार्य को न रोका जाए। इन्हीं विचारों के अनुसार ममतामयी संध्या अपने बेटे के किसी भी क्रिया–कलाप में रोकटोक नहीं करती थी। इसलिये गोपू की प्रत्येक इच्छा को पूरा किया जाता था। अगर वह छोटे–बड़े के समक्ष बेबाक होकर बोलता तो माता पिता द्वारा इसे उसकी निपुणता समझकर उसे प्रोत्साहित किया जाता।

संध्या और अमित ज्योतिषियों से अत्यंत प्रभावित थे। गोपू द्वारा परीक्षा में अच्छे अंक लाने, प्रतियोगिताओं में भाग लेने और पुरस्कार प्राप्त करने के पीछे ज्योतिषी द्वारा बताये गये उपाय का ही परिणाम समझते थे। गोपू में आत्म विश्वास इतना प्रबल हो गया कि उसके बेबाकपन के साथ–साथ अहंकार भी उसके व्यक्तित्व में समा गया।

आम लोगों से सीधे मुंह बात न करना उसकी आदत बन चुकी थी। यहां तक माता पिता के विचार और उनकी संगति भी उसे अच्छी नहीं लगती थी। उसकी मित्रता उच्च वर्ग के परिवार के लड़को से हो चुकी थी। संध्या और अमित भी उसकी संगति पर गर्व करते थे। परन्तु मन के किसी कोने में पति–पत्नी को यह डर भी सताता कि गोपू कहीं कुसंगति में न पड़ जाये।

समय का पहिया घूमता गया और गोपू लड़कों की गुटबाजी में पड़कर मार–पिटाई करने लगा। परिणामतः गोपू के परीक्षा में बहुत कम अंक आए। जब स्कूल अध्यापिका ने अमित और संध्या से गोपू के विषय में बात की तो पति–पत्नी ने अध्यापिका को प्यार से समझाने की सलाह दी परन्तु स्वयं परेशानी की हालत में ज्योतिषी के उपाय के अनुसार दान–पुण्य में धन जुटाने लगे लेकिन सब व्यर्थ रहा।

गोपू की शिकायतें दिन–प्रतिदिन बढ़ने लगी। आखिर तंग आकर स्कूल के प्रधानाचार्य ने संध्या और अमित को बुलाकर उसकी शिकायत की। माता–पिता की उपस्थिति में यह सुनकर गोपू लाल–पीला होने लगा। अपने अहं की आग में जलते हुए गोपू ने कुसंगति की शरण ली। धीरे–धीरे नशा और चोरी की आदत ने उसे बुरी तरह जकड़ लिया।

एक दिन नशे की हालत में गोपू अपने दोस्तों के साथ कार में सवार था। अचानक किसी की कार उसकी कार के समक्ष आ गयी। बात अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हुये आगे बढ़ गई। गोपू की हिंसात्मक प्रवृत्ति रंग लाई। उसने अपने साथियों के साथ मिलकर कार में सवार व्यक्तियों को बुरी तरह से घायल कर दिया। गोपू तथा उसके साथियों को पुलिस ने पकड़ लिया। अंत में अमित उसे जमानत पर छुड़वा लाया।

संध्या और अमित ने उसे कुसंगति त्याग कर, जीवन में अच्छा इन्सान बनने के लिये बड़े प्रेमपूर्वक प्रेरित किया। साथ ही साथ ज्योतिषी जी द्वारा बताई गई अंगूठियां भी उंगलियों में पहना दीं। लेकिन कुसंगति का प्रभाव माता–पिता के प्यार को समझने में असमर्थ रहा। वह हमेशा आग–बबूला रहता तथा जिन्दगी में किसी के समक्ष न झुकने का उसने मन ही संकल्प कर लिया था।

एक दिन संध्या और अमित ने गोपू के व्यवहार से तंग आकर जैसे ही थोड़ा ड़ांटा तो वह उन पर भी हाथ उठा बैठा। बेटे के गुस्से को देखकर पति–पत्नी सहम गये। उनके मन में यह डर भी बैठ गया की कहीं गोपू गुस्से में कुछ कर न बैठे। इसलिये पति–पत्नी ने उसे रोकना–टोकना बंद कर दिया। परिणामतः गोपू कि संगति आवारा लड़कों से बढ़ती गई। देर रात तक घर न आना, नशा करना उसकी आदत बन चुकी थी।

नशे में धुत्त जब देर रात वह घर आता तो चिंतित मां उसके इंतजार में बैठी होती। भगवान से उसके सुख की कामना करती। उसके देर से आने पर थोड़ा गुस्सा दिखाती, फिर प्यार से खाना खिलाती थी। कई बार तो गोपू कई दिनों तक घर वापस नही आता था।

समय बीतता गया। अमित और संध्या के समक्ष ज्योतिषी की शरण में जाने के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं था। अतः ज्योतिषियों को घर बुला कर गोपू के ग्रह शांत करवाने के लिए उन्होंने हवन करवाना आरम्भ किया। अभी हवन समाप्त हुए कुछ ही दिन बीते थे एक सुबह संध्या और अमित ने अखबार के पहले पृष्ठ पर गापू की उसके मित्रों के साथ तस्वीर को देखा। उसके साथ ही की गई डकैती की खबर से उनके पैरों तले जमीन खिसक गई।

इस घटना से संध्या और अमित का ज्योतिषी पर से विश्वास उठ गया। बेटे के वियोग में संध्या बीमार पड़ गई। गोपू और उसके साथियों पर एक के बाद एक केस पड़ते गये तथा मां की मृत्यु हो गई।

जब पांच साल बाद गोपू जेल की सजा काट कर बाहर आया तो मां की चिता को अग्नि न देने का प्रायश्चित करने के सिवा उसके पास कुछ न था। पिता वकील को पैसे देने के लिये अपना सब कुछ लुटा चुके थे। अपने कुकर्मों का पश्चाताप करते हुए पिता के चरणों से लिपट कर वह रोने लगा, ''मुझे क्षमा कर दो। मैं मादक तथा नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा, तोड़फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।''

**डॉ. मधु कौशल**
अवर लेडी ऑफ फातिमा कान्वेंट स्कूल,
पटियाला, पंजाब

**छुट्टी की घंटी बज चुकी थी, छात्र कक्षा से बाहर जाने लगे परंतु मुन्ना रुका रहा। टीचर भी बैठी थी। मुन्ना टीचर के पास आया और मद्धिम आवाज में बोला, " टीचर, आज आपसे मेरी मां जैसी महक आ रही है। टीचर की आंखें भर आईं और मुन्ना को छाती से लगा लिया। टीचर की आंखों से अश्रु बह रहे थे परंतु मन में ममता का सागर हिलोरे ले रहा था।**

बादलों को देखकर मोर को, बसंत में कोयल को, लहलहाती फसलों को देख किसान को जो खुशी होती है, वही खुशी होती थी मुन्ना की मां को मुन्ना को देखकर । मुन्ना अपनी मां का इकलौता बेटा था। मध्यम वर्ग का परिवार, आय के साधन सीमित, पिता का दो वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो चुका था, मां किसी तरह अपने को संयत कर मुन्ना को पढ़ा–लिखा रही थी।

मुन्ना जिस सरकारी स्कूल में पढ़ता था, उसके प्राचार्य ने एक परंपरा चला रखी थी कि प्रत्येक छात्र का प्रथम कक्षा से ही रिकार्ड रखा जाता था ताकि किसी भी छात्र के दिग्भ्रमित होने पर उसकी समस्या का कारण ढूंढकर निवारण किया जा सके।

मुन्ना प्रथम से द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ कक्षा में आया तो अचानक उसकी मां बीमार पड़ गई। उपचार से लाभ होने की बजाय हालत और बिगड़ती चली गई, शायद विधाता को कुछ और ही मंजूर था।

अचानक उसकी मां की हालत बिगड़ी तो ऐसी बिगड़ी कि एक हिचकी के साथ ही सांसें थम गईं। मुन्ना के सर से ममता का साया हट गया। अब तो केवल धूप ही धूप का सफर शेष लगने लगा था मुन्ना को।

मां के अन्त के साथ ही मुन्ना पूरी तरह से टूट चुका था क्योंकि ममता, दुलार, वात्सल्य का वही एक स्त्रोत था जो काल की क्रूरता के कारण सूख चुका था। आज उसमें स्नेह का प्रवाह नहीं, सूनेपन का सन्नाटा मात्र रह गया था।

मुन्ना की देखरेख नाते–रिश्तेदार कर रहे थे। एक खालीपन लिए मुन्ना स्कूल जाता। अब न वह पहले की तरह अव्वल आता था, न ही पहले की तरह व्यवहार करता। पहले जैसा सबसे हंसता–बतियाता भी नहीं था। वह तो पत्थर की मूर्ति की तरह जड़ हो गया था। कोई साथी विद्यार्थी उससे बोलता तो मुन्ना आक्रोशित हो जाता था। इस कारण विद्यार्थियों ने उससे बोलना तक छोड़ दिया था।

समय बीतता गया। मुन्ना आक्रामक एवं हिंसक होता चला गया। और तो और एक दिन तो हद हो गई जब जरा सी बात पर मुन्ना ने पत्थर मार कर एक साथी छात्र का सिर फोड़ उसे लहूलुहान कर दिया था।

प्राचार्य ने मुन्ना की बढ़ती शिकायतों से परेशान होकर उसे स्कूल से निकालने का निर्णय ले लिया और उसकी कक्षा अध्यापिका को बुला इस संदर्भ में उसकी सहमति मांगी।

टीचर नई–नई आई थी, अतः उसने यही कहा, "सर ! पहले मैं मुन्ना का पिछला रिकार्ड पढ़ना चाहती हूं क्योंकि बिना पूर्व इतिहास जाने हम वर्तमान में निर्णय नहीं ले सकते।" प्राचार्य ने दो दिन का समय दे दिया।

नई टीचर ने मुन्ना की पहली कक्षा से लेकर जब तक की सारी फाइल पढ़ी तो उसे आश्चर्य की ठिकाना नहीं रहा। पहली कक्षा से लेकर तीसरी कक्षा तक तो लिखा था कि मुन्ना एक प्रतिभाशाली छात्र है, पढ़ने में तथा अन्य गतिविधियों भी में सबसे आगे है। यह एक विचित्र प्रतिभावान छात्र है परंतु चौथी कक्षा की टीचर की फाइल में कुछ और ही लिखा था। पूर्व टीचर ने लिखा था कि जब से मुन्ना की मां का देहांत हुआ है, वह हिंसक हो गया है, शायद मां का प्यार नहीं मिलने के कारण संभवतया ऐसा ही हो रहा है। नई टीचर को बात समझ में आ गई।

नई टीचर ने प्राचार्य से मुन्ना के लिये एक सप्ताह का समय मांगा और क्लास में चली गईं। दूसरे दिन टीचर का जन्म दिन था। इस बात का बच्चों को पता था। वे अलग–अलग गिफ्ट्स लाए थे। टीचर ने एक–एक कर बड़े स्नेह से बच्चों से उनके गिफ्ट्स स्वीकार किए और अंत में उठा मुन्ना। उसके हाथ में पुराने मनकों की माला एवं आधा खाली परफ्यूम का डिब्बा था। सारी कक्षा के छात्र मुन्ना के गिफ्ट को देखकर जोर से हंसे परंतु टीचर की मार्मिक भाषा ने उन सभी को चुप करा दिया। उसने मुन्ना को अपने पास बुलाया, उसका लाया मनकों का हार पहना, उसके लाए परफ्यूम को लगा डिब्बा अपने बेग में रख लिया।

छुट्टी की घंटी बज चुकी थी, छात्र कक्षा से बाहर जाने लगे परंतु मुन्ना रुका रहा। टीचर भी बैठी थी। मुन्ना टीचर के पास आया और मद्धिम आवाज में बोला, '' टीचर, आज आपसे मेरी मां जैसी महक आ रही है। टीचर की आंखें भर आईं और मुन्ना को छाती से लगा लिया। टीचर की आंखों से अश्रु बह रहे थे परंतु मन में ममता का सागर हिलोरे ले रहा था।

टीचर ने मुन्ना से उस का हाल जाना। उसे अपने पास रख पढ़ने की प्रेरणा से प्रेरित किया। अब मुन्ना को नई टीचर का संरक्षण मिल गया था। मुन्ना बीते कल को भूल आज्ञाकारी बन गया। कल का हिंसक मुन्ना आज का आज्ञाकारी, विनम्र और अनुशासित विद्यार्थी बन चुका था। सारा विद्यालय आश्चर्यचकित था कि अचानक यह परिवर्तन कैसे हुआ ? किसी को मालूम नहीं हुआ की टीचर ने मुन्ना में कैसे परिवर्तन कर दिया।

मुन्ना की जरूरत को देखकर टीचर ने स्कूल से इस्तीफा दे दिया। घर पर बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती, मुन्ना को समय देती और अपनी गृहस्थी की जिम्मेदारी संभालती। उनके पतिदेव भी उनके इस काम में उनका सहयोग करने लगे।

साल दर साल बीतते गये। मुन्ना पढ़ते–पढ़ते देश के अच्छे मेडिकल कालेज में प्रवेश पा गया। स्कॉलरशिप मिली मुन्ना को। वह हास्टल में रहने लगा। टीचर से मुन्ना का पत्र व्यवहार होता रहता था। धीरे–धीरे पत्र आने बंद हो गए परंतु टीचर खुश थी की भविष्य में उसका एक शिष्य डाक्टर बन जायेगा।

लंबे अरसे बाद टीचर के घर एक पत्र आया। टीचर चश्मा लगा पत्र पढ़ने लगी। लिखावट जानी–पहचानी लग रही थी। लिखा था, 'टीचर आपके स्नेह, ममता एवं वात्सल्य से प्रेरित हो मैं

डॉक्टर बन गया हूं। अपनी पढ़ाई में सबसे पहली मिली है मुझे। मैं शहर के सबसे बड़े अस्पताल में सरकारी डॉक्टर के पद पर नियुक्त हो गया हूं। अगले सप्ताह मेरी शादी है। मेरे मां–बाप हैं नहीं, मेरी अभिलाषा है कि आप मेरी शादी में मेरी मां की तरह शामिल हों ताकि मैं अपने आप को अकेला, असहाय, अनाथ महसूस न करूँ। आशा है आप मेरी इस इच्छा को जरूर–जरूर पूरा करेंगी। मैं आपका इंतजार करूंगा !..... .. मुन्ना।

पत्र पढ़कर टीचर बेहद खुश हुई, शादी में शामिल हुई। शादी वाले दिन उसने मुन्ना का दिया हुआ पुराने मनकों का हार पहना, उसका दिया परफ्यूम लगाया। भावुक मुन्ना जिसे सभी डॉक्टर साहब कहकर पुकार रहे थे, अपनी टीचर के गले लग कर बोला, ''आपने मुझे गर्त में डूबने से बचाया और इस मुकाम तक पहुंचाया। आपके इस भरोसे एवं मेहनत के लिए शुक्रिया।''

टीचर ने उसी भावुक अंदाज में जवाब दिया, ''मुन्ना ! मैं तुम्हें बताना चाहती हूं कि मैंने तो तुम्हें बहुत कम सिखाया। वह तुम्हीं हो जिसने मुझे सिखाया कि असल में टीचर के रूप में मैं क्या कर सकती हूं। शुक्रिया!''

**दीनदयाल सोनी**
बख्शीज स्प्रिंगडेल्स सी0 सै0 स्कूल,
बोरखेड़ा कोटा, राजस्थान

**एक दिन अचानक ऑफिस से लौटते हुए मेरी नजर आगन के किनारे एक छोट से पौध पर पड़ी। पता नही कैसे वो वहाँ पर उग आया था। धीरे धीरे उसने अपनी बाहें ऑगन तक फैलाने शूरू कर दी और हमने इस पेड़ को हटाने का प्रण कर लिया। बच्चे इसकी छाल को छील कर अपना नाम गोदने लगे। तने पर कई कीलें ठोंक दी।**

''**मां**. . .मां बहुत भूख लगी है, जल्दी से कुछ खाने को दो।'' कहते हुए सृष्टि ने बैग को फेंका और मेज पर पड़ी फलों की टोकरी में से अमरूद व चीकू निकालकर खाने लगी। ''वाह ! कितने मीठे फल हैं, कहां से लाए ?'' सृष्टि ने पूछा। मैंने हंसते हुए कहा, ''लाऊंगी कहां से, अपने ही बगीचे के हैं।''

सच मां इतने मीठे चीकू मैंने कभी नहीं खाए।'' कहकर सृष्टि खाना खाने लगी। सच में ऑफिस में नौकरी करते–करते इतना समय ही नहीं बचता कि आप बगीचे की तरफ ध्यान दे पाओ। माली भी बस नाम के लिए था किन्तु पता नहीं क्या खासियत थी कि इस जमीन में सभी पेड़ बहुत ही अच्छी तरह फल–फूल रहे थे। मौसम में इतना फल देते थे मानो हमारे यहां उगने व बढ़ने का ऋण चुका रहे हों। कई बार सोचती थी कि यह कैसा संबध है ?

एक दिन अचानक ऑफिस से लौटते हुए मेरी नजर आंगन के किनारे एक छोटे से पौधे पर पड़ीं। पता नही कैसे वो वहाँ पर उग आया था। धीरे धीरे उसने अपनी बाहें ऑगन तक फैलाने शूरू कर दी और हमने इस पेड़ को हटाने का प्राण कर लिया। बच्चे इसकी छाल को छील कर अपना नाम गोदने लगे। तने पर कई कीलें ठोंक दी। टहनीयों पर झोले लगा दिये। पेड़ के नीचे धुंआ कर दिया जिससे पक्षी न आएं। लेकिन वो पेड़ तो मानो संत की तरह विषपान करता रहा और मुस्कुराते हुए बढ़ता गया। उसके इस व्यवहार से हमने झुंझलाकर उसकी बढ़ती टहनियों को काट दिया व उस की जड़ें तक खोद डाली परन्तु मानो उसने सब कुछ चुपचाप सहने की कसम खा रखी थी।

हमारे इस दुव्यर्वहार से उस पर असर तो नहीं पड़ा लेकिन इस बात का असर अन्य पौधों पर जरुर पढ़ा। मानो सभी पौधे ने इसका बदला लेने की ठान ली। अचानक चीकू मुरझाने लगे, अमरूद में भी कीड़े पड़ गये, अंगूरों की बेलें सूख गईं यहां तक कि सब्जियों में भी कीड़े पड़ गये और दूब तक पीली पड़ गयी। इस तरह सारा परिवार हैरान रह गया। हमने माली को भी खूब सुनाई और अच्छी खाद, रसायनिक उर्वरकों का इस्तमाल करना प्रारंभ कर दिया। किन्तु किसी प्रकार का फर्क नजर नहीं आया। सभी प्रकार के प्रयत्न करके देख लिए किन्तु कोई भी सुखद परिणाम सामने नही आ रहा था। मानो सभी पौधों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ कर दिया था।

एक दिन खिड़की के पास बैठी हुई मेरी नजर ऑगन के उस पेड़ पर गई तो ऐसा लगा कि उस पेड़ की विशालता के आगे हम सब कितने छोटे हैं। हमने उस पेड़ के साथ कितना दुर्व्यवहार किया और वो फिर भी हमे छाया दे रहा हैं। अभी भी ताजी हवा जो हमारी प्राणदायनी है।

उसे निरंतर हमें प्रदान कर रहा है। यह सोचकर मेरा मस्तक शर्म से झुक गया गया और मैं धीरे – धीरे उठकर उस पेड़ के पास पहुंच गयी और प्यारसे उसे सहलाने लगी। मन ही मन मैं उससे माफी

किया हो। मैं इस परिवर्तन के कारण को समझ गयी। सभी पेड़ पौधे मेरे इस निर्णय से खुश थे।

अपने इस निर्णय से मेरा भी मन बहुत प्रसन्न था। सच में हम अपने स्वार्थ के लिये पेड़ों का मनचाहे ढ़ंग से दुरूपयोग  करते हैं। यह पेड़ पौधे निस्वार्थ हमें फल फूल दवाईयाँ लकड़ी आदि देते हैं। वातावरण को प्रदुषण से बचाते है। हमें जीवन देने वाली ऑक्सीजन प्रदान करते है और बदले में हम इनका प्रयोग अपने ढ़ंग से करते हैं। कितने स्वाथी है हम लोग। इन पेड़ पौधो से हमें सीखना चाहिये कि कैसे बिना स्वार्थ के दूसरों की सेवा करनी चाहीये। आज मेरी बगीया फल–फूल से महक रही है और वो पेड़ आज हम सबका चहेता है।


**करूणा सेठ**

रा0 स0 क0 विद्यालय,

कल्याणपुरी, दिल्ली

# अब पछताए होत क्या...?

**वीर अपनी मर्जी का मालिक था। जब तक मन करता, वह नौकरी करता और फिर छोड़ देता। इससे परिवार की आर्थिक हालत भी बिगड़ जाती थी। नौकरी छोड़ने के बाद वीर शराब के लिये दोस्तों से कर्ज लेता था और रात को शराब पीकर आता और चुपचाप सो जाता। मां सोचती शायद वीर की तबीयत खराब है।**

वीर नाम का एक लड़का था। वह दिखने में सुन्दर एवं तन्दरूस्त था। वह बहुत मेहनती एवं स्वाभीमानी था। परिवार में दादी, मां, पिताजी और चार बहनें थीं। इसलिये वह सभी का प्रिय था। वीर पढ़ाई में भी अव्वल था। वीर के पिताजी एक सज्जन व्यक्ति थे, इसलिये मौहल्ले वाले उन्हें बहुत सम्मान देते थे। उनकी आमदनी कम थी पर कम आमदनी होने के बावजूद यह परिवार हमेशा खुश रहता था।

वीर शौकिया मीजाज था। उसका सपना था की वह बड़े होकर सफल उद्यमी बनेगा तथा बहुत धन कमायेगा। वीर बड़े–बड़े सपने देखने लगा। वीर जिस मकान में रहता था, मकान मालिक के बेटे से उसकी गहरी दोस्ती थी। मकान मालिक उसे अपने बेटे जैसा मानते थे।

वीर गर्मियों की छुट्टियों में कपड़े की दुकान पर काम करता था जिससे परिवार को आर्थिक सहयोग मिल जाता था। दिन भर काम करने के बाद वह रोजाना शाम को दोस्तों के साथ घूमता, पिक्चर देखने व होटलों में जाता था। वीर का ज्यादातर समय दोस्तों के साथ बीतता था। इसका नतीजा यह हुआ कि वह मादक पदार्थों का सेवन करने लगा। वीर की दोस्ती एक लड़की से हो गई। उसका नाम रानू था। बाद में यही दोस्ती प्यार में बदल गयी। परिवार के लोग इससे अनजान थे।

मां व पिता जी वीर को बहुत ही नेक मेहनती व होशियार समझते थे। वाकई में वीर था भी वैसा ही। वीर रानू से शादी करना चाहता था लेकिन वीर की दोनों बहनों की अभी शादी नहीं हुई थी।

वीर अपनी मर्जी का मालिक था। जब तक मन करता, वह नौकरी करता और फिर छोड़ देता। इससे परिवार की आर्थिक हालत भी बिगड़ जाती थी। नौकरी छोड़ने के बाद वीर शराब के लिये दोस्तों से कर्ज लेता था और रात को शराब पीकर आता और चुपचाप सो जाता। मां सोचती शायद वीर की तबीयत खराब है। बाद में वीर की दोनों बहनों की शादी हो गई।

बहनों की शादी के बाद वीर ने अपनी और रानू की कहानी मां को बताई तथा मां ने पिता जी से बात की दोनों उनकी शादी के लिये सहमत हो गये। रानू भी साधारण परिवार से थी और सजातीय भी थी।

दोनों परिवारों की सहमति से वे दोनों परिणय सूत्र में बंध गये। अब वे बहुत खुश थे। वीर ने दोबारा नौकरी कर ली। वह कुछ समय तक तो अच्छे से रहा लेकिन अब वह नौकरी के बाद अपने दोस्तों के साथ घूमता रहता तथा देर रात तक घर लौटता था। वीर ने दोस्तों के कहने पर दोबारा शराब पीना प्रारंभ कर दिया। पत्नी के रोक–टोक करने पर मारपीट करना उसका रोज का काम हो गया। उनके

झगड़े से परेशान होकर माँ व पिता जी ने दोनों को घर से अलग करने का निर्णय लिया ताकि वीर को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास हो सके।

घर से अलग कर देने के बाद तो वीर और अधिक बिगड़ गया। अब तो वह शराब पीकर सड़कों पर पड़ा रहता, कभी उसका एक्सीडेन्ट हो जाता तो कभी कोई परिचित व्यक्ति उसे घर छोड़कर जाता। इन आदतों से परेशान होकर रानू अपने मायके चली गयी पर वीर उसे आश्वासन देकर वापस घर ले आया।

रानू पढ़ी–लिखी तो थी, अतः उसने एक विद्यालय में अध्यापन का कार्य शूरू कर दिया। कुछ समय के पश्चात् उसने एक बेटे को जन्म दिया। वीर की खुशियों का ठिकाना न रहा। उसने सोचा अब मैं शराब नहीं लूंगा लेकिन वह केवल सोच सकता था, अमल नहीं कर सकता था। उसने फिर शराब पीना शुरू कर दिया।

रानू छोटे से बच्चे को लेकर कि ससुराल आ गई। वीर समझाने पर भी अपनी आदतें छोड़ नहीं रहा था। झगड़ों से परेशान होकर मकान मालिक ने मकान खाली करने का निर्णय सुना दिया।

मकान मालिक की मदद से वीर के पिता जी ने शहर से दूर एक मकान खरीद लिया। पिता जी वीर की आदतों से बहुत परेशान थे। अब पिता जी का कामकाज भी बंद हो गया था। बहू की नौकरी भी नहीं रही। बहू ने नौकरी की तलाश की और उसे एक कंपनी में काम मिल गया। नौकरी का समय अधिक होने से रानू को घर आने में रात हो जाती थी। वीर अब उसे शक की निगाहों से देखने लगा और मारपीट करके शराब पीने चला जाता। क्योंकि अब उसे शराब पीने के बहाने चाहिये थे।

पिताजी ने बिस्तर पकड़ लिया वीर इतना लाचार था। बहू की कमाई से घर खर्च चलता था। वीर कभी कुछ कमाता तो शराब में ही उड़ाता। उसे न अपने बच्चे की चिंता थी और न अपने मां–बाप की। इस प्रकार चिंता करते–करते एक दिन वीर के पिता ने दम तोड़ दिया। वीर के पास तो पिता के अतिंम संस्कार के लिये भी पैसे नहीं थे। बहनों तथा पास के रिश्तेदारों के सहयोग से पिता का अंतिम संस्कार तो हो गया लेकिन क्या वीर अपने आप को माफ कर पायेगा ?

वीर के कारण पूरा परिवार परेशान हो गया। शराब पी–पी कर वीर का शरीर खोखला हो गया था। बिन बुलाये मेहमान की तरह वीर को कैंसर हो गया जिसका इलाज हो पाना असंभव था। रानू के ऊपर ज़िम्मेदारियों का बोझ बढ़ गया। वीर अपने आप को अकेला महसूस करने लगा क्योंकि उसने पूरे परिवार का सुख–चैन छीन लिया था। वीर अब जिन्दगी की लड़ाई हारता जा रहा था। दूर–दूर तक दसे आशा की किरण नजर नहीं आ रही थी पर अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

**सुनीता जैन**
श्री कल्याण मातेश्वरी दिग0 जैन उ0 मा0
विद्यालय इंदौर, मध्य प्रदेश

**अपनी–अपनी धाक जमाने के चक्कर में अपने–अपने चेले–चपाटों के साथ तैश में आ गये। दोनों में गुत्थमगुत्थी हो गई। बात मारपीट तक पहुंच गई। एक–दूसरे के वाहनों को रसातल में मिलाने का प्रयास भी किया जा रहा था। यह प्रयास कोई मामूली प्रयास नहीं था बल्कि नशीले पदार्थों का जादू सिर चढ़कर बोल रहा था।**

'' जड़ चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन्ह करतार, संत–हंस गुन गहहि, परिहरि वारि विकार' जी हां ! मैं राजेन्द्र सिन्हा , तुलसी दास द्वारा रचित इस दोहे को अच्छी तरह कंठस्थ कर चुका हूं, अच्छी तरह इसका अर्थ हृदयंगम कर चुका हूँ क्योंकि इसी दोहे ने मेरे मार्ग को प्रकाशित एवं प्रशस्त किया है।

हम मध्यमवर्गीय परिवारों के विद्यार्थियों के लिये शिक्षा संजीवनी बूटी के सदृश है, एक अमोघ अस्त्र की भाँति हमारे जीवन में आने वाले प्रत्येक प्रहार का सुरक्षा कवच भी है। हमारे पास न तो पूर्वजों की संचित धनराशि है, न ही व्यापारियों की बनी बनाई गद्दी जिस पर आसीन होने के स्वप्न हम देख सकें। 'अपनी घोट तो नशा होई' या फिर 'मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता' की तरह जीवन संवारना ही हमारा लक्ष्य होता है। हमारे माता–पिता की यही सलाह जीवन भर घुट्टी की तरह पिलाई जाती है।

अखिलेंद्र – '' देखो बेटा ! पढ़ाई–लिखाई पर पूरा ध्यान देना जिससे अपने मनचाहे क्षेत्र में पारंगत हो सको और अपने खानदान का नाम रौशन कर सको।''
राजेन्द्र – ''जी डेडी, मैं इस तथ्य से भली– भांति परिचित हूं। मैं सदैव इसका पूरा–पूरा ध्यान रखूंगा।
रोहिणी – ''हां बेटे ! हमें तुम पर गर्व है। तुम हो ही इतने समझदार पर बुरा मत मानना, कभी–कभी सही मार्गदशर्न करना हमारा कर्तव्य है।'' राजेन्द्र–''जी मम्मी, मुझे कतई बुरा नहीं लगता बल्कि मुझे अच्छा लगता है। आपकी नसीयत मुझे गलत रास्ते पर जाने से रोकती है।''

यह सब मैं आप लोगों को बता रहां हूं क्योंकि मैं इन सबका उत्तर अपने विद्यालय में पढ़ने वाले अमीरजादों और भटके हुए अन्य विद्यार्थियों के जीवन से पा चुका हूं। अभी कल ही की बात है परीक्षा प्रारंभ होने वाली थी। साढ़े सात बजे घंटी बजी। कुछ विद्यार्थियों ने सुना, कुछ ने अनसुना कर दिया। कुछ अभी भी पन्ने पलट रहे थे ताकि अंतिम क्षण का भी उपयोग किया जा सके और एकाध उत्तर पर नजर डाल सकें।

इतने में अध्यापक महोदय ने कक्षा में प्रवेश किया और सभी से पुस्तकें बाहर रख कर अपना–अपना स्थान ग्रहण करने को कहा। यह बात हमारे अध्यापक अर्जुन नौटियाल दो–तीन बार दोहरा रहे थे। अंततः पौने आठ बजे तक सभी विद्यार्थी अपनी–अपनी जगह बैठ चके थे। कुछ चिंतित, कुछ लापरवाह और कुछ शांत दिखाई दे रहे थे। सात बजकर पचास मिनट पर उत्तर पुस्तिकाएं मिलने लगीं।

सबने अपने नाम लिखने शुरू कर दिये। ठीक आठ बजे प्रश्नपत्र मिलने वाला था। आज भौतिकशास्त्र की परीक्षा थी। जिनका लक्ष्य अधिकतम अंक प्राप्त करने का था, वे मन ही मन उत्तर दोहरा रहे थे। लापरवाह विद्यार्थी एक–दूसरे के साथ संकेतों में बात कर रहे थे।

ठीक आठ बजे प्रश्नपत्र बंटने शुरू हो गये। जिन्होंने अच्छी तरह तैयारी की थी, पांच मिनट में ही प्रश्नपत्र पढ़कर संतुष्टि का अनुभव कर रहे थे कि उन्हें सभी प्रश्नों के उत्तर आ रहे थे। उनकी लेखनी तीव्र गति से चलने लगी। जिन विद्यार्थियों ने परीक्षा पूर्व की तैयारी को गंभीरता से नहीं लिया था, अब उनके चेहरे पर बदहवासी छाने लगी। धीरे–धीरे उनके चेहरों का रंग बदलने लगा। सोच–विचार में पड़ गये कि क्या लिखें ?

[illegible]
और प्रगति पत्रिका में लाल निशान न लगने पाए।

इन्हीं बदहवास घबराए विद्यार्थियों में से रोहन, कैवल्य, शान्तनु और धर्मेन्द्र भी थे। जो बगले झांकने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते थे। अचानक क्षेमेन्द्र के लिखने की गति बढ़ गई। नौटियाल सर पूरे कमरे में घूमते हुए प्रत्येक विद्यार्थी पर नजर रखते हुए निरीक्षण कर रहे थे। जिस कतार में क्षेमेन्द्र बैठा हुआ था, वहां से गुजरे, आगे बढ़े, फिर एक क्षण रुके।

उन्हें कुछ संदेह हुआ। कुछ अजीब सी हरकत उन्होंने देखी। क्षेमेन्द्र की ओर ध्यानपूर्वक देखा। वह कोई गुल खिलाने का प्रयास कर रहा था परंतु नौटियाल जी की गिद्धद्य की नजर से कोई विद्यार्थी बच नहीं पाता था। उनका दाहिना हाथ क्षेमेन्द्र की उत्तर पुस्तिका पर बिजली की तरह जा गिरा।

सच में बिजली ही तो मानो क्षेमेन्द्र पर गिरी। अपने आप को माहिर समझने वाला वह भूल गया था कि श्री नौटियाल की आंखों में धूल झोंकना आसान काम नहीं था। उन्होंने उत्तर पुस्तिका उठाई, देखा तो उत्तर पुस्तिका के नीचे छोटे–छोटे अक्षरों में लिखा रूक्का दिखाई दिया।
नौटियाल – ''वाह बेटे ! हमी से चालाकी दिखा रहे थे। यह जरा मुश्किल है।''
क्षेमेन्द्र – ''स.....स....सर क्या कह रहे हैं आप ? मैंने तो कुछ नहीं किया।''
नौटियाल – ''अभी बताता हूं तुमने क्या किया है (रूक्का दिखाते हुए), यह क्या है ?''
क्षेमेन्द्र – ये ये तो तैयारी करते समय बनाए गये नोट्स हैं।''
नौटियाल – ''तो फिर यहां कैसे ?''
क्षेमेन्द्र – पता नहीं भूल से जेब में रह गये होंगे।''
नौटियाल – ''तो फिर बाहर इनका क्या काम है ?''

रंगे हाथों पकड़े जाने पर कुछ कहना व्यर्थ था। नौटियाल के निरीक्षण में दी जाने वाली परीक्षा में रूक्का निकालना 'आ बैल मुझे मार' वाली स्थिति तो निश्चित थी, यह बात क्षेमेन्द्र भूल गया थो जो इतनी बड़ी गलती कर बैठा।

यह अमीरजादा क्षेमेन्द्र पूरे समय आवारागर्दी करता रहता था। पढ़ाई के लिये उसे फुरसत ही कहां थी ? वह तो यही सोचता था कि गलत तरीके से बड़ी आसानी से परीक्षा में नकल करके उत्तीर्ण होना तो उसके बाएं हाथ का खेल था। पर नौटियाल ने उसके हाथों के तोते उड़ा दिये। सीधे परीक्षा अधीक्षक के पास मय चपरासी के उत्तरपुस्तिका और उस रूक्के सहित भिजवा दिया।

यह तो होना ही था। परीक्षा के दो दिन पहले ही इन बिगडैलों के दो गुटों के बीच जोरदार हाथापाई जो हुई थी।

क्षेमेन्द्र – ''अरे ! समझता क्या है अपने आप को ? अच्छी तरह आंखें फाड़ कर देख ले, मैं क्षेमेन्द्र हूं, मेरे सामने खड़े होने की हिम्मत न करना।''
रजनीश – ''जा जा देखे तुझ जैसे कई ! तेरे जैसे तो दसियों मेरी जेब में रहते हैं।''
क्षेमेन्द्र – ''तो फिर आओ मैदान में ।''

अपनी–अपनी धाक जमाने के चक्कर में अपने–अपने चेले–चपाटों के साथ तैश में आ गये। दोनों में गुत्थमगुत्थी हो गई। बात मारपीट तक पहुंच गई। एक–दूसरे के वाहनों को रसातल में मिलाने का प्रयास भी

किया जा रहा था। यह प्रयास कोई मामूली प्रयास नहीं था बल्कि नशीले पदार्थों का जादू सिर चढ़कर बोल रहा था।

दोनों ही नेता नशीले पदार्थों के आदी हो चुके थे अन्यथा कुछ तो सोचने–समझने–परखने और सही निर्णय लेने की शक्ति शेष रहती। इन नशीले पदार्थों ने उनमें जोश तो भर दिया था जो उनके शरीर को धीमे जहर की तरह खोखला कर देने वाला था।

परंतु इस तथ्य से अनजान वे तो नशीले पदार्थ के सेवन के पश्चात एक स्वर्गिक सुख का अनुभव करते थे। इन नशीले पदार्थों को पाने के लिये न जाने कितनी बार उसने अपने पिताजी की जेब साफ की थी। पिता जी की जेब तो अनगिनत रुपयों से भरी रहती थी। इस तरह मिलते रहने वाले पैसों ने उसकी आदत को और भी बिगाड़ दिया था। फिलहाल तो पकड़ा नहीं जा रहा था परंतु बकरे कि मां कब तक खैर मनाएगी।

अंत में थक–हार कर हार–जीत की अनिश्चित स्थिति से उबरने में असमर्थ दोनों गुटों के नेताओं को दूसरे सदस्यों के साथ पुलिस की सीटी ने भाग खड़े होने पर मजबूर कर दिया था। दोनों नेताओं ने अपनी पैतृक संपत्ति का भरपूर प्रदर्शन कर दिया था। टूटी–फूटी मोटरसाइकिलें पुलिस ने जब्त कर लीं। अगले दिन वाहनों के वारिशों का पता चलने पर क्षेमेन्द्र व रजनीश पकड़े गये। थाने बुलाए जाने पर कुछ दे–दिलाकर केस को रफादफा करवाकर थाने के बाहर इस तरह निकले जैसे कोई दावत खाकर आ रहे हों।

बाहर आकर दोनों एक–दूसरे को घूरती आंखों से चुनौती देते प्रतीत हो रहे थे। उनका बस चलता तो फिर से जोर आजमाइश शुरू कर देते पर फिलहाल उन्हें शान्त करना था। पुलिस की हिदायत का प्रभाव थोड़े दिनों तक ही तो रहना था।

और इस तरह बुरे रास्ते पर बुरे कार्यों के चक्रव्यूह में फंसता चला गया क्षेमेन्द्र आज अपने किए पर पछता रहा है। हाथ मलने के सिवाय उसके पास दूसरा रास्ता नहीं है– 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।'

क्षेमेन्द्र की किस्मत अच्छी थी। अगले दिन ही नौटियाल सर ने क्षेमेन्द्र को अपने स्टाफ रूम में बुलाया। उन्हें पता था लोहा गर्म है, वार करने पर जरूर एक निश्चित आकार लेगा। यही तो गुरु की परंपरा है।

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि–गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

क्षेमेन्द्र को प्यार से समझाया। यह काम वे पहले भी कई बार कर चुके थे परंतु उस समय कोई असर नहीं हुआ। नौटियाल आशावादी थे। उन्हें केवल उचित समय की प्रतीक्षा थी। वे यह बात जानते थे कि जीवन में कब कौन सा पल एक नई राह दिखा जाए।

आज वह पल आ गया। इस पल का वे भरपूर लाभ उठाना चाहते थे। एक अंतिम किरण नौटियाल के मन में भी थी शायद क्षेमेन्द्र सम्भल जाए। वैसे यह मसला नामुमकिन नहीं, मुश्किल जरूर था पर क्षेमेन्द्र के सितारे बुलंदी पर थे, इसलिए तो उसे सब कुछ समय पर मिल गया।

उसने माता-पिता के सामने सच्चे मन से प्रण किया कि अब वह उन्हें पूरी तरह सुधर कर दिखाएगा और एक आदर्श विद्यार्थी बनकर उनका नाम रौशन करेगा। उधर मैं सोच रहा था कि जैसी क्षेमेन्द्र की किस्मत है वैसी सबकी तो नहीं होती। मैं अपने मन में दोहराने लगा कि मैं भूलकर भी परीक्षा में अवैध उपायों का सहारा नहीं लूंगा। मैं नशीले पदार्थों से दूर रहूंगा। मैं अपने जीवन को सफल बनाने का उत्तरदायित्व भली–भांति निभाऊंगा क्योंकिं मैं एक आदर्श विद्यार्थी और एक आदर्श संतान बनना चाहता हूं और अन्ततः एक आदर्श नागरिक।

**डॉ० सुशीला आहूजा**
नवरचना स्कूल, सामा रोड,
वडोदरा, गुजरात

33

# आत्म–संतुष्टि

मां ने मेरा मनोबल बढ़ाया तथा कहा कि हिम्मत व मेहनत से ही हम विषम परिस्थिति में भी सफल हो सकते हैं। मां के इस कथन को मैंने आत्मसात किया तथा मन लगाकर परीक्षा की तैयारी करने लगा। परीक्षा के उपरांत मुझे परीक्षाफल की चिंता सताने लगी।

आज सवेरे से ही घर में शोर मचा हुआ था। मां जोर–जोर से रो रही थी। पिता जी मां से पूछ रहे थे पर मां कुछ भी बताने में असमर्थ थी। मैं तीन बहनों का अकेला भाई व मां का लाड़ला था। कभी भी मेरे माता–पिता ने मुझे किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी। जब भी मैं मां से पैसे मांगता, वह झट से निकाल कर दे देती।

वक्त गुजरता गया और मैं बारहवीं कक्षा में पहुंच गया। दसवीं कक्षा तक मैं एक मेधावी छात्र था परंतु ग्यारहवीं कक्षा में आते ही मेरा मन पढ़ाई से ऊब गया। मेरे नये दोस्त बन गये जो कि नशीले पदार्थों का सेवन करते थे। उन्होंने मुझे भी मादक पदार्थों का रसास्वादन करने के लिये प्रेरित किया।

पहले तो मैं हिचकिचाया परंतु देखते ही देखते मैं नशीले पदार्थों का आदी हो गया। मेरे दोस्त मुझसे पैसा मांगते और मैं उन्हें घर से चोरी करके पैसे दे देता। कई बार मैंने घर का सामान भी बेच दिया। दिन प्रतिदिन, मेरी सेहत गिरती चली गई तथा एक दिन पिता जी ने मुझे चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया।

मेरे कारण मां को पिता जी ने खरी–खोटी सुनाई तथा कहा कि मां ने ही मुझे बिगाड़ा है। मां हमेशा की तरह रोती रही तथा बेबस निगाहों से मुझे देखती रही। फिर भी मुझे मां के हाल पर तरस नहीं आया और मैं नशीले पदार्थों का सेवन करने में तल्लीन रहीं। मेरी शारीरिक व मानसिक दशा बिगड़ती चली गई।

एक दिन विद्यालय में मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया तथा मैं बेहोश हो गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने मां व पिता जी को बुला लिया तथा मुझे तत्काल ही अस्पताल ले जाया गया। वक्त पर उपचार मिलने से मुझे होश तो आ गया परंतु डॉक्टर की बात सुन मेरे होश उड़ गये। मैंने डॉक्टर को कहते सुना कि मेरे फेफड़े खराब हो गये है। मां तो सुनते ही फर्श पर धम्म से गिर पड़ी तथा पिताजी अब भी नाराज थे।

मुझे अस्पताल से घर लाया गया। बीमारी के कारण मैं कई दिनों तक विद्यालय न जा सका। देखते ही देखते परीक्षा के दिन नजदीक आ गये पर मैं कुछ भी तैयारी न कर सका। मेरे पिताजी व मां ने जो ख्वाब देखे थे, मैंने चकनाचूर कर दिये। आंखों में लाचारी के आंसू लिये मेरे सिरहाने बैठी रहती तथा मुझे वक्त पर दवा देती।

मेरी तीनों बहनों की खामोश निगाहें मुझसे मानो कहती कि मैं एक अच्छे भाई का फर्ज नहीं निभा सका। मां तथा बहनों की सेवा–सुश्रुषा से धीरे–धीरे मेरी सेहत सुधरने लगी परंतु कमजोरी अभी भी महसूस होती।

आज पिताजी मेरे कारण ही मां पर चिल्ला रहे थे क्योंकि सुबह के नौ बजे थे परंतु मैं अभी बिस्तर पर लेटा हुआ था। कमजोरी ने मेरे शरीर को जर्जर कर दिया था व मैं चाह कर भी उठ नहीं पा रहा था।

पिताजी का कहना था कि मुझे मेरे हाल पर छोड़ दिया जाय परन्तु मां ने मेरी सेवा करने में कोई कमी नहीं छोड़ी।

मां की निःस्वार्थ सेवा व ममता ने मरी आंखें खोल दीं तथा मेरा मन आत्मग्लानि से भर उठा। पिताजी से निगाहें मिलाने की मेरी हिम्मत नहीं हुई।

मैं पिताजी की मनोदशा से भी परिचित था कि उन्होंने कठोरता का लिबास मुझे सही राह पर लाने के लिये ओढ़ा था।

मैंने फिर से मन लागाकर पढ़ना आरंभ कर दिया पर मन चिंतित रहता था कि इतने कम समय में मैं बारहवीं कक्षा की परीक्षा कैसे दे सकूंगा। मां ने मेरा मनोबल बढ़ाया तथा कहा कि हिम्मत व मेहनत से ही हम विषम परिस्थिति में भी सफल हो सकते हैं। मां के इस कथन को मेंने आत्मसात किया तथा मन लगाकर परीक्षा की तैयारी करने लगा। परीक्षा के उपरांत मुझे परीक्षाफल की चिंता सताने लगी।

एक दिन सवेरे दस बजे पिताजी ने चहकते हुए घर में कदम रखा व सूचना दी कि मैं बारहवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ हूं। उन्होंने मुझे प्रेम से गले लगा लिया। मां तथा बहनों कि खुशी का ठिकाना नहीं था। आज अपने मां व पिताजी को खुश देख मेरी आंखों में खुशी के आंसू छलक आए तथा आत्म–संतुष्टि का एहसास हुआ। मैंने पहली बार जाना कि परिवार की खुशी हमारे जीवन में कितनी महत्वपूर्ण होती है। तभी से मैंने अणुव्रत लिया कि मैं कभी भी मादक तथा नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।

**अपर्णा कश्यप**
केन्टरवरी पब्लिक सैकेण्ड्री स्कूल,
बी ब्लाक, यमुना विहार, दिल्ली

**समय बीतता गया। धनपतराय का यह धंधा भी तेज गति से चलता रहा। पेड़ों की संख्या निरंतर कम होती जा रही थी। अब वह ठंडी और तेज हवा लोगों को महसूस नहीं होती थी जो पहले थी। आखिर ऐसा कब तक चलेगा, इसकी शिकायत तो करनी ही पड़ेगी। अब तो जंगली जानवर भी खाने के लिये गांव में आते और जानवरों को मार डालते।**

**प्रा**तःकाल पीली–पीली धूप खिली हुई थी। जंगल में बड़े–बड़े पेड़ धूप से चमक रहे थे। चिड़ियां अलग–अलग स्वरों में चहचहा रही थीं। चारों ओर का वातावरण सुंदर प्रतीत हो रहा था। इस माहौल से आनंदपुर के निवासी प्रसन्न हो रहे थे।

आनंदपुर के लोगों को अपने गांव पर गर्व था। वहां पर बीमारी तो मानो किसी को छूती नहीं थी। लच्छू और हरिया काका अस्सी वर्ष की आयु में ठीक तरह से देख–सुन लेते थे। अभी भी उन में काम करने का जज्बा था।

रामशरण गुप्ता जी नए अध्यापक के पद पर तबादला होकर आए थे। वे कर्मठ, समझदार व सुलझे हुये इंसान थे। उन्हें प्रकृति से विशेष लगाव था। स्कूल में वे बच्चों को रोज नई–नई बातें बताते रहते थे। अक्सर वे उन्हें पेड़–पौधों के बारे में बताते। बच्चे भी उनकी बात को ध्यानपूर्वक सुनते। वे जल्द ही उनसे घुल–मिल गये। मास्टर जी को बच्चों के साथ स्कूल की क्यारियों में पेड़–पौधे लगाने में बहुत आनंद मिलता था।

एक दिन भोलू और रामू मास्टर जी से मिलने आए। उनका उदास चेहरा देख कर वे बोले, ''क्या बात है, आज तुम दोनों कुछ उदास दिखाई दे रहे हो। तबीयत तो ठीक है ना तुम्हारी ?''

कुछ देर चुप रहने के बाद भोलू बोला, ''क्या बतायें मास्टर जी, आप तो जानते ही हैं कि जंगलों से कोई चोरी से बड़े–बड़े पेड़ों को काट रहा है लेकिन उसका पता नहीं चल पा रहा। आखिर कौन हो सकता है वह ?'' रामशरण बोले, ''मुझे सब पता है लेकिन चोर को तो ढूंढना ही पड़ेगा।''

गांव के सभी लोग इस बात से परेशान थे यदि ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन उनके गांव पर संकट आ सकता है। जब भी वे पता करने की कोशिश करते तो चोर पहले ही सतर्क हो जाता और वह पकड़ में नहीं आ पाता।

एक दिन भोलू हांफता हुआ आया और बोला, ''मुझे पता चल चुका है कि कौन पेड़ काटता है ?'' सभी लोग दंग रह गये और उसकी ओर देखने लगे। वह आगे बोला, ''वह व्यक्ति अपने ही गांव का सेठ धनपतराय है। उन्हीं का एक गिरोह पेड़ काट कर बेचने का धंधा करता है। सभी हैरान थे उसकी बातें सुनकर। दीनू काका बोले, ''लेकिन उसे क्या आवश्यकता थी यह सब करने की ? सब कुछ तो है उसके पास!''

कहते हैं कि इंसान लालच में अंधा हो जाता है। सभी ने निश्चय किया कि वे सेठ से मिलकर बात करेंगे और उसे इस काम को करने से रोकेंगे। वे सब मास्टर साहब के साथ मिलकर सेठ के घर

गए। गांव वालों को देखते ही धनपतराय बोला, "भाइयो ! आज कैसे आना हुआ ? सब कुशल–मंगल तो है न'' तभी भोलू बोला, ''बड़े भोले बनते हो जैसे कुछ मालूम ही न हो।''

धनपतराय कुछ घबराया परंतु उसने जल्दी ही अपने आप को संभाल लिया और बोला, ''तुम्हें जो करना है करो, मैं किसी से नहीं डरता।'' मास्टर जी ने भी उसे खूब समझाया मगर उसकी समझ मैं कुछ नहीं आया क्योंकि वह लालच मैं अंधा हो चुका था। मास्टरजी बोले, ''ठीक है वृक्ष हमारे प्राणदाता होते हैं और इनकी कीमत हमें एक दिन प्राण देकर ही चुकानी होगी।''

समय बीतता गया। धनपतराय का यह धंधा भी तेज गति से चलता रहा। पेड़ों की संख्या निरंतर कम होती जा रही थी। अब वह ठंडी और तेज हवा लोगों को महसूस नहीं होती थी जो पहले थी। आखिर ऐसा कब तक चलेगा, इसकी शिकायत तो करनी ही पड़ेगी। अब तो जंगली जानवर भी खाने के लिये गांव में आते और जानवरों को मार डालते।

आखिर उन्होंने निश्चय किया कि किसी दिन उन्हें इसकी शिकायत वन विभाग के अधिकारी से सिकायत दर्ज करनी होगी। तभी जमुना मौसी खबर लाई कि धनपतराय का बेटा बंटी बहुत बीमार है और वह उसे इलाज के लिये शहर ले जा रहा है। मास्टर जी बोले, ''भाइयो, हमें उसके शहर से वापस आने का इंतजार करना होगा तभी शिकायत दर्ज होगी।'' सभी ने कहा, ''ठीक है ऐसा ही करेंगे।''

बंटी को अस्पताल में दाखिल कराया गया। कुछ दिन बाद उसकी तबीयत में सुधार हुआ और धनपतराय बेटे को लेकर घर लौट आया। कुछ दिन बाद फिर से बंटी की तबीयत बिगड़ने लगी। अब तो उस पर कोई दवा भी असर नहीं कर रही थी। धनपतराय भी चिंतित रहने लगा। उसकी पत्नी भी रोत–रोते कहती यह सब तुम्हारी करनी का फल है। यदि बंटी को कुछ हो गया तो वह भी जीवित नहीं रहेगी।

किसी ने कहा कि जमीनपुर के वैद्य को लाओ, वही कुछ कर सकते हैं। वैद्य को लाया गया। उन्होंने बंटी की नब्ज देखी और कुछ पुड़ियां देकर बोले, ''मेरी मानो तो इसे किसी ऐसे स्थान पर ले जाओ जहां का हवा पानी स्वच्छ व शुद्ध हो।''

अगले दिन ही धनपतराय पत्नी और बंटी को लेकर अपनी मौसी के गांव चल दिया। रास्ते भर वह वहां के हरे भरे–पेड़ों को देखता जा रहा था। मौसी के घर पहुंचने पर अगले दिन ही बंटी ने आंखें खोल दीं और अब वह पहले से स्वस्थ लग रहा था। धनपतराय यह देखकर हैरान हो गया। तभी मौसी बोली, ''बेटा, यह चमत्कार हमारी प्रकृति का है।'' धनपतराय बोला, '' मौसी ! मैं सब कुछ समझ गया हूं। अब मुझसे कोई भूल नहीं होगी।'' लगभग छः सात दिनों में बंटी पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। धनपतराय अपनी पत्नी व बंटी के साथ अपने गांव  लौट आया।

घर जाकर उसने कुछ निश्चय किया। अगले दिन ही वह गांव वालों से मिला और हाथ जोड़कर बोला, ''भाइयो, मुझे मेरे पापों की सजा मिल चुकी है और मैं आप सबके सामने प्रण करता हूं कि अब मैं कभी पेड़ों को नहीं काटूंगा। मैं कोई प्रदूषण नहीं फैलाऊंगा।'' अचानक आए इस परिवर्तन से सभी खुश थे। मास्टर जी बोले, ''धनपतराय, सही मायने मैं यह ही सच्ची इंसानियत है। इसी को कहते हैं 'देर आये दुरूस्त आये।'

धनपतराय की आंखों से आंसू छलकने लगे। वह बोला, ''मास्टर जी ! पेड़ तो हमारे रक्षक होते हैं और मैं इन्हीं का भक्षक बन गया था। अब मैं प्रायश्चित करूंगा और नये पेड़ लगाऊंगा तथा इनकी देखभाल करूंगा। मैंने जो अपराध किए हैं, उनकी भी सजा भुगतने के लिये तैयार हूं।''

आज सभी गांव वाले प्रसन्न थे । उनके गांव में नई सुबह जो हो गई थी।

**मीना बिष्ट**
बी. एन. पब्लिक स्कूल,
एन. आई. टी फरीदाबाद
हरियाणा

**आये दिन बिजनेस पार्टिया, क्लब मे जाकर ड्रिंक व पत्तो की महफिल, गेट–टुगेदर कर बहाना उद्देश्य केवल पीना और पिलाना। बिट्टो का तो जैसे दम घुटने लगा, उसके बचपन से मिले संस्कार मानो मुहं चिढ़ाने लगे। वह गुमसुम रहने लगी। उसने निखिल को समझाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह उसकी हर बात पर मुंह झटका देता।**

नन्हीं–सी, ठुमकती हुई सारे घर–आंगन में खेलती हुई मेरी बिट्टो। वह हंसती तो सारा घर खिलखिला उठता। आते–जाते सबको देखकर ऐसे मुस्कुराती कि रोते हुए चहरों को भी मुस्कुराने पर मजबूर कर देती।

उस मासूम–सी बच्ची पर जब संकट के काले बादल मंडराये तो एक बार तो मेरा भी भगवान से विश्वास उठने लगा। बिट्टो को मैने सारे संस्कार दिये थे, उच्च शिक्षा दी, देश विदेश की सैर कराई परन्तु जिसे लोग हाई सोसायटी के ऐटिकेटस कहतें हैं, बस वो ही नहीं सिखा पाई। बड़ी हुई तो एक अच्छे जीवन की कामना करते हुये हमने उसे अपने घर से विदा किया। अच्छा घर, अच्छा वर, अच्छा व्यापार, समाज में रुतबा सबसे बड़ी बात यह थी कि निखिल ने मांग कर लिया था मेरी बिट्टो को।

सिर मुंडाते ही ओले पड़े उसके सिर पर जब रिसेप्शन पार्टी में सबके बीच दुल्हन का स्वागत किया उसके ससुर ने शैम्पेन की बोतल खोल कर और साथ दिया सास, जेठ–जेठानी व निखिल ने। बिट्टो को भी गिलास पकड़ाया गया। इन्कार करने पर सास ने कहा, ''अरे तुम में तो हाई सोसायटी के ऐटिकेट्स ही नहीं है। बिट्टो के तो पावँ तले जमीन खिसक गई। समुंदर के किनारे बैठे मानो हाथों से रेत का सहारा भी निकलता दिखाई दिया जब निखिल ने जबरदस्ती उसके मुहँ से गिलास लगा दिया।

फिर तो परत–दर–परत सारे राज खुलते चले गये। उनके घर तो ये रोज का सिलसिला था। शाम को जब सब इकठ्ठे होते तो चाय की मेज पर चाय कि चुस्की कि जगह शराब के गिलासों से चियर्स होती।

आये दिन बिजनेस पार्टियां, क्लब में जाकर ड्रिंक व पत्तों की महफिल, गैट–टुगैदर कर बहाना उद्देश्य केवल पीना और पिलाना। बिट्टो का तो जैसे दम घुटने लगा, उसके बचपन से मिले संस्कार मानो मुहं चिढ़ाने लगे। वह गुमसुम रहने लगी। उसने निखिल को समझाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह उसकी हर बात पर मुंह झटका देता।

अचानक एक दिन बिट्टो के जीवन में एक परिवर्तन आया। बिट्टो के ससुर की अचानक तबियत खराब हो गई। अस्पताल में चिकित्सकों ने बताया कि उन्हें लीवर की परेशानी है और लीवर बिल्कुल खराब हो गया है। शराब की एक बूंद भी इनके लिये विष के समान है। अतिंम क्षणों में निखिल के पिता ने बताया कि अपनी शानो–शौकत दिखाने के लिये वह करोड़ो रुपये उधार ले चुके हैं। उसके बदले में उन्होंने व्यापार और बंगला दोनों गिरवी रखे हुए हैं।

यह सुनकर निखिल के सिर पर पहाड़ टूट गया। बिट्टो की सारी बातें उसके दिमाग में घूमने लगीं। बिट्टो ने अपनी एमबीए की डिग्री पर पैसा लेकर उधार चुकाया। जेठ व पति के साथ मिलकर डूबे हुये व्यापार को आगे बढ़ाया। निखिल ने शराब छोड़ दी और काम में पूरा मन लगाने लगा। आज मेरे

ऐसी है हमारी बिट्टो।

**विवेक साहनी**

राजकीय उ. माध्यमिक कन्या विद्यालय,
विवेक विहार, दिल्ली

**''राजन ! इतना गुस्सा अच्छा नहीं। आपके राज्य में नशे का बोलबाला है। इसके जैसी और भी हजारों जवानियां नशों के दलदल में खराब हो रही हैं। और हां...रानी साहिबा को मैं यह उपदेश देना चाहता हूं कि अपने नगर की औरतों और बच्चों के दुख दूर करने के लिये पहले अपने नगर से नशे की होड़ खत्म करें।''**

''पिता जी लोग शराब क्यों पीते हैं ?'' सोनू ने बहुत मासूमियत से अपने दादा जी से पूछा।

'' बस बेटा यह बुरी आदत जिसे लग जाती है, उसका सत्यानाश करके छोड़ती है। पर आज तुम यह प्रश्न क्यों पूछ रहे हो ?'' दादा जी को पता था कि सोनू के इस प्रश्न को पूछने का कोई न कोई कारण अवश्य होगा।

''दादा जी, असल में मेरे एक मित्र के पापा शराब पीते हैं और उस बेचारे को रोज अध्यापिका जी से डांट पड़ती है। कभी उसके पास कापी नहीं होती तो कभी पुस्तक। बहुत बार तो वह स्कूल का काम भी नहीं करके आता।''

''अच्छा ! तभी तुम उदास हो।

''हां दादा जी। पता है मैंने उसके साथ आधी छुट्टी में बात की तब वह अपने शराबी पिता की बातें करके रो पड़ा। वह कहता है, पापा रोज सुबह शराब न पीने का वायदा करते हैं और शाम को फिर पी कर आते हैं।''

'' नशा करने वाले का बेटा यही हाल होता है। ''

''दादा जी, आप सोनू के साथ अकेले में क्या बातें कर रहे हो ? पिंकी ने दादा जी की चारपाई पर बैठते हुए कहा।

'' अरे नहीं बेटी, आओ तुम भी आओ, भला तुम्हारे बिना मैं सोनू से कैसे बात कर सकता हूं।''
'' अच्छा अब बात शुरू करो नहीं तो फिर मम्मी ने खाने के लिए बुलाना शुरू कर दिया तो फिर हम सभी को यहां से जाना पड़ेगा।''

दादा जी ने सोनू के चेहरे की तरफ देखकर बात शुरू की। एक नगर में एक साहूकार रहता था। उसका इकलौता बेटा 'लाडी' मां बाप के लाड़–प्यार से बिगड़ गया था। न वह पढ़ता था और न ही कोई काम करता था। वह बुरी संगति का शिकार हो गया। सारा–सारा दिन घर से गायब रह कर मित्रों की संगति में बिताता।

एक ने कहा, ''यार ! एक सुट्टा लगा कर देख सिगरेट का, स्वर्ग नजर आने लगेगा। '' दूसरे ने जर्दे का स्वाद दिखाया। तीसरे ने शराब का और चौथे ने अफीम का। इस तरह स्वाद देखता–देखता वह

नशे की लत को पूरा करने के लिए अब लाडी ने घर में ही चोरी करना शुरू कर दिया। साहूकार बेचारा पुत्र की करतूतों से दुःखी होकर जल्द ही स्वर्ग सिधार गया।

पिता की मृत्यु के बाद लाडी ने पिता की कमाई को नशों में उड़ाना शुरू कर दिया और जल्द ही कंगाल हो गया। अब वह कर्जा लेकर अपना नशा पूरा करने लगा। उसे काम करने की आदत तो थी नहीं।

कहते हैं बिना काम किए खाने से कुएं भी खाली हो जाते हैं। कर्जा देने वाले रोज उधार मांगने आते पर पैसे वापिस देने की सामर्थ्य उसमें नहीं थी। एक–एक करके घर की चीजें भी बिक गईं। दुखी होकर लाड़ी एक दिन जंगल की तरफ भाग गया। भागता–भागता वह बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब उसे होश आया तो उसने एक सुनहरी हिरण को अपने सामने पाया।

''हे भले मनुष्य! कौन से दुख का मारा तू इस जंगल में भटक रहा है।'' सुनहरे हिरण ने पूछा।
लाड़ी ने उसे आप बीती सुना दी।
'' दोस्त! मैंने तेरी जान बचाई है। मैं तुम्हारी धन से भी मदद करूंगा पर तुम्हें मेरे साथ एक वायदा करना होगा कि आज के बाद तुम कभी नशा नहीं करोगे।''सुनहरी हिरण ने कहा।
'' मैं वायदा करता हूं कि मैं अब कभी नशा नहीं करूंगा। बस एक बार मेरा कर्जा उतर जाये।'' लाडी ने मिन्नतें करते हुए हिरण से कहा।
'' जा अपना कर्ज उतार दे और नशा छोड़कर सुख का जीवन व्यतीत कर। हां, पर ध्यान रखना मेरे बारे में किसी को कुछ मत बताना।'' हिरण ने बहुत सारा धन लाडी को देते हुए कहा। हिरण का धन्यवाद करके लाडी नगर वापिस आ गया।
इन्तफाक से उन दिनों नगर की रानी को एक स्वप्न बार–बार आ रहा था। स्वप्न में वह अपने नगर के मर्दों को नशे में झूमते देखती। औरतों और बच्चों को मंद हाल में रोते–चिल्लाते सुनती। और फिर एक सुनहरी हिरण उसके कान के पास आकर कुछ कहता पर रानी सुन न पाती।

''मुझे कुछ नहीं सुना... कुछ नहीं सुना।'' बड़बड़ाती रानी उठ बैठती और फिर सारी–सारी रात वह बेचैन रहती व सो नहीं पाती।

शाही हकीम इलाज करके थक गया। अंत में उसने राजा से कहा, '' राजन् ! शहर में ढिंढोरा पिटवा दो क्या पता किधर से सुनहरी हिरण मिल जाए ? सुनहरी हिरण को देखकर ही रानी की मानसिक हालत ठीक हो सकती है।'' राजा ने सारे शहर में मुनादी करवा दी कि सुनहरी हिरण का पता देने वाले को मुंह मांगा इनाम दिया जायेगा।

सारे शहर में सिर्फ लाडी को ही सुनहरी हिरण का पता मालूम था। उसने हिरण से प्राप्त धन से कर्जा उतार दिया था पर वह अपना वायदा भूल कर फिर से नशा करने लगा था। राजा से इनाम स्वरूप मुंह मांगी रकम पाने के लालच में उसने राजा को हिरण का पता बता दिया। राजा के सिपाहियों ने

चारों तरफ से जंगल की घेर लिया और हिरण को पकड़ कर राजा के दरबार में लाए। उधर लाडी भी इनाम प्राप्त करने के लालच में वहां पहुंच गया।

राजा ने मंत्री से कहा, ''इस भले आदमी को मुह मागा इनाम दिया जाये।''

''ठहरो राजन !'' सुनहरी हिरण ने राजा को रोका और राजा को सारी घटना और बातचीत बताई जो उसके और लाडी के बीच हुई थी।

'' अरे यह तो अब भी नशा करता है, साथ ही इसने सुनहरी हिरण जैसे सच्चे मित्र से विश्वास घात भी किया है। '' दरबार के आगे एकत्रित भीड़ में से किसी की आवाज आई।

इतना सुनकर राजा को क्रोध आ गया। उसने आदेश दिया, ''इस विश्वास घाती को मौत के घाट उतार दिया जाए।

''राजन ! इतना गुस्सा अच्छा नहीं। आपके राज्य में नशे का बोलबाला है। इसके जैसी और भी हजारों जवानियां नशों के दलदल में खराब हो रही हैं। और हां...रानी साहिबा को मैं यह उपदेश देना चाहता हूं कि अपने नगर की औरतों और बच्चों के दुख दूर करने के लिये पहले अपने नगर से नशे की होड़ खत्म करें।''

सुनहरी हिरण का उपदेश सुनकर राजा और रानी के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव उभर आए और उन्होंने हिरण से वायदा किया कि वे जल्द ही अपने नगर को नशे से मुक्त कर देंगे। फिर उन्होंने हिरण का धन्यवाद किया और उसे छोड़ दिया।

'' इसे भी आजाद कर दो, केवल बेड़ियों–हथकड़ियों से नहीं बल्कि नशों से भी...।'' बंदी बनाये लाड़ी को देखकर हिरण ने कहा। देखते ही देखते हिरण वहां से गायब हो गया।

सोनू ने कहानी सुनकर लंबी सांस ली और कहने लगा–'' नशा करने से धन एवं शरीर दोनों बर्बाद होते हैं। एक मनुष्य की नशे की लत से कितने लोग प्रभावित होते हैं। पिंकी हम बहुत खुशकिस्मत हैं कि हमारे घर में कोई नशा नहीं करता। पापा हमारा कितना ध्यान रखते हैं। मैं भी कभी नशा नहीं करूंगा। हां, नशों के प्रति लोगों को जागरूक करने का काम अवश्य करूंगा।''

**सुमन बंसल**
अवर लेडी ऑफ फातिमा कान्वेन्ट हाई स्कूल,
पटियाला, पंजाब

## जब जागो तभी सवेरा

**आज बड़ी हिम्मत करके मैं यहां इन्हें पुनः दाखिला के लिये लाई हूं। ताकि इनका भविष्य अंधेरे में न रहे। प्राचार्या द्वारा उनका दाखिला किया गया। दोनो लड़कियां एक ही कक्षा में पड़ती थीं। बच्चों के**

अव्वल आने पर उनकी फीस प्रतिवर्ष माफ हो जाती और वो पड़ती गई। समय गतिशील है, वे
पढलिख कर एक डॉक्टर व एक इंजीनियर बन गई। लेकिन पिता कि वही हालत रही।

क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ ? पुष्पा ने कहा। आईये। प्राचार्या ने उन्हे अन्दर बुलाया। पुष्पा अपने साथ दो लड़कियों व एक महिला जो उनकी माँ थी कार्यालय में प्रवेश किया। मैडम जी इन दोनों बच्चीयों का दाखिला करवाना है, यह मेरे पड़ोस में रहती हैं। प्रचार्या ने पुष्पा से कहा इनके पापा क्या काम करते हैं ? पुष्पा ने कहा '' वो एक शराबी है, जो अपनी पत्नी और बच्चों को पीटता है,घर से बाहर भी नहीं निकलने देता है। ये हमारे नये पड़ोसी हैं। सभी मोहल्ले वाले इनकी हरकतों से परेशान हैं।

आप सभी मोहल्ले वाले मिलकर उसे समझाने का प्रयास क्यों नहीं करते ? प्राचार्या द्वारा सवाल किया गया। पुष्पा ने उत्तर दिया जिसकी आदत बिगड़ जाती है। नशे में धूत रहता है वेा भला समझाने से क्या सुधरेगा।

भगवान ने उसे इतनी सुन्दर और सुशील पत्नी व होनहार बच्चे दिये हैं। भला उसे क्या कमी है ?

पुष्पा ने आगे बताना सुरू किया की एक दिन उसका पति बाहर गया हुआ था। मैंने एक पड़ोसी होने के नाते उसका हाल जानना चाहा। मैने वहां जाकर देखा कि वन्दना खाना बना रही थी। घर में दो लड़कियां है, डरी हुई थी। मुझे देखते ही वह घबरा गईं।

बहनजी मेरे पति को पता चला कि आप यहां आयीं हैं तो हमारी चमड़ी उद्येड़ देगें मैंने कहा वन्दना मत डर। आज आपके बच्चे स्कूल नहीं गये ? किसी ने कोई जबाब नहीं दिया। पुनः पुछने पर जबाब मिला स्कूल में चार महीने से फीस नहीं गई इसलिये इनका नाम कट गया। दो महीने से रसोई गैस भी नहीं है।

मैने कहा आप कोई काम क्यों नहीं करती जिससे आपकी जरूरतें पूरी हों सकें। वन्दना ने कहा इन्हे सक रहता है कि कोई मेरे बारे किसी से कुछ कह न दे।

आपके परिवार में और कौन–2 है। पीहर से कोई है। सास ससुर ने बहुत मदद की लेकिन इन्हे नहीं सुधरना।

आज बड़ी हिम्मत करके मैं यहां इन्हें पुनः दाखिला के लिये लाई हूं। ताकि इनका भविष्य अंधेरे में न रहे। प्राचार्या द्वारा उनका दाखिला किया गया। दोनो लड़कियां एक ही कक्षा में पड़ती थीं। बच्चों के अव्वल आने पर उनकी फीस प्रतिवर्ष माफ हो जाती और वो पड़ती गई। समय गतिशील है, वे पढलिख कर एक डॉक्टर व एक इंजीनियर बन गई। लेकिन पिता कि वही हालत रही।

एक दिन किसी ने आवाज लगाकर कहा देखो कोई सड़क पर चक्कर खाकर गिर पड़ा है, आस पास के लोगों ने देखा ''इसने तो पी रखी है।'' इसे उठाकर किनारे पर कर दो किसी ने कहा। तभी उसी सड़क से बेटी आई और अपने पिता को अस्पताल लेकर गई।

डॉक्टर ने कहा आप समय पर नही पहुंचती तो मरीज की जान को खतरा था। अब वे सुरक्षित हैं। लकिन भविष्य में एसी गलती करते रहोगे तो ठीक कर पाना मुश्किल है। पिता को अपनी आदतों पर गिलानी हुई और वो घर से मर जाने के लिये चल पड़ा।

लेकिन कहते हैं,कि मोत मांगने पर नहीं मिलती। रास्ते में मुनि जी कुछ लोगों को उपदेश दे रहे थे, वह उनके बीच जाकर बैठ गया। ''नशा नाश का द्वार है'' इससे बचने के लिये मुनि जी ने सभी यौगिक कियांओं से अवगत कराया। पिता को लगा जिंदगी मरने के लिये नहीं जीने के लिये है। वह घर लौट गया और संकल्प किया कि मैं बाकी जिन्दगी में शराब को हाथ नहीं लगाऊंगां। कहते है न अंत भला तो सब भला। जब जागो तभी सवेरा।

**सुमन गौतम**
**एस.एस.जैन क.व.म.विद्यालय**
**सिरसा (हरियाणा)**

# फैसला

**दूल्हा राकेश तो मिट्टी के माधो की तरह चुपचाप खड़ा था। रीना के पिता पाण्डेजी के चरणों में पगड़ी रख रहे थे, तभी रीना ने वहां प्रवेश किया और कहा, '' पापा, मैं यह शादी नहीं करूंगी। ले जाइये यह बारात वापस। नहीं बनना मुझे लालची परिवार की बहू और ऐसे पंगु और गूंगे व्यक्ति की पत्नी जिसकी अपनी कोई आवाज नहीं, कोई सोच नहीं।**

शर्मा जी घर में घुसे और आते ही आवाज लगाई, '' रीना बेटी रीना ।'' रीना बाहर आई और पिता के हाथ से सामान का थैला ले लिया। वे रोज दफ्तर से लौटते वक्त कुछ न कुछ सामान लिये चले आते थे। विवाह का दिन करीब आ रहा था। मां पापड़–बड़ी बनाने में लगी थी। आखिर बिटिया को सभी कुछ देना था।

'' पापा ! हाथ–मुंह धो लीजिये, चाय बनाती हूं।'' रीना ने कहा।
'' बेटी, थोड़े पकोड़े भी तल लेना, बड़ी भूख लगी है।'' शर्मा जी बोले।

'' अरे हां, तुम्हारी मम्मी कहां है ? क्या फूंक मार–मार कर बड़ी–पापड़ सुखा रही है ? नजर नहीं आ रही।'' ठिठोली करते हुए शर्मा जी बोले।

रीना हंसती हुई आंगन में पहुंची और मां के गले में बाहें डालती हुई बोली, '' चलिये रानी साहिबा, महाराज आप को याद फरमा रहे हैं।'' मां झेंपती हुई उठी और बैठक की ओर चल दी।

पिता जी बोले, '' सुनो रीना की मां, अब जो भी खरीददारी बची है, एक लिस्ट बनाकर दे देना। दिन ही कितने बचे हैं अब। साहबजादे को तो फुरसत नहीं है कॉलेज से।'' ''हां मैं भी सोच रहीं हूं कल 'शगुन' साड़ी एम्पोरियम से रीना की पसंद की साड़ी ले आऊं। ज्यादा नहीं बन सका तो कम से कम नौ साड़ियां तो दे ही देंगे।''

रीना जो की रसोई में पकोड़े तल रही थी, चुपचाप मम्मी–पापा की बात सुन रही थी और सोच रही थी कि क्या सचमुच बेटियां मां–बाप पर बोझ होती हैं ? कितना कुछ करते हैं मां–बाप, परवरिश पर इतना खर्च करते हैं, शादी में सब कुछ अपना दांव पर लगाकर वर–पक्ष का आसुरी पेट भरते हैं।

हालांकि राकेश के परिवार ने अब तक भलमनसाहत का ही परिचय दिया था और कोई भी बेजा मांग नहीं की थी। राकेश के पिता पाण्डेजी का तो कहना था, उन्हें तो सिर्फ लड़की अच्छी चाहिए। रीना सोच रही थी वह सचमुच भाग्यशाली है। उसकी सोच को तोड़ा चाय के उफान ने और वह चौंक पड़ी।

चाय–पकौड़े ट्रे में लिये वह बैठक की ओर चल दी। मम्मी–पापा उसी के विवाह–खर्च का हिसाब लगा रहे थे। मम्मी बोल रही थी, ''सुनो जी, आप चिंता मत करो। मेरे पास छः तोले के कड़े और दो तोले की चेन रखी है। वही बेच देंगे और बची हुई तैयारियां कर लेंगे। रीना को देखते ही वे चुप हो गईं।

पापा पकौड़ों की तारीफ कर खाने लगे और मां चाय की चुस्कियां लेती हुई खिड़की से क्षितिज निहारने लगीं। दो दिन बाद विवाह की तिथि थी। कल सुबह से घर में मेहमानों का तांता लग जायेगा। यही सोचकर रीना रसोई का काम निपटा कर सोने चली गई। सुबह जल्दी जो उठना था। सुखद सपनों को आंखों में कैद कर कब उसे नींद आ गई पता ही नहीं चला।

सुबह से मेहमानों का आना शुरू हो चुका था। आज मेहन्दी की रस्म थी। सखियां रीना को घेर कर बैठी मेहन्दी लगा रही थीं। कल से हल्दी लगनी शुरू हो जायेगी। बुआ जी ने ऐलान किया। घर में काफी गहमागहमी थी।

रस्मों को निभाते–निभाते वह दिन भी आ पहुंचा जिसका सबको बेसब्री से इंतजार था।
बारात लखनऊ से दिल्ली आ पहुंची थी। होटल में उनके ठहरने का प्रबंध करा दिया था।

शर्मा जी ने घर के बाहर ही तंबू लगवाकर विवाह–स्थल का खर्च बचा लिया था। शहनाई की मद्धिम स्वर–लहरी वातावरण को खुशनुमा बना रही थी। बारात आने में कुछ ही समय शेष रह गया था। रीना पार्लर से तैयार होकर आ चुकी थी। उसका सलोना रूप और खिल गया था। बैण्डबाजों की धुन नजदीक आ रही थी और रीना के दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी। तभी किसी ने आकर कहा, ''बारात आ गई, बारात आ गई''।

रीना ने कनखियों से देखा। जयपुरी शेरवानी में राकेश खूब जंच रहा था। दरवाजे पर तोरण की तैयारी हो चुकी थी। सभी प्रतीक्षारत थे कि दूल्हा तोरण मारे । तभी रमानाथ पाण्डे जी, राकेश के पिता रौब से बोले, '' राकेश तभी तोरण मारेगा जब उसके हाथ में तीन लाख इक्यावन हजार रुपये रखे जायेंगे।

जैस–तैसे विवाह का खर्च जुटाया गया था। अचानक इतने रुपयों का प्रबंध करना शर्मा जी के लिये अत्यंत कठिन काम था। बेचारे शर्मा जी सकते में आ गये और पाण्डे जी के सामने हाथ जोड़ कर मिन्नतें करने लगे पर चेहरे पर सज्जनता का मुखौटा लगाये उस व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

दूल्हा राकेश तो मिट्टी के माधो की तरह चुपचाप खड़ा था। रीना के पिता पाण्डेजी के चरणों में पगड़ी रख रहे थे, तभी रीना ने वहां प्रवेश किया और कहा, '' पापा, मैं यह शादी नहीं करूंगी। ले जाइये यह बारात वापस। नहीं बनना मुझे लालची परिवार की बहू और ऐसे पंगु और गूंगे व्यक्ति की पत्नी जिसकी अपनी कोई आवाज नहीं, कोई सोच नहीं। आप लोगों के यहां बहुएं दहेज की वेदी पर स्वाहा हो जाती हैं। अब लड़कियां चुपचाप जुल्म नहीं सहतीं। जाइये यहां से।''

धीरे–धीरे बाराती खिसकने लगे। राकेश अपना–सा मुंह लेकर बाहर आ गया। पिताजी झूठी शान में तमतमाए हुए गाड़ी में जा बैठे।

रीना की मां बेहोश हो चुकी थी। पिता बदहवास से खड़े देख रहे थे। बेटी का संसार बसने से पहले ही उजड़ चुका था तभी मेहमानों की भीड़ में से एक सुन्दर, सौम्य, स्वस्थ नौजवान बाहर आया और बोला, '' अंकल, मैं आपकी बेटी रीना को अपनी जीवन–संगिनी बनाना चाहता हूं, यदि आप आशीर्वाद दें तो।'' वह युवक मानस था जो लखनऊ की अणुव्रत संस्था का एक सदस्य था और बैंक में कार्यरत था।

मानस की बात सुनकर मानो शर्मा जी अपने आप में लौट आये। रीना की राय जानी गई। प्रस्ताव ठुकराने का कोई कारण ही नहीं था। उसने भी विवाह के लिये हां कर दी।

माहौल में पसरा सन्नाटा शहनाई की मधुर स्वर–लहरियों से गूंज उठा और रीना–मानस का विवाह सानन्द सम्पन्न हुआ।

**रंजना व्यास**
स्टेनफोर्ड इंटरनेशनल गर्ल्स स्कूल,
इन्दौर रोड, उज्जैन, मध्य प्रदेश

# अनोखा उपहार

**पण्डित बालाराम की आंखों से खुशी के आंसू टपकने लगे। वे अपने को रोक नहीं पाये और अपने पोते को सीने से लगा लिया तथा कहा, " मुझे खुशी इस बात की है कि मैंने अपने संस्कारों, आदर्शों और नैतिक मूल्यों का जो पौधा लगाया, वह मेरे पोते के रूप में पल्लवित और पुष्पित होकर अब फलित हो रहा है।**

पण्डित बालाराम शर्मा का एक सौ एकवां जन्म दिन था। उन्होंने अपनी जिन्दगी के एक सौ वर्ष पूरे कर लिए थे। इस अवसर पर उनके परिवार ने एक समारोह तथा भोज का आयोजन किया था। अड़ोस–पड़ोस के लोगों, परिचितों तथा रिश्तेदारों को आमंत्रित किया था।

बालाराम जी एक ऊंचे आसन पर बैठे हुए थे। लोग खाना खा लेने के बाद आकर पण्डित जी को जन्म दिन की बधाई देते थे तथा कोई न कोई उपहार देते जा रहे थे। देखते ही देखते उपहारों का ढेर लग गया। पण्डित जी ने किसी भी उपहार की तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया किन्तु जब उनके पोते ने उन्हें उपहार स्वरूप एक पैकेट भेंट किया तो वे अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं पाए और उन्होंने अपने पोते से कहा, ''रितेश, जरा अपना पैकेट खोलकर दिखाना तो तुमने उसमें क्या रखा है ?''

रितेश ने कहा,''दादा जी, कुछ विशेष नहीं है।''

पण्डित जी ने कहा,''फिर भी मैं देखूं तो सही कि मेरे पोते ने मुझे क्या दिया है।''
रितेश ने पैकेट खोला तो सारे लोग दंग रह गए। उपहार एकदम अनोखा था। पैकेट में पके हुए आम के ग्यारह फल थे। पण्डितजी ने अपने पोते की तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

रितेश ने अपने दादाजी की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा, ''दादाजी माफ कीजिएगा, यह उपहार अन्य उपहारों की तरह औरों की दृष्टि में हो सकता है कीमती नहीं हो किन्तु मेरे लिए तो यह बहुत कीमती और महत्वपूर्ण भी है। दादाजी, आपको याद होगा जब मैं पांच साल का हुआ था तो आपने मेरा नामांकन विद्यालय में करवाया था। उसी दिन मेरा जन्म–दिन भी था। मेरे पांचवें जन्म–दिन पर आपने मुझे पहला उपहार दिया था। वह उपहार और कुछ नहीं, एक छोटा–सा आम का पौधा था और आपने उसकी देखभाल की जिम्मेदारी मुझे सौंपी थी। आप ने मुझे अपने जीवन में कभी कोई पेड़ न काटने और किसी भी रूप में कोई प्रदूषण न फैलाने की शपथ भी दिलाई थी। तब से अब तक अपने जन्म दिन पर एक पेड़ लगाता रहां हूं तथा आपकी आज्ञा का पालन करता रहा हूं।''

रितेश ने आगे कहा, '' दादाजी, आपने जो आम का पेड़ मेरे जन्म–दिन पर दिया था, वह पौधा एक विशाल पेड़ बन गया और इस वर्ष इस पर पहली बार फल आये हैं। आज आपके जन्म–दिन पर मैंने उन्हीं फलों को उपहार स्वरूप आपको समर्पित किया है, क्योंकि मेरी समझ में उन फलों पर पहला अधिकार आप ही का है और इन्हें समर्पित करने का इससे अच्छा मौका और कोई नहीं हो सकता था।''

पण्डित बालाराम की आंखों से खुशी के आंसू टपकने लगे। वे अपने को रोक नहीं पाये और अपने पोते को सीने से लगा लिया तथा कहा, '' मुझे खुशी इस बात की है कि मैंने अपने संस्कारों, आदर्शों और नैतिक मूल्यों का जो पौधा लगाया, वह मेरे पोते के रूप में पल्लवित और पुष्पित होकर अब फलित हो रहा है। मैं तो सचमुच एक पका आम हूं, कब टपक पडूं कोई पता नहीं। किन्तु अब मैं चैन से मर पाऊंगा, क्योंकि मुझे अब विश्वास हो गया है कि मेरे संस्कारों की खेती आगे की पीढ़ी द्वारा भी निरंतर कायम रहेगी। मैं आश्वस्त हो गया हूं कि तुम लोग अब इसे सूखने नहीं दोगे।''

**गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय**
केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय, शिमला,
हिमाचल प्रदेश

# परिवर्तन

**जब मुझे होश आया तो मैं अस्पताल में था। मैंने देखा, डॉक्टर मेरे पिता से धीरे–धीरे कुछ बातें कर रहे थे और मेरे पिता सिर हिलाकर कुछ समझाने का प्रयास कर रहे थे। मां मेरे सिराहने बैठी थी। मेरी आंख खुली, उन्होंने डॉक्टर को पुकारा। एक ही क्षण मेरी आंख के सामने सब घटनाएं कौंध गईं। मैं भय से कांपने लगा। मेरी आशा के विपरीत मेरे माता–पिता एकदम खामोश थे और उनका व्यवहार भी मेरे प्रति सहानुभूतिपूर्ण था।**

आज मेरे जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण दिन था। मन में अपूर्व उत्साह की तरंगें हिलोरे मार रही थी। आज मुझे राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया जाना था। अपने शहर एवं समाज में सामाजिक उत्थान की गतिविधियों में मेरा एक अहम् स्थान था, इसलिये मेरा नाम राजकीय पुरस्कार के लिये भेजा गया जिसे राज्य सरकार ने सहर्ष स्वीकार किया।

मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन मुझे इतने बड़े सम्मान का हकदार ठहराया जायेगा। मनुष्य जीवन पाना ही अपने में एक उपलब्धि है और उसे सार्थकता के साथ जीना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। इसी विचार ने सदा मुझे प्रेरित किया और मैंने अपने जीविकापार्जन के साथ–साथ सामाजिक कार्यों को भी अपने जीवन का हिस्सा बना लिया।

मैं एक मध्यम परिवार से हूं। मध्यम वर्ग की सभी समस्याओं को मैंने करीब से देखा है। अपने माता– पिता की चार संतानों में सबसे छोटा था। छोटा होने का लाभ मुझे हमेशा मिलता रहा जिसका मैंने भरपूर फायदा उठाया। मेरे पिता के आदर्शवादी व्यक्तित्व ने मुझे सदा ही प्रेरित किया। मां के सरल एवं धार्मिक विचार अनजाने ही धीरे–धीरे मेरे हृदय में बैठ गए। अपनी तार्किक बुद्धि एवं जागरूकता का श्रेय मैं अपने माता–पिता को देता हूं।

पुरस्कार वितरण के एक दिन से पूर्व ही मैं अपने राज्य की राजधानी पहुंच चुका था जहां मेरे ठहरने का प्रबंध किया गया था। मैं होटल पहुंचा और वहां मैंने मैनेजर को निमंत्रण पत्र दिखाया। उसने मेरी ओर प्रशंसात्मक दृष्टि डाली, मैं गौरवान्वित हो गया । उसने सम्मानपूर्वक मुझे सुसज्जित कक्ष तक पहुंचाया और कहा,'' सर ! किसी चीज की आवश्यकता हो तो 20 नम्बर पर रिसेप्शन पर फोन कर दें। आपका रूम नम्बर 103 है''। मैंने अच्छा कहकर दरवाजा बंद किया। सफर की थकान उतारने के लिए मैंने स्नान करना उचित समझा।

स्नानादि से निवृत्त होकर मैंने खाने का आर्डर दिया। होटल का इंतजाम बहुत ही अच्छा था। मेरे कहने के कुछ ही देर बाद भोजन सुरूचिपूर्ण ढंग से परोसा गया। मैंने खाना खाया और टहलने के लिये में होटल की लॉबी में चला गया। यदि सच कहूं तो मैंने पहले कभी ऐसा होटल नहीं देखा था। मैं रोमांचित तो था ही साथ ही साथ गर्व का अनुभव भी कर रहा था। मैं मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था जिसने मुझे जीवन में कुछ करने की प्रेरणा दी।

कमरे में लौट कर मैंने टीवी खोला। समाचार व अन्य मनोरंजक कार्यक्रम देखते–देखते कब नींद आ गई पता ही नहीं चला। पूरी रात मैं पुरस्कार वितरण के ही सपने देखता रहा । मन में विचारों का सैलाब उमड़ता रहा और वही स्वप्न के रूप में मस्तिष्क पटल पर उभरता रहा।

सुबह जल्दी ही आंख खुल गई। घर से फोन आ गया। और भी मित्रों के फोन आते रहे जिन्हें पता था कि मुझे आज सम्मानित किया जाना था। दस बजे तक मुझे समारोह में पहुंचना था। पत्नी द्वारा खरीदे गये नये कपड़े पहनकर मैं तैयार होकर होटल के कक्ष से निकला और रिसेप्शन पर चाबी देकर टैक्सी पकड़ कर सर्किट हाऊस पहुंच गया जहां समारोह का आयोजन किया जाना था।

वहां पहुंच कर मुझे एक बड़े सभागार में ले जाया गया जिसकी सज्जा सुरूचिपूर्ण ढंग से की गई थी। मुझे ससम्मान अगली पंक्ति में बिठाया गया। कुछ अन्य लोग भी आने लगे थे। समारोह का संचालन करने के लिये

लोग यहां वहां–घूम रहे थे। अतिथियों को उनके लिये निर्धारित स्थानों पर बिठाया जा रहा था। मैं यहां किसी से परिचित नहीं था, अतः चुपचाप बैठ कर सब कुछ देख रहा था।

तभी एक संभ्रान्त व्यक्ति मेरे पास आकर बैठ गया। अभिवादन कर उसने मुझसे पूछा, ''क्या आप को भी पुरस्कार मिलना है।'' मैने हां कहा तो उसने आगे पूछा, ''क्या करते हैं ?'' मैंने कहा, ''मैं पेशे से एक सरकारी कर्मचारी हूं। साथ ही एक एन0 जी0 ओ0 चलाता हूं।'' वह सज्जन काफी प्रभावित लगे। तभी उनके मोबाईल की घंटी बजी और वह वार्तालाप में व्यस्त हो गये। हमारी बातों का क्रम वहीं टूट गया।

मौन होते ही मेरे भीतर विचारों का संग्राम चलने लगा। विचारों की उथल–पुथल मेरे मन की किताब के भीतर अतीत के पृष्ठ फडफड़ाने लगे। मैं सोचने लगा कि नशा एक ऐसी आसक्ति है जो मानव को एक ऐसे मोहपाश में जकड़ लेती है जिससे व्यक्ति जीवन की वास्तविकता से परे एक अनोखे उन्माद में जीने लगता है। जीवन की समस्याओं और अपने कर्तव्यों से दूर...एक अनोखी अनुभूति!

नशा समाज के लिये एक अभिशाप है। जब कभी भी मैं किसी व्यक्ति को किसी भी प्रकार का नशा करते देखता हूं तो मेरे मन में एक विद्रोह सा उत्पन्न हो जाता है। मेरा पूरा शरीर कांपने लगता है। उत्तेजना से मैं कभी–कभी तो पूरी तरह बेकाबू होने लगता हूं। मैं संयम रखना चाहता हूं पर पता नहीं रख पता नहीं। क्यों ऐसा लगता है कि सब कुछ तहस–नहस कर दूं।

विचारों के सैलाब ने मुझे न जाने कब खींच कर वर्षों पूर्व ले जाकर खड़ा कर दिया। मैं जीवन के उस मोड़ पर पहुंच गया जिसे विचारों में भी मैंने कभी दोहराना नहीं चाहा। मेरे जीवन का वह सच जिसे मैंने सदा झुठलाना चाहा। उस समय मेरी उम्र 12–13 वर्ष की थी। मैं एक सरकारी विद्यालय का छात्र था जहां ज्यादातर अध्यापक कक्षा में आने को ही अपना कर्तव्य समझते थे। छात्रों के व्यवहार और नैतिक मूल्यों के विकास को उन्होंने अपने कार्य क्षेत्र की सीमा से परे ही रखा था। मेरी कक्षा के कई छात्र ज्यादातर अनुपस्थित रहते और विद्यालय के समय में आसपास के बागबगीचों में नाना प्रकार के नशे की सामग्री एकत्र कर उनका सेवन करके अपनी ही दुनिया में मग्न रहते थे।

कक्षा में उपस्थित होने पर भी वे किसी न किसी प्रकार से अपने आप को संतुष्ट करने के लिए नशे की वस्तुएं उपलब्ध करा ही लेते थे। भांग की पत्तियों को रगड़ कर खाना, नशीले पदार्थों को पोलिथीन में ड़ालकर सूंघना, तम्बाकू खाना, जिन दवाइयों में मादक पदार्थों का प्रयोग किया जाता है, उनका सेवन करना उन सभी की आदत बन चुका था।

मेरा किशोर मन भी इस आसक्ति से अछूता न रह सका। मैंने धीरे–धीरे उन लड़कों की संगति में रहना शुरू कर दिया। गलत राह पर चलने के भय से मेरे कदम कांपे मगर नशे के रोमांच ने उसे हरा दिया और शनैः शनैः मैं अपने जीवन की बर्बादी की उस राह पर चल पड़ा जो शायद काल बनकर मुझे निगल ही जाती मगर.....।

किशोरावस्था के चंचल मन ने मुझे नशे की आदत का गुलाम बना दिया और मैं उस दुनिया में लिप्त हो गया। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कभी पिता की जेब पर या कभी मां के मन्दिर में रखे पैसों पर निर्भर होता चला गया। घर में कुछ हलचल–सी हुई । यदा कदा मां व अन्य भाई–बहनों पर लापरवाही के आरोप भी लगते, घर का वातावरण कलहपूर्ण हो जाता।

इधर मेरा परीक्षा फल भी बिगड़ने लगा। घर में सभी मुझे पढ़ाई पर ध्यान देने के लिये कहते और मैं आज्ञाकारी बालक होने का सफल प्रयत्न करता। आज भी मुझे आश्चर्य होता है कि इन परिस्थितियों में मैंने दो वर्ष बिता दिए।

मुझे आज भी स्मरण है वो सुबह जब मेरा परीक्षाफल मिलना था। मैं पिता के साथ विद्यालय की ओर चल पड़ा। आशंकित मन लिए मैं बहुत ही अनमना–सा बोझिल कदमों के साथ पिता के साथ चल तो दिया पर मन में एक अन्जानी शंका लगातार मेरे कदमों को रोकती रही। आशा के अनुसार मैं सभी विषयों में फेल था। मेरे पिता के लिये तो मानो यह एक विस्फोट था। इस अप्रत्याशित स्थिति में उन्हें हिला कर रख दिया। उनके चेहरे का वह विषाद मुझे भीतर तक चीत्कार गया।

स्कूल में मेरे पिता एकदम खामोश रहे। घर लौटते वक्त उनकी वह चुप्पी मुझे तूफान से पहले की खामोशी का आभास करा रही थी। सुबह से मेरे पिता साथ थे। अतः किसी भी प्रकार का नशा न मिलने के कारण मेरा सिर चकराने लगा। हम घर पहुंचे, कुछ लोग पिता से मिलने के लिये बैठे थे। वह उनसे बातचीत में व्यस्त हो गये।

इधर मैं नशे की तलब में सब कुछ भुलाकर सबसे आंख बचाकर अपने उस दोस्त के घर की ओर चल दिया जो मुझे नशे की सामग्री उपलब्ध करवाता था। उसके घर के आगे काफी भीड़–भाड़ दिखाई दी मैं सहम–सा गया। पास जाने पर पता चला कि वह मित्र इस दुनिया में नहीं रहा। मेरे पैरों के नीचे से मानो जमीन खिसक गई। उसकी मां का करुण रुदन मेरा कलेजा छलनी कर गया। मैं चक्कर खा कर वहीं गिर पड़ा।

जब मुझे होश आया तो मैं अस्पताल में था। मैंने देखा, डाक्टर मेरे पिता से धीरे–धीरे कुछ बातें कर रहे थे और मेरे पिता सिर हिलाकर कुछ समझाने का प्रयास कर रहे थे। मां मेरे सिराहने बैठी थी। मेरी आंख खुली, उन्होंने डॉक्टर को पुकारा। एक ही क्षण मेरी आंख के सामने सब घटनाएं कौंध गईं। मैं भय से कांपने लगा। मेरी आशा के विपरीत मेरे माता–पिता एकदम खामोश थे और उनका व्यवहार भी मेरे प्रति सहानभूतिपूर्ण था।

मेरे माता–पिता ने बड़े ही धैर्य के साथ इस भयावह स्थिति का सामना किया। अपने दुख एवं रोष को उन्होंने कैसे दबाया होगा, मैं आज भी नहीं समझ पाया। मेरी मां ने सिसकते हुए एक ही वाक्य कहा, ''तभी मैं सोचती थी कि इसकी सेहत दिन–ब–दिन क्यों खराब हो रही है ?'' ऐसी स्थिति में भी मां का दिल का बेटे की सेहत के लिए ही चिंतित था। मेरे माता–पिता ने लगातार छः महीने तक डॉक्टर के निर्देश में मेरी देखभाल की। पिता ने भाग–दौड़कर मुझे अच्छी से अच्छी जगह दिखाया। मां ने दिन–रात एक कर मेरी सेवा की जिसे देखकर मैं आत्मग्लानि से भरता चला गया।

धीरे–धीरे मैं अपनी गंदी आदतों से उबरने लगा। मेरा शरीर पहले से ज्यादा स्वस्थ हो गया। मां मुझे अच्छी–अच्छी कहानियां–किस्से सुनाती जिसका मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा। लगभग एक वर्ष तक मेरा परिवार समाज से कट गया था। मेरे माता–पिता के अथक परिश्रम एवं सहनशीलता ने मुझे मेरे जीवन के एक बड़े संकट से उबार लिया।

इसी बीच मेरे पिता का तबादला हो गया। नई जगह नये दोस्तों के बीच मैंने अपना नया जीवन प्रारम्भ किया। सब कुछ सामान्य हो गया। पढ़ाई समाप्त करते–करते मुझे अच्छी सरकारी नौकरी मिल गई। शादी हुई, बच्चे हुए और में एक सुखी परिवार का मुखिया बन गया। मेरे माता–पिता वृद्ध हो चुके थे। उनके जीवन के अंतिम समय में मैंने उनकी बहुत सेवा की। उनके लिये मेरे मन में सदैव कृतज्ञता का भाव रहा।

मेरे मन के कोने में नशे को लेकर एक विद्रोह की चिंगारी आज भी विद्यमान थी। मेरी विचारशीलता ने उसे हवा दी और मैंने नशा उन्मूलन के लिये कार्य करना शुरू किया। शुरू में मैंने अकेले ही प्रयास किये। धीरे–धीरे कुछ और लोगों का साथ मिल गया। आर्थिक सहायता भी मिलने लगी। कुछ परिचित डॉक्टरों ने भी मदद की और मेरी एक छोटी–सी कोशिश ने एक अभियान का रूप ले लिया।

सहसा तालियों कि गड़गड़ाहट से मेरी विचार–श्रृंखला भंग हुई। समारोह प्रारंभ हो चुका था। तभी मेरा नाम पुकारा गया और सामाजिक चेतना में नशा उन्मूलन के लिये मुझे पुरस्कृत करने की घोषणा की गई। उद्घोषक ने पुरस्कार की घोषणा के साथ नशा उन्मूलन के लिये मेरे द्वारा किए गए कार्यों को सराहते हुए मेरी प्रशंसा की और समाज के अन्य लोगों का आह्वान किया कि सामाजिक बुराइयों को समूल नष्ट करने के लिए वे भी आगे आयें।

गवर्नर साहब ने भी मेरे कार्यों को सराहते हुए कहा, '' आप जैसे जागरूक लोग ही समाज एवं देश को नई दिशा दे सकते है।'' राज्य के गवर्नर से पुरस्कार ग्रहण करते हुए मुझे लगा कि मेरा जीवन धन्य हो गया। मेरी आंखों के आगे मेरे माता–पिता का चेहरा घूम गया। मैं नतमस्तक हो गया क्योंकि वे दोनों मेरे प्रेरणास्त्रोत थे और आज उन्हीं के आशीर्वाद से इस मुकाम तक पहुंच सका कि न केवल नशे से मुक्त हुआ अपितु समाज से इस कलंकित बुराई को दूर करने के लिए समर्थ हो सका।

मैंने मन ही मन उन दिवंगत आत्माओं को प्रणाम किया। मुझे लगा कि मेरे शरीर में समाज में फैले नशा रूपी इस विषैले सर्प को कुचलने के लिये एक नई शक्ति का संचार हो गया। मैंने प्रण किया कि जब तक जीवन है, मैं अपनी आंखों के सामने इस नशे के बीज को पनपने ही नहीं दूंगा। इसी प्रण के साथ मैं मंच से उतरा और अपने ही विचारों में मग्न सब कुछ छोड़कर बाहर की ओर चल पड़ा। कदमों की गति से ऐसा प्रतीत होता था मानो वह किसी मन्तव्य को लेकर उस ओर बढ़ चले हों...।

**तूलिका गोयल**
सिल्वर बैल्स पब्लिक स्कूल,
पानीपत रोड, शामली (उ0 प्र0)

# विद्यार्थी अणुव्रत

- मैं परीक्षा में अवैध उपायों का सहारा नहीं लूंगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़–मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।
- मैं अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं करूंगा – अश्लील साहित्य नहीं पढूंगा तथा अश्लील चलचित्र नहीं देखूंगा।
- मैं मादक तथा नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।
- मैं चुनाव के सम्बन्ध में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।
- मैं दहेज अनुबंधित एवं प्रदर्शन से युक्त विवाह नहीं करूंगा और न भाग लूंगा।
- मैं बड़े वृक्ष नहीं काटूंगा और प्रदूषण नहीं फैलाऊंगा।

**अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास**
अणुव्रत भवन
210,दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002